गरीबदास जी की बानी

[जीवन चरित्र सहित]

मुद्रक एवं प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,

इलाहाबाद-२

[मूल्य ८ रु०

२८९]

गरीबदास जी की बानी

जीवन-चरित्र सहित

जिसमें

उन महात्मा की चुनी हुई अति कोमल और भक्ति बढ़ाने वाली साखियाँ और पद शोध कर मुख्य मुख्य अंगों और रागों के अनुसार रक्खे गये हैं और गूढ़ शब्दों के अर्थ व संकेत भी भक्तों की कथा के साथ नोट में लिख दिये गये हैं।
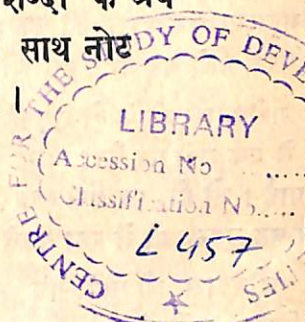
प्रकाशक
बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद

सन् १९६९]

[मूल्य २.५०]

जीवन-चरित्र

महात्मा गरीबदास जी मौजा छुड़ानी तहसील झज्जर जिला रोहतक (पञ्जाब) में बैसाख सुदी पूनो सम्वत १७७४ बिक्रमी मुताबिक ईसवी सन् १७१७ को प्रगट हुए। वह जाति के जाट धनखड़े या दलाल गोत्र के थे और पेशा जमींदारी का करते थे। अपने घर मौजा छुड़ानी ही में सतसंग खड़ा करके जीवों को चेताते रहे और सारी उमर गृहस्थ में रह कर ६१ बरस की उमर में भादों सुदी २ विक्रमी संबत १८३५ मुताबिक ईसवी सन् १७७८ को चोला छोड़ा। इस हिसाब से जान पड़ता है कि गरीबदास जी और महात्मा चरनदास जी एक ही समय में बिराजमान थे—चरनदास जी के जन्म से चौदह बरस पीछे यह प्रगट हुए और उनके चोला छोड़ने से चार बरस पहिले गुप्त हुए।

गरीबदास जी के दो लड़की और चार लड़के थे। बाजे कहते हैं कि उनके बेटों ही में से एक गद्दी पर बैठा और बाजों का कथन है कि उनके गुरमुख चेले सलोतजी ने गद्दी पाई। जो हो पर इस वक्त तो यही रिवाज है कि औलाद ही को महन्ती मिलती है और वह गृहस्थ ही में रहा करते हैं।

गरीबदास जी पूरी साध गति के थे और उन्हों ने कबीर साहब को अपना गुरु धारन किया। कबीर साहब अनुमान तीन सौ बरस इनके पहिले हुए थे लेकिन गरीबदास जी से उन का मेला होने की बाबत कितनों का तो विश्वास है कि सुपने में दर्शन हुए और उपदेश मिला और कुछ लोग कहते हैं कि बारह बरस की उमर में गरीबदास जी मौजा छुड़ानी में पौहे चरा रहे थे कि कबीर साहब प्रगट हुए और एक छोटी भैंस को जो कभी गाभिन नहीं हुई थी दिखला कर कहा कि इस का दूध हम को पिलाओ। गरीबदास जी ने जवाब दिया कि यह दूध नहीं देती जिस पर कबीर साहब बोले कि देखो तो सही जरूर देगी। गरीबदास जी ने ज्योंही हाथ लगाया उस छोटी भैंस के थन से दूध टपकने लगा। यह चमत्कार देख कर गरीबदास जी को कबीर साहब के समरथ होने का विश्वास हुआ और उन के चरनों पर गिर कर उपदेश लिया। पहली कथा जियादा समझ में आती है।

बाईस बरस की उमर में गरीबदास जी ने एक ग्रन्थ रचना शुरू किया जिस में सत्तरह हजार चौपाई और साखी उनकी हैं और उसी के साथ कबीर साहब की सात हजार साखियाँ शामिल की हैं उन्हीं सत्तरह हजार कड़ियों में से इस पुस्तक के अंग और कड़ियाँ चुन कर छापी गई हैं।

गरीबदास जी के पन्थ के बहुत से लोग हैं और अब तक उनका बंस भी मौजूद है। मौजा छुड़ानी में फागुन सुदी दसमी को एक बड़ा मेला गरीबदासियों का उन महात्मा जी का जारी किया हुआ अब तक होता है।

गरीबदास जी की बाबत बहुत से चमत्कार मशहूर हैं लेकिन वह सब लिखने के लायक नहीं हैं, सिर्फ दो एक चुनकर लिखे जाते हैं—

(१) एक साल खूखा पड़ा। सेवकों ने प्रार्थना की तो आप ने दया से ऐसी मौज की कि खूब मेंह बरसा। यह चर्चा दिल्ली में बादशाह के कान तक पहुँची। बादशाह पर उसी समय में एक दुशमन ने चढ़ाई की थी इस लिये बादशाह ने बड़े आदर और सतकार से बहुत से हाथी और सवार भेजकर गरीबदास जी को बुलाया। इन्हों ने जलूस को तो लौटा दिया और आप सादी चाल से एक घोड़ी पर चढ़ कर पाँच सेवकों के साथ दिल्ली पहुँचे। और महात्मा चरनदास जी के स्थान पर ठहर कर वहाँ से पैदल बादशाह के यहाँ गये। बादशाह ने दीनता से दुशमन से बचाने के लिये बिनती की। महात्मा जी बोले कि अगर तुम तीन बातें छोड़ दो तो दुशमन तुम्हारा बाल बाँका न कर सकेगा—एक तो गोबध, दूसरे अनाज पर कर, तीसरे बहुत सी बेगमों का रखना। इस पर बादशाह के दरबारियों ने बादशाह को भड़काया कि यह फकीर हिन्दू है और अपने मत के जाल में हुजूर को भी फँसाया चाहता है। बादशाह ने उन नादानों की सलाह में आकर गरीबदास जी को मय उन के सेवकों के कैदखाने में तीन तालों में बन्द कर दिया। पहरेवाले ने ताने से कहा कि देखें तो अगर सच्चे फकीर हो तो बन्दीखाने से निकल जाव। कुछ देर बाद महात्माजी ने ऐसी मौज की कि तीनों दरवाजे और ताले खुल गये और वह अपने सेवकों के साथ निकल कर अपने स्थान को वापस आये। अगले दिन जब बादशाह को खबर हुई तो वह लज्जित हुआ और फिर दोबारा उनको बुलाया पर वह नहीं आये। फिर बादशाह ने पाँच गाँव की जागीर देनी चाही उसके लेने से भी उन्हों ने इनकार किया।

(२) मौजा आसोध जिला रोहतक के एक साहूकार का इकलौता बेटा संतोषदास गरीबदासजी की महिमा सुन कर उनका चेला हुआ और कुछ दिन बाद उस की प्रार्थना पर उन्हों ने उसे साधू बना लिया। यह सुन कर उस के बाप को बड़ा क्रोध आया और गरीबदासजी के स्थान पर जाकर बहुत भला बुरा कह कर बोला की तू ने मेरे बेटे को तो साधू बना लिया है अब उसकी घरवाली तेरी बहिन का क्या हाल होगा। महात्मा जी ने उसके कटु बचन के जवाब में बहुत कोमलता से कहा कि अगर तुम अपनी पतोह को मेरी बहिन बनाते हो तो वह मेरी बहिन ही हो कर रहेगी। महात्मा जी के मुख से यह बचन निकलते ही उस औरत को मौजा आसोध में बैराग आया और अपनी चूड़ी वगैरह फोड़ कर साधुनी बन गई और गरीबदास जी की सेवा में रहने लगी।

और कथायें बहुत सी मशहूर हैं मगर मामूली सिद्धि शक्ति की हैं जो गरीबदास जी सरीखे साध गुरू की अपरम्पार महिमा को नहीं लखातीं।

गरीबदास जी के पहिनने का जामा और बँधी हुई पगड़ी और धोती जूता और लोटा और कटोरी और पलंग अब तक मौजा छुड़ानी में उनकी समाध के स्थान पर मौजूद हैं जहाँ लोग दर्शन को जाते हैं।

———

सूचीपत्र

———

गरीबदास जी की बानी

वंदना

नमो नमो सतपुरुष कूँ, नमस्कार गुरु कीन्ह ।
सुर नर मुनि जन साधवा, संतन सर्बस दीन्ह ॥
सतगुरु साहब संत सब, डंडौत औ परनाम ।
आगे पीछे मद्ध हूँ, तिन्ह पर जा कुरबान ॥
निराकार निर्बिषयं, काल जाल भय-भंजनं ।
निर्लेपं निज निर्गुनं, अकल अनूपं सुन धुनं ॥
सोहं सुरत समायतं, सकल समाना निरत लै ।
उजल हिरंबर[1] हर दमं, बेपरवाह अथाह है ॥
वार पार नहिं मद्धतं ॥

चेतावनी का अंग

पानी की इक बूँद सूँ साज बनाया जीव ।
अंदर बहुत अँदेस था बाहर बिसरा पीव[2] ॥ १ ॥
पानी की इक बूँद सूँ आज बनाया साँच ।
राखनहारा राखिया जठर अगिन की आँच ॥ २ ॥
पानी की इक बूँद सूँ साज बनाया साँच ।
कौड़ी बदले जात हैं कंचन साटे[3] काँच ॥ ३ ॥
पानी की इक बूँद सूँ साज बनाया सोध ।
तू जग में पंडित भया पढ़ा अठरहो बोध ॥ ४ ॥
धरनीधर जाना नहीं कीन्हा कोटि जतन्न ।
जल से साज बनाय कर मानुस किया रतन्न ॥ ५ ॥

---

(१) हिरन्मय, निर्विकार । (२) पुराणों में कथा है कि जब प्राणी गर्भ में आता है तब उसे ईश्वर का निरंतर दर्शन होता है और ईश्वर से प्रार्थना किया करता है कि इस मलाशय से मुझे बाहर कीजिये मैं प्रतिदिन आपका ध्यान किया करूँगा परन्तु बाहर आते ही संसार की माया से अज्ञानी होकर उसको भूल जाता है । (३) साथ ।

धरनोधर जाना नहीं जिन्ह सिरजा जल बूँद ।
गुलजारा दरसै नहीं चसमैं फिर गई धूँध ॥ ६ ॥
धरनोधर जाना नहीं जिन्ह सिरजा जल बूँद ।
नाड़ी सहज सँवारि कर लाया नख सिख गूँद ॥ ७ ॥
धरनीधर जाना नहीं जिन्ह सिरजा तन साज ।
चेत सकै तो चेतिये बिगर जायगा काज ॥ ८ ॥
पानो की इक बूँद से अजब बनाया ख्याल ।
धरनीधर जाना नहीं आय पड़ा जम जाल ॥ ९ ॥
उरध मुखी जब रहे थे तल सिर ऊपर पाँव ।
राखनहारा राखिया जठर अगिन की लाव[1] ॥१०॥
अस्थि चाम रग रोम सब किस ने कीया गूँध ।
उदर बीच पोषन किया बिन जननी के दूध ॥११॥
तुही तुही तुतकार थी जपता अजपा जाप ।
बाहर आकर भरमिया बहुत उठाये पाप ॥१२॥
तुही तुही तुतकार थी ररङ्कार धुन ध्यान ।
जिन्ह यह साज बनाइया ताकूँ ले पहिचान ॥१३॥
वजू[2] उरध मुख जपै था ररङ्कार धुन धीर ।
वा तालिब कूँ याद कर जिन्ह यह धरा सरीर ॥१४॥
वजू उरध मुख जपै था जोनी जिंद जहान ।
बाहर मूल गँवाइया पूजत है पाखान ॥१५॥
जठर अगिन से राखिया ना साइं गुन भूल ।
वह साहब दरहाल है क्यों बोवत है सूल ॥१६॥
आध घड़ी की अध घड़ी आध घड़ी की आध ।
साधू सेती गोसटी[3] जो कीजे सो लाभ ॥१७॥
पाव घड़ी तो याद कर नीमाना सन[4] खोय ।
सतगुरु हेला देत है बिषै सूल नहिं बोय ॥१८॥

---

(१) लवर । २) वजू = पंचस्नाना, जप । (३) बातचीत । (४) पूरा बरस ।

अलिफ अलह कूँ याद कर कादिर कूँ कुरबान।
साँई सेती तोड़ कर राखा अधम जहान ॥१६॥
अलिफ अलह कूँ याद कर जिन्ह कीन्हा यह साज।
उस साहब कूँ याद कर पाला[1] जल बिन नाज ॥२०॥
संसारी में आन कर कहा किया रे मूढ़।
सूआ सेमर सेइया लागे डोंड़े टूट ॥२१॥
सूआ सेमर सेइया बारह बरस बिसास[2]।
अंत चोंच खाली पड़ी डोंड़े बीस कपास ॥२२॥
सूआ सेमर सेइया ऐसे नर या देंह।
जम किंकर तुझ लेगया मुख में देकर खेह ॥२३॥
आदि समय चेता नहीं अंत समय अँधियार।
मद्ध समय माया रते पाकर लिये गँवार ॥२४॥
अंत समय बीते घनी तन मन धरै न धीर।
उस साहब कूँ याद कर जिन्ह यह धरा सरीर ॥२५॥
धूआँ का सा धौरहर बालू की सी भीत।
उस खाविंद कूँ याद कर महल बनाया सीत ॥२६॥
धूआँ केरा धौरहर यह बालू का साज।
उस खाविंद कूँ याद कर साजी गैब अवाज ॥२७॥
धूआँ केरा धौरहर बालू जेहा भेव।
गैबी से गैबी मिलै तौ परसै दिल देव ॥२८॥
गैब अजाती पिंड में जा का गैबी नावँ।
सुन्न सनेही जानिये मढ़ी महल नहिं ठावँ ॥२६॥
भग्ति हेत गृह बँधिया माटी महल मसान।
तैं साहब जाना नहीं भूला मूढ़ जहान ॥३०॥
भग्ति हेत गृह बँधिया घन नामी घट माहिं।
बिन सतगुरु की बंदगी साहब पावै नाहिं ॥३१॥

---

(१) पालन किया। (२) बिस्वास।

भगृति हेत गृह बँधिया घन नामी घट माहिं।
साधू जन सेये बिना साँई पावै नाहि ॥३२॥
भगृति हेत काया धरी घन नामी घट बीच।
नीब लगै नहिं नारियर भावैं परमल सींच ॥३३॥
यह माटी का महल है तासे कैसा नेह।
जो साँई मिल जात हैं तौ पारायन देंह ॥३४॥
यह माटी का महल है खाक मिलेगा धूर।
साँई के जाने बिना गदहा कुत्ता सूर[1] ॥३५॥
यह माटी का महल है छार मिलै छिन माहिं।
चार सकस[2] काँधे धरे मरघट कूँ ले जाहिं ॥३६॥
जार बार तन फूँकिया होगा हाहाकार।
चेत सकै तो चेतिये सतगुरु कहैं पुकार ॥३७॥
जार बार तन फूँकिया मरघट मंडन माँड।
या तन की होरी बनी मिटी न जम की डाँड ॥३८॥
जार बार तन फूँकिया मेटा खोज खलील[3]।
तू जानै मैं रहूँगा यहाँ तो कछू न ढील ॥३९॥
जार बार तन फूँकिया फोकट मिटे फिराक[4]।
चेत सकै तो चेतिये सतगुरु बोलै साख ॥४०॥
जार बार कोइला किया होगया मरघट राख।
छाँड़े महल मँड़ेरिया[5] क्या कौड़ी धन लाख ॥४१॥
चढ़ कर तुरँग कुदावते और पालकी फील[6]।
ते नर जंगल जा बसे जम कूँ फेरा लील ॥४२॥
अरब खरब लौं द्रब्य है उदय अस्त बिच जाह[7]।
बिन साँई की बंदगी डूब मुए दह[8] माँह ॥४३॥

---

(१) सुअर। (२) आदमी। (३) एक भक्त जिनके विषय में कथा है कि बादशाह ने जोते जी आग में जला देना चाहा पर भगवत की दया से चिता फूल की क्यारी बन गई। (४) बियोग। (५) मँड़ई। (६) हाथी। (७) मतबा। (८) कुंड।

अरब खरब लौं द्रब्य है रावत[१] कोटि अनंत।
नाहक जग में आइया जिन्ह सेये नहिं संत ॥४४॥
माया हुई तो क्या हुआ भूल रहा नर भूत।
पिता कहैगा कौन कूँ तू बेस्या का पूत[२] ॥४५॥
काया माया काल हैं बिन साहब के नावँ।
चेत सकै तो चेतिये बिन संतों नहिं दावँ ॥४६॥
ऐसा अंजन आँजिये सूझै त्रिभुवनराय।
काम धेनु अरु कलप बृच्छ घटही माँझ लखाय ॥४७॥
जोनी संकट मेटहूँ जो बिसरै नहिं मोहिं।
जिन्ह संसारी चित धरी नहीं छुड़ाऊँ वोहि ॥४८॥
लख चौरासी बंध तें सतगुरु लेत छोड़ाय।
जे उर अंतर नाम है जोनी बहुरि न जाय ॥४९॥
सब माया के ख्याल हैं सब माया के चोज।
बिन साँईं की बन्दगी जंगल हैगा रोज[३] ॥५०॥
महसूदी[४] चौतार नर खासे दहरे खूब।
अंत मसाने जा बसे बिना भग्ति महबूब ॥५१॥
जोनी संकट मेटहूँ देहूँ निःचल बास।
उर अंतर में राखहूँ जम की नहीं तिरास ॥५२॥
जो जन हमरी सरन है जा का हूँ मैं दास।
भग्ति अनाहद बन्दगी अनँत लोक परकास ॥५३॥
बेमुख प्रानी जाहिंगे दोजख दुन्द बहीर[५]।
वा कूँ नर नहिं सुमिरते जिन्ह यह धरा सरीर ॥५४॥
इस माटी के महल में मगन भया क्यों मूढ़।
कर साहब की बन्दगी उस साँईं कूँ ढूँढ़ ॥५५॥

---

(१) राजा। (२) एक संस्कृत ग्रन्थ में लिखा हैकि बिष्णु और महादेव के सम्बाद में बिष्णु ने कहा था कि मेरी स्त्री लक्ष्मी हरजाई है और मेरा पुत्र कामदेव उन्मद है। (३) रोना, बिलाप। (४) जिसको देख कर लोग सिहाते हैं। (५) कुल परिवार सहित।

इस माटी के महल में मन बाँधी बिष पोट।
अहरन[1] पर हीरा धरा ताहि सहै घन चोट ॥५६॥
काँचा हीरा किरच है नहीं सहै घन मार।
ऐसा मन यह है रहा लेखा ले करतार ॥५७॥
हीरा घन की चोट सहि साँचे कूँ नहि आँच।
वह दरगह[2] में क्या कहै जाके सँग हैं पाँच[3] ॥५८॥
चेत सकै तो चेतिये सतगुरु हेला दीन।
बन बस्ती में ना रहै ले जाता जम बीन ॥५९॥
चेत सकै तो चेतिये सतगुरु कहा पुकार।
बिना भगति छूटै नहीं बहु बिधि जम की मार ॥६०॥
संतों सेतीं ओलने[4] संसारी से नेह।
सो दरगह में मारिये सिर में देकर खेह ॥६१॥
भगति गरीबी बन्दगी संतों सेतीं हेत।
जिन्ह के निःचल बास है आसन दीजे सेत ॥६२॥
कुटिल बचन कूँ छाँड़ि दे मान मनी कूँ मार।
सतगुरु हेला देत जनि डूबै काली धार ॥६३॥
इस माटी के महल में नातर कीजै मोद।
राव रंक सब चलेंगे आपे कूँ ले सोध ॥६४॥
मात पिता सुत बंधवा देखें कुल के लोग।
रे नर देखत फूँकिये करते हैं सब सोग ॥६५॥
महल मँड़ेरी नीम सब चलै कौन के साथ।
कागा रौला हो रहा कछू न लागा हाथ ॥६६॥
गलताना गैबी चला माटी पिंडय जोख।
आया सो पाया नहीं अन आये कूँ रोक ॥६७॥
यह मन मंजन कीजिये रे नर बारंबार।
साईं से कर दोसती बिसर जाय संसार ॥६८॥

(१) निहाई। (२) दरबार। (३) पाँच दूत। (४) शिकायत।

अंत समय की बात सुन तेरा संगी कौन।
मांटी में मांटी मिलै पवनहिं मिलिहै पौन ॥६९॥
ये बादर सब धुंध के मन माया चितराम[1]।
दीखै सो रहता नहीं सप्तपुरी सब धाम ॥७०॥
जनम जनम को मैल है जनम जनम की घात।
जड़ नर तोहि सूझै नहीं ले चला चोर बिरात ॥७१॥
जाते कूँ नर जान दे रहते कूँ ले राख।
सत्त सब्द उर ध्यान धर मुख सूँ कूड़ न भाख ॥७२॥
निरबानी के नाम से हिल मिल रहना हंस।
उर में करिये आरती कधी न बूड़ै बंस ॥७३॥
पंछी उड़ै अकास कूँ कित कूँ कीन्हा गौन।
यह मन ऐसे जात है जैसे बुदबुद[2] पौन ॥७४॥
धन संचै तो संत का और न तेरे काम।
अठसठ तीरथ जो करे नाहीं संत समान ॥७५॥
धन संचै तो सील का दूजा परम सँतोख।
ज्ञान रतन भाजन[3] भरो असल खजाना रोक ॥७६॥
दया धर्म दो मुकट हैं बुद्धि बिबेक बिचार।
हर दम हाजिर हूजिये सौदा त्यारंत्यार ॥७७॥
नाम अभय पद निरमला अटल अनूपम एक।
यह सौदा सत कीजिये बनिजो बनिज अलेख ॥७८॥
यह संजम सैलान कर यह मन यह बैराग।
मन बसतो कितहो रहो लगे बिरह का दाग ॥७९॥
रंचक नाम सँभारिये परपंची कूँ खोय।
अंत समय आनंद है अटल भगति देउँ तोय ॥८०॥
जा घट भगित बिलास है ता घट हीरा नाम।
जो राजा पृथ्वी-पती ता घर मुक्ते[4] दाम ॥८१॥

(१) नक्शबन्दी। (२) बुलबुला। (३) बरतन। (४) बहुत।

साहब साहब क्या करै साहब तेरे पास।
सहस इकीसों[1] सोधि ले उलट अपूठा[2] स्वाँस ॥८२॥
गगन मँडल में रम रहा तेरा संगी सोय।
बाहर भरमे हानि है अंतर दीपक जोय ॥८३॥
चित के अंदर चाँदना कोटि सूर ससि भान।
दिल के अंदर देहरा काहे पूज पखान ॥८४॥
रतन रसायन नाम है मुक्ता महल मजीत[3]।
अंधे कूँ सूझै नहीं आगे जलै अँगीठ ॥८५॥
नाम बिना निबहे नहीं करनी करिहैं कोट।
संतों की संगत तजी बिष की बाँधी पोट ॥८६॥
झिल मिल दीपक तेज कै दसों दिसा दरहाल।
सतगुरु की सेवा करै पावै मुक्ता माल ॥८७॥
लै का लाहा[4] लीजिये लै की भर ले भार।
लै की बनिजी कीजिये लै का साहूकार ॥८८॥
रतन खजाना नाम है माल अजोख अपार।
यह सौदा सत कीजिये दुगुने तिगुने चार ॥८९॥
निरगुन निरमल नाम है अवगत नाम अबंच।
नाम रते सो धनपती और सकल परपंच ॥९०॥
ऐसे लाहा लीजिये संत समागम सेव।
सतगुरु साहब एक है तीनों अलख अभेव ॥९१॥
चेत सकै तो चेतिये कूकै संत सुमेर।
चौरासी कूँ जात है फेर सकै तो फेर ॥९२॥
मन माया की डुगडुगी बाजत है मिरदंग।
चेत सकै तो चेतिये जाना तुझे निहंग[5] ॥९३॥

---

(१) इकीस हजार छः सौ स्वाँसा दिन रात में चलती है। (२) निर्मल। (३) मसजिद। (४) लाभ। (५) नंगा (बिना अंग के)।

नंगा आया जगत में नंगा ही तू जाय।
बिच कर ख्वाबी ख्याल है मन माया भरमाय ॥६४॥
फूँक फाँक फारिग किया कहीं न पाया खोज।
चेत सकै तो चेतिये ये माया के चोज[1] ॥६५॥
नैना निरमल नूर के बैना बानी सार।
आरत अंजन कीजिये डारो सिर से भार ॥६६॥

गुरुदेव के अंग

पुर पट्टन पर लोक है अदली सतगुरु सार।
भग्ति हेत से ऊतरे पाया हम दीदार ॥ १ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला अललपच्छ[2] की जात।
काया माया ना उहाँ नहीं पिंड नहि नात ॥ २ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला उजल हिरंबर आद।
झलका ज्ञान कमान का घालत है सर साध ॥ ३ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला सुन्न बिदेसी आप।
रोम रोम परकास है दे हीं अजपा जाप ॥ ४ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला मगन किये मुस्ताक।
प्याला प्रेम पिलाइया गगन मँडल गरगाप[3] ॥ ५ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु की सैन।
उर अंतर परकासिया अजब सुनाये बैन ॥ ६ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु की सैल।
बजर पौरि पट खोल कर ले गया झीनी गैल ॥ ७ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के तीर।
सब संतन सिरताज है सतगुरु अदल कबीर ॥ ८ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के माँह।
सब्द सरूपी अंग है पिंड प्रान नहि छाँह ॥ ९ ॥

(१) बिलास। (२) एक आकाशी चिड़िया जो आकाश ही में अंडा देती है और अंडे के पृथ्वी पर पहुँचने के पहले बच्चा निकल कर ऊपर को उड़ जाता है। (३) मतवाला।

ऐसा सतगुरु हम मिला गलताना[1] गुलजार।
　वार पार की मत नहीं नहिं हलका नहि भार ॥१०॥
ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के मंझ।
　अएडों आनंद पोख ही बैन सुनाये कुंज[2] ॥११॥
ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के नाल।
　पीतम्बर ताखी[3] धरयो बानी सब्द रसाल[4] ॥१२॥
ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के नाल।
　गमन किया परलोक से अललपच्छ की चाल ॥१३॥
ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के नाल।
　ज्ञान जोग औ भग्ति सब दीन्हीं नजर निहाल ॥१४॥
ऐसा सतगुरु हम मिला बेपरवाह अबंध।
　परम हंस पूरन पुरुष रोम रोम रबि चंद ॥१५॥
ऐसा सतगुरु हम मिला है जिंदा जगदीस।
　सुन्न बिदेसी मिल गया छत्र मुकुट है सीस ॥१६॥
सतगुरु के लच्छन कहूँ मधुरे बैन बिनोद।
　चार बेद षट सास्तर कहा अठारह बोध ॥१७॥
सतगुरु के लच्छन कहूँ अचल बिहंगम चाल।
　हम अमरापुर ले गया ज्ञान सब्द के नाल ॥१८॥
ऐसा सतगुरु हम मिला तुरिया के रे तीर।
　सब बिद्या बानी कहै छानै नीर अरु छीर ॥१९॥
जिंदा जोगी जगत-गुरु मालिक मुरसिद पीव।
　काल कर्म लागै नहीं संका नहि सींव[5] ॥२०॥
जिंदा जोगी जगत गुरु मालिक मुरसिद पीर।
　दुहूँ दीन झगड़ा मचा पाया नहीं सरीर[6] ॥२१॥

---

(१) मतवाला। (२) कुंज चिड़िया अपने अंडे को बैठकर नहीं सेती बल्कि सुरत से। (३) टोपी। (४) रसीला। (५) हद। (६) कहते हैं कि कबीर साहब के चोला छोड़ने

ऐसा सतगुरु हम मिला मालिक मुरसिद पीर।
मारा झलका[1] भेद से लगे ज्ञान के तीर ॥२२॥

ऐसा सतगुरु हम मिला तेज पुंज के अंग।
झिलमिल नूर जहूर है रूप रेख नहिं रंग ॥२३॥

ऐसा सतगुरु हम मिला तेज पुंज की लोय[2]।
तन मन अरपों सीस हू होनी होय सो होय ॥२४॥

ऐसा सतगुरु हम मिला खोले बज्र किवार।
अगम दीप कूँ ले गया जहाँ ब्रह्म दरबार ॥२५॥

ऐसा सतगुरु हम मिला खोले बज्र कपाट।
अगम भूमि कूँ गम करी उतरे औघट घाट ॥२६॥

ऐसा सतगुरु हम मिला मारी गाँसी सैन।
रोम रोम में सालती पलक नहीं है चैन ॥२७॥

सतगुरु झलका खैंच कर लाया बान जो एक।
साँस उभारे सालता पड़ा कलेजे छेक ॥२८॥

सतगुरु मारा बान कस कैबर[3] गाँसी खैंच।
भरम करम सब जरि गये लई कुबुधि सब ऐंच ॥२९॥

सतगुरु आये दया कर ऐसे दीन-दयाल।
बंदि छोड़ाई बिरद[4] सुनि जठर अगिन प्रतिपाल ॥३०॥

जठर अगिन से राखिया प्याया अमृत छीर।
जुगन जुगन सतसंग है समझ कुटिल बेपीर ॥३१॥

जोनी संकट मेटि हैं ऊरध मुख नहि आय।
ऐसा सतगुरु सेइये जम से लेत छुड़ाय ॥३२॥

पर उनके हिन्दू शिष्य चाहते थे कि शरीर को दाह करैं और मुसलमान चाहते थे कि गाड़ दें परन्तु शरीर गुप्त हो गया और इस तरह आपस का झगड़ा निबट गया।

(१) कमान। (२) लौ। (३) काँटेदार गाँसी जो घुसने पर निकलती नहीं। (४) स्तुति (चेतावनी की पहिली साखी का नोट देखो)।

जम जोरा जा से डरे धर्मराय के दूत।
चौदह[1] कोर न चंपहीं सुन सतगुरु की कूत[2] ॥३३॥
जम जोरा जा से डरै धर्मराय धर धीर।
ऐसा सतगुरु एक है अदली अदल कबीर ॥३४॥
जम जोरा जा से डरै मिटे कर्म के अंक।
कागज लीरैं[3] दरगह दई चौदह कोर न चंप ॥३५॥
जम जोरा जा से डरै मिटे कर्म के रेख।
अदली अदल कबीर है कुल के सतगुरु एक ॥३६॥
ऐसा सतगुरु हम मिला पहुँचा बंक निदान।
नौका नाम चढ़ाय कर पार किये परवान ॥३७॥
ऐसा सतगुरु हम मिला भवसागर के माँह।
नौका नाम चढ़ाय कर ले राखे निज ठाँह ॥३८॥
ऐसा सतगुरु हम मिला भवसागर के बीच।
खेवट सब कूँ खेवता क्या उत्तम क्या नीच ॥३९॥
चौरासी की धार में बहे जात हैं जीव।
ऐसा सतगुरु हम मिला ले परसाया पीव ॥४०॥
चौरासी की धार में बहे जात हैं हंस।
ऐसा सतगुरु हम मिला अलख लखाया बंस ॥४१॥
माया का रस पीय कर फूट गये दोउ नैन।
ऐसा सतगुरु हम मिला बास दिया सुख चैन ॥४२॥
माया का रस पीय कर होगये डावाँडोल।
ऐसा सतगुरु हम मिला ज्ञान जोग दिया खोल ॥४३॥
माया का रस पीय कर होगये भूत खबीस।
ऐसा सतगुरु हम मिला भक्ति दई बकसीस ॥४४॥

(१) जम गिनती में १४ हैं। (२) बल। (३) धज्जियाँ—अर्थ यह है कि कर्म के लेखे फट कर मालिक की दरगाह में दाखिल हो गये अब चौदह जम कोर नहीं दबा सकते।

माया का रस पीय कर फूट गये पट चार ।
ऐसा सतगुरु हम मिला लिये निसंक उधार ॥४५॥
माया का रस पीय कर डूब गये दुहुँ[1] दीन ।
ऐसा सतगुरु हम मिला ज्ञान जोग परबीन ॥४६॥
माया का रस पीय कर भये सठ[2] गारत गोर[3] ।
ऐसा सतगुरु हम मिला परघट लिये बहोर ॥४७॥
सतगुरु कूँ क्या दीजिये देवे को कछु नाँय ।
सम्मन[5] को साका[4] किया सेऊ[5] भेट चढ़ाय ॥४८॥
सिर साँटे[6] की भगति है और कछू नहिं बात ।
सिर के साँटे पाइये अविगत अलख अनाद ॥४९॥

---

(१) हिंदू और मुसलमान । (२) शठ = दुष्ट । (३) सत्यानास । (४) साका = शोहरत नाम । (५) समन एक भक्त थे उनकी स्त्री जिसका नाम नेकी था और पुत्र जिसका नाम सेऊ था यह दोनों भी पक्के भक्त थे । एक समय कबीर साहब अपने चेलों कमाल और फ़रीद के साथ उनके स्थान पर पधारे । इन भक्तों के घर में न एक कौड़ी थी और न अन्न । बेचारे घबराये कि किस तरह ऐसे महात्माओं का सम्मान करें । इधर उधर माँगने गये कुछ नहीं मिला तब सेऊ की माँ ने अपने पति और पुत्र से कहा कि जाकर कहीं अन्न की चोरी करो, पर दोनों पहिले तो रुके आखिर माता के समझाने से सेऊ तैयार हो गया और बाप भी साथ हो लिया । सेऊ एक बनिये के घर में सेंध मार कर घुसा और कुछ अन्न चुरा कर लाया । बाप ने जो बाहर खड़ा था अन्न को देख कर कहा कि चोरी भी की तो इतना अन्न न लाये कि जिससे पूरा पड़े । इस पर सेऊ फिर बनिये के घर में घुसा । बनिया जाग पड़ा और सेऊ को पकड़ लिया । सेऊ ने बिनती की कि मेरा पिता बाहर खड़ा है मेरा पाँव बाँध कर डोरी अपने हाथ में रक्खो और मेरा सिर सेंध के छेद से बाहर निकाल दो जिसमें मैं अपने पिता से दो बात कर लूँ क्योंकि सबेरे तो मारा ही जाऊँगा । इस बात को बनिये ने मंजूर किया । सेऊ ने बाहर सिर निकाल कर पिता से कहा कि तुरन्त मेरा सिर काट लो नहीं तो सबेरे जब पहिचाने जायेंगे तो घर भर पकड़ा जायगा और साध सेवा में बिघ्न पड़ेगा । पिता ने ऐसा ही किया और बेटे के सिर को काट कर घर में एक आले पर छिपा कर रख दिया और जो अन्न चोरी का मिला था उससे समन और नेकी ने भोजन बना कर कबीर साहब और उनके दोनों चेलों के सामने धरा । कबीर साहब ने पूछा कि सेऊ कहाँ है वह भी आवे तो हम भोग लगावें । समन और नेकी जवाब देने में हिचकिचाये परन्तु अन्तरजामी कबीर साहब ने सेऊ के सिर को मँगा कर अपना अमी रूपी प्रसाद उसके मुख में डाल कर जिला दिया । (६) बदले ।

जम जोरा जा से डरे धर्मराय के दूत।
चौदह[1] कोर न चंपहीं सुन सतगुरु की कूत[2] ॥३३॥
जम जोरा जा से डरै धर्मराय धर धीर।
ऐसा सतगुरु एक है अदली अदल कबीर ॥३४॥
जम जोरा जा से डरै मिटे कर्म के अंक।
कागज लीरैं[3] दरगह दई चौदह कोर न चंप ॥३५॥
जम जोरा जा से डरै मिटे कर्म के रेख।
अदली अदल कबीर है कुल के सतगुरु एक ॥३६॥
ऐसा सतगुरु हम मिला पहुँचा बंक निदान।
नौका नाम चढ़ाय कर पार किये परवान ॥३७॥
ऐसा सतगुरु हम मिला भवसागर के माँह।
नौका नाम चढ़ाय कर ले राखे निज ठाँह ॥३८॥
ऐसा सतगुरु हम मिला भवसागर के बीच।
खेवट सब कूँ खेवता क्या उत्तम क्या नीच ॥३९॥
चौरासी की धार में बहे जात हैं जीव।
ऐसा सतगुरु हम मिला ले परसाया पीव ॥४०॥
चौरासी की धार में बहे जात हैं हंस।
ऐसा सतगुरु हम मिला अलख लखाया बंस ॥४१॥
माया का रस पीय कर फूट गये दोउ नैन।
ऐसा सतगुरु हम मिला बास दिया सुख चैन ॥४२॥
माया का रस पीय कर होगये डावाँडोल।
ऐसा सतगुरु हम मिला ज्ञान जोग दिया खोल ॥४३॥
माया का रस पीय कर होगये भूत खबीस।
ऐसा सतगुरु हम मिला भक्ति दई बकसीस ॥४४॥

---

(१) जम गिनती में १४ हैं। (२) बल। (३) धज्जियाँ—अर्थ यह है कि कर्म के लेखे फट कर मालिक की दरगाह में दाखिल हो गये अब चौदह जम कोर नहीं दबा सकते।

माया का रस पीय कर फूट गये पट चार।
ऐसा सतगुरु हम मिला लिये निसंक उधार ॥४५॥
माया का रस पीय कर डूब गये दुहुँ[1] दीन।
ऐसा सतगुरु हम मिला ज्ञान जोग परबीन ॥४६॥
माया का रस पीय कर भये सठ[2] गारत गोर[3]।
ऐसा सतगुरु हम मिला परघट लिये बहोर ॥४७॥
सतगुरु कूँ क्या दीजिये देवे को कछु नाँय।
सम्मन[5] को साका[4] किया सेऊ[5] भेट चढ़ाय ॥४८॥
सिर साँटे[6] की भगति है और कछू नहिं बात।
सिर के साँटे पाइये अविगत अलख अनाद ॥४९॥

---

(१) हिंदू और मुसलमान। (२) शठ=दुष्ट। (३) सत्यानास। (४) साका=शोहरत नाम। (५) समन एक भक्त थे उनकी स्त्री जिसका नाम नेकी था और पुत्र जिसका नाम सेऊ था यह दोनों भी पक्के भक्त थे। एक समय कबीर साहब अपने चेलों कमाल और फ़रीद के साथ उनके स्थान पर पधारे। इन भक्तों के घर में न एक कौड़ी थी और न अन्न। बेचारे घबराये कि किस तरह ऐसे महात्माओं का सम्मान करें। इधर उधर माँगने गये कुछ नहीं मिला तब सेऊ की माँ ने अपने पति और पुत्र से कहा कि जाकर कहीं अन्न की चोरी करो, पर दोनों पहिले तो रुके आखिर माता के समझाने से सेऊ तैयार हो गया और बाप भी साथ हो लिया। सेऊ एक बनिये के घर में सेंध मार कर घुसा और कुछ अन्न चुरा कर लाया। बाप ने जो बाहर खड़ा था अन्न को देख कर कहा कि चोरी भी की तो इतना अन्न न लाये कि जिससे पूरा पड़े। इस पर सेऊ फिर बनिये के घर में घुसा। बनिया जाग पड़ा और सेऊ को पकड़ लिया। सेऊ ने बिनती की कि मेरा पिता बाहर खड़ा है मेरा पाँव बाँध कर डोरी अपने हाथ में रक्खो और मेरा सिर सेंध के छेद से बाहर निकाल दो जिसमें मैं अपने पिता से दो बात कर लूँ क्योंकि सबेरे तो मारा ही जाऊँगा। इस बात को बनिये ने मंजूर किया। सेऊ ने बाहर सिर निकाल कर पिता से कहा कि तुरन्त मेरा सिर काट लो नहीं तो सबेरे जब पहिचाने जायेंगे तो घर भर पकड़ा जायगा और साध सेवा में बिघ्न पड़ेगा। पिता ने ऐसा ही किया और बेटे के सिर को काट कर घर में एक आले पर छिपा कर रख दिया और जो अन्न चोरी का मिला था उससे समन और नेकी ने भोजन बना कर कबीर साहब और उनके दोनों चेलों के सामने धरा। कबीर साहब ने पूछा कि सेऊ कहाँ है वह भी आवे तो हम भोग लगावें। समन और नेकी जवाब देने में हिचकिचाये परन्तु अन्तरजामी कबीर साहब ने सेऊ के सिर को मँगा कर अपना अमी रूपी प्रसाद उसके मुख में डाल कर जिला दिया। (६) बदले।

सीस तुम्हारा जायगा कर सतगुरु कूँ दान।
मेरा मेरी छाँड़ दे यही गुप्त है दान ॥५०॥
सीस तुम्हारा जायगा कर सतगुरु की भेंट।
नाम निरंतर लीजिये जम की लगै न फेट ॥५१॥
साहब से सतगुरु भये सतगुरु से भये साध।
ये तीनों अँग एक हैं गति कछु अगम अगाध ॥५२॥
साहब से सतगुरु भये सतगुरु से भये संत।
धर धर भेष बिलास अँग खेलैं आद अरु अंत ॥५३॥
ऐसा सतगुरु सेइये बेग उतारै पार।
चौरासी भ्रम मेटई आवागमन निवार ॥५४॥
अँधे गूँगे गुरु घने लँगड़े लोभी लाख।
साहब से परचै नहीं काब्य बनावैं साख[1] ॥५५॥
ऐसा सतगुरु सेइये सब्द समाना होय।
भवसागर में डूबते पार लगावै सोय ॥५६॥
ऐसा सतगुरु सेइये सोहं सिंधु मिलाप।
तुरिया मध आसन करै मेटै तीनों ताप ॥५७॥
तुरिया पर पुरिया[2] महल पार ब्रह्म का देस।
ऐसा सतगुरु सेइये सब्द-बिज्ञाना नेस[3] ॥५८॥
तुरिया पर पुरिया महल पार ब्रह्म का धाम।
ऐसा सतगुरु सेइये हंस करै निःकाम ॥५९॥
तुरिया पर पुरिया महल पार ब्रह्म का लोक।
ऐसा सतगुरु सेइये हंस पठावै मोख[4] ॥६०॥
तुरिया पर पुरिया महल पार ब्रह्म का दीप।
ऐसा सतगुरु सेइये राखै संग समीप ॥६१॥
गगन मँडल गादी जहाँ पार ब्रह्म का धाम।
सुन्न सिखर के महल में हंस करै बिस्राम ॥६२॥

---

(१) कबित् और साखी। (२) बनाया। (३) नेष्ठावान। (४) मोक्ष।

सतगुरु पूरन ब्रह्म है सतगुरु आप अलेख।
सतगुरु रमता राम है या में मीन न मेष ॥६३॥
सतगुरु आदि अनादि है सतगुरु मध अरु मूल।
सतगुरु कूँ सिजदा करूं एक पलक नहिं भूल ॥६४॥
पट्टन घाट लखाइया अगम भूमि का भेद।
ऐसा सतगुरु हम मिला अष्ट कमल दल छेद ॥६५॥
पट्टन घाट लखाइया अगम भूम का भेव।
ऐसा सतगुरु हम मिला अष्ट कमल दल सेव ॥६६॥
पुर पट्टन की पैंठ में सतगुरु लेगया मोय।
सिर साँटे सौदा हुआ अगली पिछली खोय ॥६७॥
पुर पट्टन की पैंठ में सतगुरु लेगया साथ।
जहँ हीरे मानिक बिकैं पारस लागा हाथ ॥६८॥
पुर पट्टन की पैंठ में है सतगुरु की हाट।
जहँ हीरे मानिक बिकैं सौदा मरनों साँट ॥६९॥
पुर पट्टन की पैंठ में सौदा है निज सार।
हम कूँ सतगुरु ले गया औघट घाट उतार ॥७०॥
पुर पट्टन की पैंठ में प्रेम पियाले खूब।
जहँ हम सतगुरु ले गया मतवाला महबूब ॥७१॥
पुर पट्टन की पैंठ में मतवाला मस्तान।
हम कूँ सतगुरु लेगया अमरापुर अस्थान ॥७२॥
बंकनाल के अंतरे तिरबेनी के तीर।
मानसरोवर हंस है बानी कोकिल कीर[1] ॥७३॥
बंकनाल के अंतरे तिरबेनी के तीर।
जहँ हम सतगुरु लेगया चवै[2] अमी रस छीर ॥७४॥
बंकनाल के अंतरे तिरबेनी के तीर।
जहँ हम सतगुरु लेगया बंदीछोर कबीर ॥७५॥

(१) तोता। (२) टपकता है।

भँवर गुफा में बैठ कर अमी महा रस जोख।
ऐसा सतगुरु मिल गया सौदा रोकम रोक[1] ॥७६॥
भँवर गुफा में बैठ कर अमी महा रस तोल।
ऐसा सतगुरु मिल गया बजर पौरि दइ खोल ॥७७॥
भँवर गुफा में बैठ कर अमी महा रस जोख।
ऐसा सतगुरु मिल गया लेगया हम परलोक ॥७८॥
पिंड ब्रह्मंड से अगम है न्यारी सिंधु समाध।
ऐसा सतगुरु मिल गया देखा अगम अगाध ॥७९॥
पिंड ब्रह्मंड से अगम है न्यारी सिधु समाध।
ऐसा सतगुरु मिल गया दिया अछय परसाद ॥८०॥
औघट घाटी ऊतरे सतगुरु के उपदेस।
पूरन पद परकासिया ज्ञान जोग परवेस ॥८१॥
सुन्न सरोवर हंस मन न्हाये सतगुरु भेद।
सुरत निरत परचा भया अष्ट कमल दल छेद ॥८२॥
सुन बेसुन से अगम है पिंड ब्रह्मंड से न्यार।
सब्द समाना सब्द में अवगत वार न पार ॥८३॥
सतगुरु कूँ कुरबान जाँ अजब लखाया देस।
पारब्रह्म परवान है निरालंब निज बेस ॥८४॥
सतगुरु सोहं नाम दे गुह्य[2] बीज बिस्तार।
बिन सोहं सीझै[3] नहीं मूल मंत्र निज सार ॥८५॥
सोहं सोहं धुन लगे दरद मंद दिल माहिं।
सतगुरु परदा खोलहीं परा लोक ले जाहिं ॥८६॥
सोहं जाप अजाप है बिन रसना है धुन्न।
चढ़ै महल सुख सेज पर जहाँ पाप नहिं पुन्न ॥८७॥

---

(१) नक़दा नक़दी। (२) गुप्त। (३) पैवस्त न हो।

सोहं जाप अजाप है बिन रसना है धुन्न।
सतगुरु दीप समीप है नहिं बस्ती नहिं सुन्न ॥८८॥
सुन बस्ती से रहित है मूल मंत्र मन माहँ।
जहँ हम सतगुरु ले गया अगम भूमि सत ठाँह ॥८९॥
मूल मंत्र निज नाम है सुरत सिंधु के तीर।
गैबी बानी अरस[1] में सुर नर धरै न धीर ॥९०॥
अजब नगर में ले गया हम कूँ सतगुरु आन।
झलकै बिंब अगाध गत सूतै चादर तान ॥९१॥
अगम अनाहद दीप है अगम अनाहद लोक।
अगम अनाहद गमन है अगम अनाहद मोख ॥९२॥
सतगुरु पारस रूप है हमरी लोहा जात।
पलक बीच कंचन करै पलटै पिंडा गात ॥९३॥
हम तो लोहा कठिन हैं सतगुरु बने लोहार।
जुगन जुगन के मोरचे तोड़ गढ़े घन सार ॥९४॥
हम पसुआ-जन[2] जीव हैं सतगुरु जाति भिरंग।
मुरदे से जिन्दा करैं पलट धरत हैं अंग[3] ॥९५॥
सतगुरु सिकलीगर बने यह तन तेगा देह।
जुगन जुगन के मोरचे खोवैं भरम सँदेह ॥९६॥
सतगुरु कंद कपूर हैं हमरी तिनका देह।
स्वाँति सीप का मेल है चंद चकोरा नेह ॥९७॥
ऐसा सतगुरु सेइये बेग उधारै हंस।
भवसागर आवै नहीं जोरा काल बिधंस ॥९८॥
पट्टन नगरी घर करै गगन मंडल गहनार।
अललपंख ज्यों संचरै सतगुरु अधम उधार ॥९९॥

---

(१) मुसलमानों में नवें यानी सब से ऊँचे स्वर्ग का नाम। (२) नरपशु। (३) जैसे भृङ्गी (लखोहरी) झींगुर वगैरह को मारकर अपने खोंता में उस पर बैठ कर अपने चौंकार शब्द से जिला कर उसको अपना ऐसा रूप वाला बना लेती है।

अललपंख अनुराग है सुन्न मँडल रह थीर।
दास गरीब उधारिया सतगुरु मिले कबीर ॥१००॥

सुमिरन का अंग

ऐसा अविगत राम है आदि अंत नहिं कोय।
वार पार की मत नहीं अचल निरंतर सोय ॥ १ ॥
ऐसा अविगत राम है अगम अगोचर नूर।
सुन्न सनेही आदि है सकल लोक भरपूर ॥ २ ॥
ऐसा अविगत राम है गुन इन्द्री से न्यार।
सुन्न सनेही रम रहा दिल अंदर दीदार ॥ ३ ॥
ऐसा अविगत राम है अपरंपार अलाह।
कादिर कूँ कुरबान है वार पार नहि थाह ॥ ४ ॥
ऐसा अविगत राम है कादिर आप करीम।
मेरा मालिक मेहरबाँ रमता राम रहीम ॥ ५ ॥
अल्लह अविगत राम है बेचगून[1] चित माहिं।
सब्द अतीत अगाध है निरगुन सरगुन नाहिं ॥ ६ ॥
अल्लह अविगत राम है बेचगून निरबान।
मोरा मालिक है सही महल मढ़ी नहिं थान ॥ ७ ॥
अल्लह अविगत राम है निराधार आधार।
नाम निरंतर लीजिये रोम रोम की लार ॥ ८ ॥
अल्लह अविगत राम है निरबानी निरबंद।
नाम निरंतर लीजिये ध्यान चकोरा चंद ॥ ९ ॥
अल्लह अविगत राम है कीमत कही न जाय।
नाम निरंतर लीजिये मुख से कहि न सुनाय ॥१०॥
अल्लह अविगत राम है निरबानी निरबंद।
नाम निरंतर लीजिये हिलमिल मीन समुँद ॥११॥

(१) बेचून।

दुहूँ दीन मध ऐब है अलह अलख पहिचान।
नाम निरंतर लीजिये भगत हेत उत्पान ॥१२॥
अष्ट कमल दल राम है बाहर भीतर राम।
पिंड हाड़ में राम है सकल ठौर सब ठाम ॥१३॥
सकल बियापी सुरत में मन पवना गहि राख।
रोम रोम धुन होत है सतगुरु बोले साख ॥१४॥
मूल कमल में राम है स्वाद चक्र में राम।
नाभि कमल में राम है हृदय कमल बिस्राम ॥१५॥
कंठ कमल में राम है त्रिकुटि कमल में राम।
सहस कमल दल राम है सुन बस्ती सब ठाम ॥१६॥
अचल अभंगी राम है गलताना दम लीन[१]।
सुरत निरत के अंतरै बाजे अनहद बीन ॥१७॥
राम कहा तो क्या हुआ उर में नहीं यकीन।
चोर मुसै घर लूटहीं पाँच पचीसो तीन ॥१८॥
राम कहंते राम है जिन के दिल हैं एक।
बाहर भीतर रमि रहा पूरन ब्रह्म अलेख ॥१९॥
राम नाम निज सार है मूल मंत्र मन माहिं।
पिंड ब्रह्मंड से रहित है जननी जाया नाहिं ॥२०॥
राम रटत नहिं ढील कर हर दम नाम उचार।
अमी महा रस पीजिये बहुतक बारंबार ॥२१॥
कोट गऊ जे दान दे कोट जज्ञ जेवनार।
कोट कूप तीरथ खनै[२] मिटै नहीं जम मार ॥२२॥
कोटिन तीरथ ब्रत करै कोटिन गज कर दान।
कोटि अस्व बिप्रों दिये मिटै न खैंचा तान ॥२३॥

(१) मह्व। (२) खोदै।

पारबती के उर धरा अमर भई छिन माहँ।
सुक की चौरासी मिटी निरालंब निज नाम[१] ॥२४॥
अगम अनाहद भूमि है जहाँ नाम का दीप।
एक पलक बिछुरै नहीं रहता नैनों बीच ॥२५॥
साहब साहब क्या करै साहब है परतीत।
भैंस सींग साहब भया पाँड़े गावैं गीत[२] ॥२६॥
राम सरीखा राम है संत सरीखे संत।
नाम सरीखा नाम है नहीं आदि नहि अंत ॥२७॥
महिमा सुन निज नाम की गहे द्रोपदी चीर।
दुस्सासन से पचि रहे अंत न पाया बीर[३] ॥२८॥
सेत बँधा पाहन तिरे[४] गज पकड़े थे ग्राह[५]।
गनिका चढ़ी बिमान में[६] निरगुन नाम मलाह ॥२९॥

---

(१) देखो नोट साखी नंबर २-४ "साध महिमा का अंग" [आगे]।

(२) एक पाँड़े किसी महात्मा के पास उपदेश लेने गये। महात्मा ने पूछा तुम किसको सब से अधिक प्यार करते हो। पाँड़े बोले एक भैंस को जिसे हमने पाला है। महात्मा ने कहा कि उसी का ध्यान किया करो। पाँड़ेजी गुरू के कथन अनुसार अपनी भैंस के ध्यान में लीन हो गये। यहाँ तक कि उनको ध्यान में भैंस नजर आने लगी। एक दिन महात्मा ने उनको ध्यान के समय बुलाया, पाँड़े आँख मूँदे हुए बोले कि महाराज मैं घोंची भैंस की सींग में फँस गया हूँ किस तरह बाहर निकलूँ। महात्मा ने ऐसी दृढ़ता ध्यान की देख कर दया से पाँड़े से भैंस का ध्यान छुड़ा कर मालिक के ध्यान में लगा दिया जिससे मालिक का मेला हो गया।

(३) युधिष्ठिर पांडव, कौरवों के साथ जुआ खेलने में अपनी स्त्री द्रोपदी को हार गये तब दुस्सासन नामी कौरव ने द्रोपदी को सभा में नंगी करने के लिये उसकी साड़ी खींची। ऐसे गाढ़ के अवसर पर द्रोपदी ने दीन होकर अपने इष्ट श्रीकृष्ण का स्मरण किया जिनके प्रताप से साड़ी इतनी बढ़ती गई कि दुस्सासन खींचते खींचते हार गया पर उसका अंत न पाया।

(४) लङ्का और हिन्दुस्तान के बीच में समुद्र पर पुल बाँधने के लिये बन्दर लोग राम नाम लिख कर समुद्र में पत्थर फेंकते थे जो नाम के प्रभाव से तैरते थे और इस तरह पुल तैयार होगया।

(५) किसी नदी में एक हाथी को जो नहाने उतरा था मगर पकड़ कर खींचे लिये जाता था, हाथी ने भगवान को टेरा तब उन्होंने प्रगट होकर उसको उबारा।

(६) एक बेश्या को मरते समय जमदूत सता रहे थे कि एक साधू आ गये। बेश्या ने

बरदी ढरी कबीर के भग्ति हेत के काज[1]।
सेऊ कूँ तो सिर दिया बेच बन्दगी नाज[2] ॥३०॥
कहँ गोरख कहँ दत्त थे कहँ सुकदे कहँ ब्यास।
भग्ति हेत से जानिये तीन लोक परकास ॥३१॥
कहँ पीपा कहँ नामदेव कहाँ धना बाजीद।
कहँ रैदास कमाल थे कहँ थे फकर फरीद ॥३२॥
कहँ नानक दादू हुते कहँ ज्ञानी हरिदास।
कहँ गोपीचँद भरथरी ये सब सतगुरु पास ॥३३॥
कहँ जंगी चरकट हुते कहाँ अधम सुलतान।
भगति हेत परगट भये सतगुरु के परवान ॥३४॥
कहँ नारद प्रहलाद थे कहँ अंगद कहँ सेस।
कहाँ बिभीखन ध्रुव हुते भगति हिरंबर पेस ॥३५॥
कहँ जयदेव थे कपिल मुनि कहँ रामानँद साध।
कहँ दुरबासा कृस्न थे भगती आद अनाद ॥३६॥
कहँ ब्रह्मा अरु बेद थे कहँ सनकादिक चार।
कहँ संभू अरु बिस्नु थे भगति हेत दीदार ॥३७॥
ऐसा निरमल नाम है निरमल करै सरीर।
और ज्ञान मँडलीक[3] हैं चकवै[4] ज्ञान कबीर ॥३८॥
राम नाम सदनै पिया बकरे के उपदेस[5]।

अति बिलाप कर उनसे रक्षा माँगी। साधूजी ने उसे मंत्र उपदेश का अधिकारी न समझ कर कहा कि वह नाम लो जो तोते को पढ़ाते हैं। वेश्या ने राम नाम लिया और उसके उच्चारन करते ही बिमान आया जिस पर चढ़ कर वह बैकुंठ को सिधारी।

(१) देखो नोट साखी नंबर १० "भक्ति का अंग" (आगे)। (२) देखो नोट सफ़हा १३। (३) छोटे छोटे मंडल के राजा। (४) चक्रवर्ती राजा। (५) सदन जाति के कसाई एक भारी भक्त हुए हैं। कहते हैं कि एक बार उनके घर ऐसे समय पाहुन आया जब घर में माँस न था। सदन ने चाहा कि एक बकरे का छोटा अंग काट के काम चला लिया जाय इस पर बकरा बोला कि हमारे तुम्हारे सिर काटे का बैर चुकना है सो काट लो

अजामील से उद्धरे भगति बंदगी पेस[1] ॥३६॥
नाम जलंधर[2] ने लिया पारा रिष परवान।
धन सतगुरु दाता धनी दई बंदगी दान ॥४०॥
गगन मंडल में रहत है अबिनासी आलेख।
जुगन जुगन सतसंग है धर धर खेलै भेख ॥४१॥
काया माया खंड है खंड राज अरु पाट।
अमर नाम निज बंदगी सतगुरु से भइ साँट ॥४२॥
अमर अनाहद नाम है निरभय अपरंपार।
रहता रमता राम है सतगुरु चरन जुहार ॥४३॥
अबिनासी निःचल सदा करता कूँ कुरबान।
जाप अजपा जपत है गगन मंडल धर ध्यान ॥४४॥
बिन रसना है बंदगी बिन चस्में दीदार।
बिन सरवन बानी सुनै निर्मल तत्त निहार ॥४५॥
मैं सौदागर नाम का टाँड़े पड़ा बहीर[3]।
लदते लदते लादिये बहुर न फेरा[4] बीर ॥४६॥

और अंग नहीं काट सकते, यह सुन कर सदन को ज्ञान आया और तब से आप जीव नहीं मारते थे बाजार से माँस मोल लेकर बेचते थे और एक सालिगराम की बटिया से जो जितना माँगे तौल देते थे। कथा है कि एक दिन एक ब्राह्मन सालिगराम की बटिया की ऐसी दुर्दशा देख कर सदन से माँग कर अपने घर लाया और प्रान प्रतिष्ठा करके उसको सिंहासन पर पधारा। रात को सालिगराम ने सुपना दिया कि हमको हमारे भक्त के पास जहाँ से लाया है पहुँचा दे हम वहीं प्रसन्न हैं।

(१) अजामिल जाति का ब्राह्मण था पर अति कुकर्मी। एक दिन भाग से उसे साध सेवा मिली और उसने दीनता करी जिस पर साध महात्मा ने बर दिया कि तुझको बेटा होगा उसका नाम नारायण रखना इससे तेरा कल्याण हो जायगा। कुछ दिन पीछे बेटा हुआ और उससे अजामिल को ऐसी प्रीति हुई कि एक दम सामने से न हटाता था और मरते समय उसी का नाम नारायण रटता हुआ प्राण छोड़े और इस नाम के प्रताप से स्वर्ग में बासा पाया।

(२) जलंधर एक राक्षस था जिसे श्रीकृष्ण ने छल कर मारा और उनके प्रताप से उसको ऊँचा स्थान मिला।

(३) साज़ सामान। (४) आवागमन।

नाम बिना क्या होत है जप तप संजम ध्यान।
बाहर भरमै मानवी अभि अंतर में जान ॥४७॥
उजल हिरंबर भगूति है उजल हिरंबर सेव।
उजल हिरंबर नाम है उजल हिरंबर देव ॥४८॥
नाम बिना निपजै नहीं जप तप करिहैं कोट।
लख चौरासी त्यार है मूड़ मुड़ाया घोंट ॥४९॥
नाम सरोवर सार है सोहं सुरत लगाय।
ज्ञान गलोचे बैठ कर सुन्न सरोवर न्हाय ॥५०॥
मान सरोवर न्हाइये परमहंस का मेल।
बिना चुँच मोती चुँगै अगम अगोचर खेल ॥५१॥
गगन मँडल में रमि रहा गलताना महबूब।
वार पार नहिं छेव[1] है अबिचल मूरत खूब ॥५२॥
ऐसा सतगुरु सेइये जो नाम दृढ़ावे।
भरमी गुरुवा मत मिलो जो मूल गँवावे ॥५३॥
सोहं सुरत लगाय ले गुन इंद्री से बंच।
नाम लिया तब जानिये मिटे सकल परपंच ॥५४॥
नामै निःचल निरमला अनँत लोक में गाज।
निरगुन सरगुन क्या कहे प्रगटा संतों काज ॥५५॥
अबिनासी के नाम में कौन नाम निज मूल।
सुरत निरत से खोज ले बास बड़ी अक[2] फूल ॥५६॥
फूल सही सरगुन कहा निरगुन गंध सुगंध।
मन माली के बाग में भँवर रहा कहँ बंध ॥५७॥
भँवर बिलंबा[3] केतकी सहस कमलदल माहिं।
जहाँ नाम निज नूर है मन माया तहँ नाहिं ॥५८॥
पंडित कोटि अनंत हैं ज्ञानी कोटि अनंत।
स्रोता कोटि अनंत हैं बिरले साधू संत ॥५९॥

(१) आकार, खंड। (२) कि, या। (३) विलम रहा।

जिन्ह मिलते सुख ऊपजै मेटैं कोटि उपाध।
भवन चतुरदस ढूँढ़िये परम सनेही साध ॥६०॥
राम सरीखे साध हैं साध सरीखे राम।
सतगुरु को सिजदा करूँ जिन्ह दीन्हा निज नाम ॥६१॥
भग्ति बन्दगी जोग सब ज्ञान ध्यान परतीत।
सुन्न सिखरगढ़ में रहै सतगुरु सब्द अतीत ॥६२॥
ऐसा सतगुरु सेइये पार उतारै हंस।
भग्ति मुक्ति को देत है मिलि है सोहं बंस ॥६३॥
सोहं बंस बखानिये बिन दम देही जाप।
सुरत निरत से अगम है लै समाध गरगाप ॥६४॥
सुरत निरत मन पवन पर सोहं साहं होय।
सिव मंतर गौरी कहा अमर भई है सोय ॥६५॥
ररंकार तो धुन लगै सोहं सुरत समाय।
हद बेहद पर बास है बहुरि न आवै जाय ॥६६॥
गुझ[1] गायत्री नाम है बिन रसना धुन ध्याय।
महिमा सनकादिक लही सिवसंकर बल जाय ॥६७॥
अजब महल बारीक है अजब सुरत बारीक।
अजब निरत बारीक है महल धसे बिन बीक[2] ॥६८॥
ऐसा राम अगाध है अबिनासी गंभीर।
हद जीवों से दूर है बेहदियों के तीर ॥६९॥
ऐसा राम अगाध है बेकीमत करतार।
सेस सहस फन रटत है अजहुँ न पाया पार ॥७०॥
ऐसा राम अगाध है अपरंपार अथाह।
उर में कृत्रिम ख्याल है मौला अलख अलाह ॥७१॥
ऐसा राम अगाध है निरभय निःचल पीर।
अनहद नाद अखंड धुन तन मन हीन सरीर ॥७२॥

(१) गुप्त। (२) डर।

ऐसा राम अगाध है बाजीगर भगवंत।
निरसँध निरमल देखिया वार पार नहिं अंत ॥७३॥
पारब्रह्म बिन परख है कीमत मोल न तोल।
बिना वजन अरु राग है बहुरंगी अनबोल ॥७४॥
महिमा अविगत नाम की जानत बिरले संत।
आठ बखत सुबिधान[१] है मुनि जन रटैं अनंत ॥७५॥
चंद सूर पानी पवन धरनी पोल अकास।
पाँच तत्त हाजिर खड़े खिजमतदार खवास ॥७६॥
काल करम करे बंदगी महाकाल अरदास[२]।
मन माया अरु धरमराय सब सिर नाम उपास ॥७७॥
काल डरै करतार से मन माया का नास।
चंदन अँग पलटै सबै खाली रह गया बाँस[३] ॥७८॥
सजन सलोना राम है अब मत अंतहि जाय।
बाहर भीतर एक है सब घट रहा समाय ॥७९॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी एक।
आदि अंत जा के नहीं ज्यों का त्योंहीं देख ॥८०॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी ऐन।
महिमा कही न जात है बोलै मधुरे बैन ॥८१॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी आद।
सतगुरु महरम तासु का साख भरत सब साध ॥८२॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी पीर।
चरन कमल हंसा रहै हम हैं दामनगीर ॥८३॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी आप।
हद बेहद से अगम है जपते अजपा जाप ॥८४॥

---

(१) कमाई किये जाने लायक। (२) अर्जदाश्त। (३) मलयाचल में पर्वत में चन्दन की सुगंध से सब वृक्ष चन्दन सरीखे हो जाते हैं पर बाँस का वृक्ष सुगंधित नहीं होता है।

ऐसा भगली जोगिया जानत है सब खेल।
बीन बजावै मोहनी जोग जंत्र सब मेल ॥८५॥
ब्रह्मादिक से मोहिया मोहे सेस गनेस।
संकर की तारी लगी अडिग समाध हमेस ॥८६॥
गन गँधरप ज्ञानी गुनी अजब नवेला नेह।
क्या महिमा कहुँ नाम की मिट गये सकल सँदेह ॥८७॥
सुन्न बिदेसी बस रहा हमरे नैनों मंझ।
अलख पलक में खलक में सतगुरु सब्द समंझ ॥८८॥
सुन्न बिदेसी बस रहा हमरे हिरदे माहिं।
चंद सूर ऊगै नहीं निस बासर जहँ नाहिं ॥८९॥
सुन्न बिदेसी बस रहा हमरे त्रिकुटी तीर।
संख परम छबि चाँदनी बानी कोकिल कीर[1] ॥९०॥
सुन्न बिदेसी बस रहा सहस कमल दल बाग।
सोहं ध्यान समाध धुन और तीव्र बैराग ॥९१॥
सुमिरन तब ही जानिये जब रोम रोम धुनि होय।
कुंज कमल में बैठ कर माला फेरे सोय ॥९२॥
सुरत सुमिरनी हाथ ले निरत मिले निरवान।
ररंकार रमता लखै असल बंदगी ध्यान ॥९३॥
अष्ट कमल दल सुन्न है बाहर भीतर सुन्न।
रोम रोम में सुन्न है जहाँ काल की धुन्न ॥९४॥
तुमहीं सोहं सुरत हो तुमही मन अरु पौन।
इसमें दूसर कौन है आवै जाय सो कौन ॥९५॥
इसमें दूसर कर्म है बँधी अविद्या गाँठ।
पाँच पचीसो ले गई अपने अपने बाट ॥९६॥
नाम बिना सूना नगर पड़ा सकल में सोर।
लूट न लूटी बंदगी हो गया हंसा भोर ॥९७॥

---

(१) तोता।

अगम निगम कूँ खोज ले बुद्धि बिबेक बिचार।
उदय अस्त का राज दे तौ बिन नाम बिगार ॥६८॥
ऐसा कौन अभागिया करै भजन कूँ भंग।
लोहे से कंचन भया पारस के सतसंग ॥६९॥

॥ भक्ति का अंग ॥

पारस तुम्हरा नाम है लोहा हमरी जात।
जड़ सेती जड़ पलटिया तुम कूँ केतिक बात ॥ १ ॥
बिना भगति क्या होत है ध्रू[1] कूँ पूछे जाहि।
सवासेर अन्न पावते अटल राज दिया ताहि ॥ २ ॥
बिना भगति क्या होत है कासी करवत[2] लेह।
मिटै नहीं मन बासना बहु विधि भरम सँदेह ॥ ३ ॥
भगति बिना क्या होत है भरम रहा संसार।
रत्ती कंचन पाय नहिं रावन चलती बार[3] ॥ ४ ॥
संग सुदामा संत थे दारिद का दरियाव।
कंचन महल बकस दिये तंदुल भेंट चढ़ाव[4] ॥ ५ ॥
दो कौड़ी का जीव था सेना जात गुलाम।

---

(१) ध्रुव राजा उत्तानपाद की बड़ी रानी के पुत्र थे जो अपनी छोटी रानी को अधिक चाहता था। एक बार अपने पिता की गोद में जाकर बैठे जिस पर छोटी रानी ने यह कह कर उठा दिया कि तुम्हारा ऐसा पुण्य नहीं है कि इस गोद में बैठो। ध्रुव के कलेजे में यह बात लग गई और घर से निकल गये और नारद जी के उपदेश से मालिक की भक्ति करके तारागण में सब से ऊँचा और अचल लोक पाया।

(२) काशी में काशी करवत एक स्थान है जहाँ एक कुए में आरे लगे थे और लोग उस पर मुक्ति के हेतु कट मरते थे।

(३) कहते हैं कि लंका सोने की बनी थी लेकिन रावन जो राम द्रोही था मरते समय खाली हाथ गया।

(४) सुदामा श्रीकृष्ण के गुरु-भाई थे परन्तु महा दरिद्र। एक बार अपनी स्त्री के कहने से कुछ चावल श्रीकृष्ण की भेंट के लिये लेकर उनसे मिलने गये। श्रीकृष्ण ने आदर सत्कार तो बहुत किया पर जाहिर में कुछ दिया नहीं। जब सुदामा घर को लौटे तो देखा कि उनका कच्चा झोपड़ा सोने का महल बन गया है!

भग्ति हेत गृह आइया धरा सरूप हजाम[१] ॥ ६ ॥
पीपा को परचा हुआ मिले भक्त भगवान ।
सीता मग जोवत रही द्वारावती निधान[२] ॥ ७ ॥
धना भगत की धुन लगी बीज दिया जिन्ह आन ।
सूखा खेत हरा हुआ कंकर बोये जान[३] ॥ ८ ॥
रैदास रँगीला रंग है दिये जनेऊ तोड़ ।
जग्य ज्योनार चौले धरे इक रैदास इक गौड़[४] ॥ ६ ॥

---

(१) किसी राजा के यहाँ सेना नाऊ भक्त हजामत बनाने की नौकरी पर था। एक दिन हजामत बनाने के लिए जा रहा था कि राह में साधू लोग मिल गये और वह साधु-सेवा में लग गया, उसके बदले भगवान आप उस राजा की हजामत बना आये।

(२) पीपा जी मागरौनगढ़ के राजा थे जो अपनी सीता नामक रानी के साथ साधू हो गये और स्वामी रामानन्द जी से उपदेश लिया। इनकी प्रचण्ड भक्ति और महिमा का भक्तमाल में बहुत वर्णन लिखा है। जिस कथा का गरीबदास जी की इस साखी में इशारा है वह इस तरह पर है कि पीपाजी जी और उनकी स्त्री सीता द्वारका को गये और वहाँ असली दिव्य द्वारका में पहुँच कर (जो समुद्र में डूब गई है) साक्षात् श्रीकृष्ण का दर्शन पाने के हेतु एक दिन सीता के साथ समुद्र तट पर पहुँचे। यहाँ सीता को खड़ी कर पीपा जी आप समुद्र में कूद कर गायब हो गये और सात दिन तक दर्शन का रस और भगवान की प्रसादी छाप अपने शरीर पर लेकर आज्ञानुसार समुद्र से बाहर निकले जहाँ सीता उनका रास्ता देख रही थी। पीपा जी ने यह छाप मंदिर के पुजारियों को सौंप कर आज्ञा की कि जो लोग इस छाप को अपने शरीर पर लगावेंगे वह भगवत पद पावेंगे।

(३) धना भक्त के पिता ने अपने पुत्र को खेत बोने के लिये बीज देकर भेजा। उसी समय कुछ भूखे साधू आ गये, उन्हें धना ने सब बीज दे दिया और बाप के डर के मारे खेत में कंकड़ बो दिये (एक जगह ऐसा लिखा है कि साधुओं के तुम्बों के बीज बो दिये) फिर जाकर पिता को खबर दी कि खेत बो दिया। कुछ दिन पीछे पिता को नौकरों से असल हाल मालूम हो गया और बड़े क्रोध में खेत पर गये पर वहाँ पहुँच कर क्या देखा कि अन्न का खेत खूब लहलहा रहा है।

(४) चित्तौड़ की रानी ने जो रैदास जी की चेली थी एक बार काशी में किसी उत्सव पर गौड़ ब्राह्मणों को न्योता दिया। ब्राह्मणों ने इनकार किया कि वह चमार की चेली है हम उसके यहाँ भोजन नहीं कर सकते। इस पर रैदास जी ने उन लोगों को समझाया कि राज धान्य में कुछ दोष नहीं है और हम कुछ उसे छूने न जायँगे फिर कौन सा झगड़ा है। ब्राह्मण लोग क़ाइल होकर राज़ी हो गये। जब खाने को बैठे और थोड़ा बहुत खा चुके तो देखते क्या हैं कि पंगत में हर ब्राह्मण के इधर उधर एक एक रैदास (चमार) है। ब्राह्मणों ने घबरा कर खाने से हाथ खींच लिया उस पर रैदास जी ने समझाया कि

माँझी मरद कबीर है जगत करै उपहास।
केसो बनजारा भया भगत बड़ाई दास[1] ॥१०॥
सोहं ऊपर और है सत्त सुकृत इक नाम।
सब हंसों का बंस है सुन बस्ती नहिं गाम ॥११॥
सोहं ऊपर और है सुरत निरत का नाँव।
सोहं अंतर पैठ कर सत्त सुकृत लौ लाव ॥१२॥
सोहं ऊपर और है बिना मूल का फूल।
जा की गंध सुगंध है ता को पलक न भूल ॥१३॥
सोहं ऊपर और है बिन बोली का कंद।
नाम रसायन पीजिये अबिचल अति आनंद ॥१४॥
सोहं ऊपर और है कोउ का जानै भेव।
गोप गोसाईं गैब धुन ता की कर ले सेव ॥१५॥
सुरत लगै अरु मन लगै लगै निरत धुन ध्यान।
चार जुगन की बन्दगी एक पलक परमान ॥१६॥
सुरत लगै अरु मन लगै लगै निरत तिस ठौर।
संकर बकसा मिहर कर अमर भई तब गौर ॥१७॥
सुरत लगै अरु मन लगै लगै निरत तिस माहिं।
एक पलक तहँ संचरै कोटि पाप अघ जाहिं ॥१८॥
अविगत की अविगत कथा अविगत है सब ख्याल।
अविगत सों अविगत मिलै कर जोरै तब काल ॥१९॥

डरो मत और नाखून से अपने काँधे की चमड़ी चीर कर दिव्य जनेऊ दिखा कर हँसते हुए वहाँ से चल दिये। इस महिमा को देख कर ब्राह्मणों ने फिर भोजन किया—(देखो जीवन-चरित्र रैदास जी बानी में)।

(१) काशी के पंडित जो कबीर साहब से बहुत द्वेष रखते थे उन्होंने एक बार नगर भर में यह मशहूर कर दिया कि आज कबीर के यहाँ सब भूखों और कंगलों को पाँच पाँच सेर अन्न बटेगा, यह सुनकर हज़ारों आदमी की भीड़ उनके दरवाजे पर जमा हुई। कबीर साहब चुपचाप किसी बहाने से बाहर चले गये और उनके पीछे भगवान बनजारे का रूप धरे बहुत से बैल अन्न से लदे हुए वहाँ छोड़ गये जो कंगलों को उनकी आशा से अधिक बाँटा गया।

अमर अनूपम आप है और सकल है खंड।
सूच्छम से सूच्छम सही पूरन पद परचंड ॥२०॥
अधम उधारन भग्ति है अधम उधारन नाँव।
अधम उधारन संत हैं जिनके मैं बल जावँ ॥२१॥
गज गनिका अरु भीलनी सेवरी प्रेम सहेत।
केते पतित उधारिया सतगुरु गावै नेत ॥२२॥
राम रसायन पीजिये यहि औसर यहि दाव।
फिर पीछे पछतायगा चला चली हो जाव ॥२३॥
राम रसायन पीजिये चोखा फूल चुवाय।
सुन्न सरोवर हंस मन पीया प्रेम अघाय ॥२४॥
कहता दास गरीब है बाँदी-जाद[1] गुलाम।
तुम हो तैसी कीजिये भक्ति हिरंबर नाम ॥२५॥

॥ बिनती का अंग ॥

साहब मेरी बीनती सुनो गरीब निवाज।
जल की बूँद महल रचा भला बनाया साज ॥ १ ॥
साहब मेरी बीनती सुनिये अर्स अवाज।
मादर पिदर करीम तू पुत्र पिता को लाज ॥ २ ॥
साहब मेरी बीनती कर जोरैं करतार।
तन मन धन कुरबान है दीजै मोहिं दीदार ॥ ३ ॥
पाँच तत्त के महल में नौ तत का इक और।
नौ तत से इक अगम है पारब्रह्म की पौर ॥ ४ ॥
सुरत निरत मन पवन कूँ करो एकत्तर[2] यार।
द्वादस उलट समोय ले दिल अंदर दीदार ॥ ५ ॥
चार पदारथ महल में सुरत निरत मन पौन।
सिव द्वारा खुलि है जबै दरसै चौदह भौन ॥ ६ ॥

(१) ख़ानाज़ाद। (२) इकट्ठा।

सील संतोष बिबेक बुध दया धर्म इकतार ।
अकल यकीन इमान रख गही बस्तु निज सार ॥ ७ ॥
साहब तेरी साहबी कैसे जानी जाय ।
त्रिसरेनू[1] से झीन है नैनों रहा समाय ॥ ८ ॥
अनँत कोटि ब्रह्मंड का रचनहार जगदीस ।
ऐसा सूच्छम रूप धर आन बिराजा सीस ॥ ९ ॥
साहब पुरुष करीम तूँ अविगत अपरंपार ।
पल पल माँहें बंदगी निरधारों आधार ॥१०॥
दरदमंद दरवेस तूँ दिल दाना महबूब ।
अचल बिसंभर बस रहा सूरत मूरत खूब ॥११॥
साँस सुरत के मद्ध है न्यारा कभी न होय ।
ऐसा साछीभूत है सुरत निरंतर जोय ॥१२॥
सुरत निरत से झीन है जगन्नाथ जगदीस ।
त्रिकुटी छाजै पुर रहै है ईसन का ईस ॥१३॥
कोटि जग्य असुमेध कर एक पलक धर ध्यान ।
षट दल के री बन्दगी नहीं जग्य उनमान ॥१४॥
जित सेतीं दम ऊचरै सुरत तहाँई लाय ।
नाभी कुंडल नाद है त्रिकुटि कमल समाय ॥१५॥
अठसठ तीरथ भरमना भटक मुआ संसार ।
बारह बानी[2] ब्रह्म है जाका करो बिचार ॥१६॥
अठसठ तीरथ जाइये मेले बड़ा मिलाप ।
पत्थर पानी पूजते साध संत मिल जाप ॥१७॥
सनकादिक सेवन करै सुकदे बोलै साख ।
कोटि ग्रन्थ का अरथ है सुरत ठिकाने राख ॥१८॥

---

(१) तीन परमाणु का एक त्रिसरेणु होता है। (२) छः कमल पिण्ड के और छः ब्रह्मांड के।

साहब तेरी साहबी कहा कहूँ करतार ।
पलक पलक की दीठ में पूरन ब्रह्म हमार ॥१६॥
एते करता कहाँ हैं वह तो साहब एक ।
जैसे फूटी आरसी टूक टूक में देख ॥२०॥
करौं बीनती बंदगी साहब पुरुष सुभान[१] ।
संख असंखों बरन है कैसे रचा जहान ॥२१॥
साहब तेरी साहबी समझ परै नहिँ मोहिँ ।
एता रूप जहान जग कैसे सिरजा तोहिँ ॥२२॥
एक बीज इक बिंदु है एक महल इक द्वार ।
चरन कमल कुरबान जाँ सिरजे रूप अपार ॥२३॥
मौला जल से थल करै थल से जल कर देत ।
साहब तेरी साहबी स्याम कहूँ की सेत ॥२४॥
साहब मेरा मिहरबाँ सुनिये अरस अवाज ।
पंजा राखो सीस पर जसहीं होत तिरास ॥२५॥
मादर पिदर परान तूँ साहब समरथ आप ।
रोम रोम धुन होत है सब्द सिंधु परकास ॥२६॥
तन मन धन जगदीस का रती सुमेर समान ।
मिहर दया कर मुझ दिया तन मन वारों प्रान ॥२७॥
यह माया जगदीस की अपनी कहैं गँवार ।
जमपुर धक्के खायँगे नाहक करैं विगार ॥२८॥
रावन के संग ना चली लंक भभीखन दीन ।
यह माया अपनी नहीं सुनो संत परबीन ॥२६॥
काया अपनी है नहीं माया कहाँ से होय ।
चरन कमल में ध्यान रख इन दोनों को खोय ॥३०॥
ये तो जान अनीत हैं काया माया काल ।
इन दोनों के मद्ध है सोहं सब्द रसाल ॥३१॥

(१) पवित्र ।

ओं अरु सोहं सार है मूल फूल परबेस।
सिव ब्रह्मादिक रटत हैं ध्यान धरत है सेस ॥३२॥
मैं समरथ के आसरे दमक दमक करतार।
गफलत मेरी दूर कर खड़ा रहूँ दरबार ॥३३॥
सुनो पुरुष मेरी बीनती साहब दीन-दयाल।
पतित-उधारन साइयाँ तुम हो नजर निहाल ॥३४॥
समरथ का सरना लिया ताहि न चाँपै काल।
पारब्रह्म का ध्यान धर होत न बाँका बाल ॥३५॥
नागदमन[1] निरगुन जड़ी ऐसा तुम्हरा नाम।
तच्छक तीछा डरत है हर दम जप ले नाम ॥३६॥
आतम इंद्री कारने मत भटकावै मोहिं।
जगन्नाथ जगदीस गुरु सरना आया तोहिं ॥३७॥
चरन कमल के ध्यान से कोटि बिघन टल जाहिं।
राजा होवै लोक का जहाँ परै हुम[2] छाँहि ॥३८॥
हुमा छाँह जा पर परै पिरथी-नाथ कहाय।
पसु पंछी आदम सबै सनमुख परखै ताय ॥३९॥
दिब्य-दृष्टि देवा दयाल सतगुरु संत सुजान।
तिरलोकी के जीव कूँ परख लेत परवान ॥४०॥
अगले पिछले जन्म कूँ जानत है जगदीस।
मुंडमाल सिव के गले पहिर रहे ज्यों ईस[3] ॥४१॥
करुनामई करीम जप अलह अलख का ध्यान।
सत्त पुरुष सुख सिंधु में जपत समाने प्रान ॥४२॥
दम सूँ दम कूँ समझ ले उठत बैठ आराध।
रंचक ध्यान समान सुध पूरन सकल मुराद ॥४३॥

(१) नाम साँप की जड़ी का। (४) हुमा चिड़िया जिसकी निस्बत कहते हैं कि उसका साया पड़ने से आदमी बादशाह हो जाता है। (३) एक समय पारवती जी ने शिवजी से पछा कि यह मुंडमाल जो आप पहिने हुए हैं उसमें किन किन के सिर हैं। शिव जी

अर्ध नाम कुंजर जपा भया ग्राह से पार[१]।
उभय घड़ी खट्वाँग जप ऐसा नाम उचार[२] ॥४४॥
अनंत कोटि ब्रह्मांड में बटक[३] बीज बिस्तार।
सुरत सरूपी पुरुष है तन मन धन सब वार ॥४५॥
सुन्न सपेदा स्याम है भूर भद्र बैराट।
तिल प्रमान में पैठ कर उतरो औघट घाट ॥४६॥
रतन अमोली फूल है सो साहब के सीस।
जो रंग नाहीं स्रिष्टि में देखा बिस्वे बीस ॥४७॥
कोटि ध्यान असनान कर कोटि जोग बैराग।
कोटि कुटुम्ब गृह तज गये दरसत ना अनुराग ॥४८॥
राग[४] रूप रघुबीर है छाँह धूप से न्यार।
सात स्वर्ग पर सो तपै कैसे हो दीदार ॥४९॥
सतगुरु अर्थ[५] बिवान है हिरदे बैठा आय।
जब वा खोलै चाँदनी पल में देह लखाय ॥५०॥
सतगुरु के सदके करूँ अनंत कोटि ब्रह्मंड।
निरगुन नाम निरंजना मेटत है जम दंड ॥५१॥
सतगुरु के सदके करूँ तन मन धन कुरबान।
दिल के अन्दर देहरा तहाँ मिले भगवान ॥५२॥
दिल के अन्दर देहरा जा देवल में देव।
हरदम साखी-भूत है करो तासु की सेव ॥५३॥
जल का महल बनाइया धन समरथ साँईं।
कारीगर कुरबान जाँ कुछ कीमत नाँईं ॥५४॥

बोले कि तुम हमको इतनी प्रिय हो कि जितने जन्म तुमने धरे हैं तुम्हारे हर एक शरीर का मुंड मैंने अपने गले में डाल रक्खा है।

(१) देखो नोट पृष्ठ २०। (२) राजा खट्वांग से किसी समय में देवता लोगों ने अति प्रसन्न होकर कहा कि जो चाहो सो बरदान माँगो। राजा बोले पहिले यह बतलाइये मेरी उमर कितनी बाकी है। देवताओं ने कहा सिर्फ दो घड़ी और जियोगे। यह सुन कर राजा ने अपने चित्त को एकाग्र कर परमेश्वर का नाम जपना शुरू किया और दोही घड़ी में अपना काम बना लिया। (३) बड़ का पेड़। (४) प्रेम। (५) बस्तु।

कोटि जतन कर राखिया जठरा के माईं ।
गर्भबास की बीनती सुनि पुरुष गुसाईं ॥५५॥
नैन नाक मुख स्रवन लै सब साज बनाया ।
दस्त चरन चिन्तामनी परिपूरन काया ॥५६॥
कली कली कर जोड़िया नाड़ी निरवाना ।
दस सहस्र का बन्ध लाय नाभी असथाना ॥५७॥
तालू कंठ भिरकुटी रसना मुख माईं ।
दाढ़ अरु दंत बनाइया धन अलख गुसाईं ॥५८॥
पलकों के छज्जे बने मुँह महल मुँडेरे ।
जै जै जै जगदीस तूँ धन साहब मेरे ॥५९॥
ग्रीवा[1] हाड़ी रुधिर में ले संधि मिलाई ।
ऊपर चाम लपेट कर नख रोम बनाई ॥६०॥
तलुवे एड़ी आँगुली पिंडरी परवाना ।
जोड़े जाँघ बनाइया कादिर कुरबाना ॥६१॥
कमर करंक[2] करीम ने क्या जोड़ लगाई ।
नस नाड़ी का बँध दे गिरह गाँठ बँधाई ॥६२॥
पेट पीठ पूरन किये परमानन्द स्वामी ।
भुजा खवे कुहनी बनी समरथ धन नामी ॥६३॥
आँत उदर में राख कर क्या परदा कीन्हा ।
एक द्वार दो देहरी अन जल का सीना ॥६४॥
अष्ट कमल दल आरती हरदम हर होई ।
नाभि कमल में प्रान नाथ राखे निरमोई ॥६५॥
माया की बुरकी[3] पड़ी मारग नहिं पावै ।
दस इंद्री लारै लगी अब कौन छुटावै ॥६६॥
बड़वा नल का द्वार है नाभी के नीचे ।
जो सतगुरु भेदी मिलै तहँ अमृत सींचे ॥६७॥

(१) गरदन । (२) हड्डी का पिंजरा । (३) परदा ।

जठर अगिन जा कूँ कहैं जो छूधा लावै।
जल से तिरखा ना मिटै कोइ भेदी पावै ॥६८॥
तीन पेच हैं कुँडलिनी नाभी के पासा।
जा के मुख से नीकले जल अगिन अकासा ॥६९॥
मल मूतर की कोथली[1] दो न्यारी कीन्ही।
दम का दगड़ा[2] गगन कूँ ऐसा परबीनी ॥७०॥
मन माया मौजूद है काया गढ़ माहीं।
बीच पुरंजन[3] बसत है सो पावै नाहीं ॥७१॥
पाँच भार[4] जो आदि है जा के सँग डोलै।
तीन लोक कूँ खा गई मुख से नहिं बोलै ॥७२॥
बड़ी कुसंगन सुपचनी[5] सुध बुध बिसरावै।
चिंता चेरी चूहरी[5] नित नाद बजावै ॥७३॥
महा दरिद्र की गाँठ बाँध आगे धर देवै।
तीन लोक के चिंत कूँ निस बासर सेवै ॥७४॥
काम क्रोध रसिया जहाँ मद मोह मवासी।
लोभ लँगर[6] वहँ बटत है जहँ बारह मासी ॥७५॥
राग द्वेष रागी बड़े नित गावैं गीता।
हरष सोग हाजिर खड़े दो रहजन[7] मीता ॥७६॥
बीच पुरंजन बैठ कर बहु नाच नचावै।
लोक परगने बाँट कर बड़दच्छा[8] द्यावै ॥७७॥
आतम सिर आराधिया जो ध्यावहु ध्यावै।
कुबुध कलाली जारनी[9] विष प्याला प्यावै ॥७८॥
मनसा मालिन आन कर नित सेज बिछावै।
तहाँ पुरंजन बैठ कर नित भोग करावै ॥७९॥

(१) थैली। (२) रास्ता। (३) त्रिलोकी नाथ। (४) बोझ अर्थात तत्त्व। (५) भंगन। (६) सदाबर्त। (७) बटमार। (८) बरिच्छा। (९) बिभिचारनी।

तीन लोक की मेदनी[1] सब हाजिर होई।
मन रंगी के रंग में रंगा सब कोई ॥८०॥
आसन असथल उठ गये कुछ पिंड न आना।
फेर पुरंजन आनकर घाला घमसाना ॥८१॥
दुरमति दूती और है इक दारुन माया।
जैसे काँजी[2] दूध में घृत खंड कराया ॥८२॥
द्वादस कोटि कटक चढ़ै कुछ गिनती नाहीं।
लालच नीचन की बहै जिन फौजाँ माहीं ॥८३॥
संसा सोच सराय में सूतक दिन राती।
जीवतही जूती परैं जम तोरै छाती ॥८४॥
रहजन कोटि अनंत हैं काया गढ़ माहीं।
ममता माया बिस्तरी तिर्गुन तन माहीं ॥८५॥
बाँकी फौज पुरंजना कुछ पार न पावै।
मन राजा के राज में क्या भग्ति करावै ॥८६॥
मन के मारे मुनि बहे नारद से ज्ञानी।
सिंगी रिषि पारासरा कीन्हे रजधानी ॥८७॥
चढ़े पुरंजन इंद्र पर कर धाई धाई।
गौतम रिषि की इस्तरी सँग कीन्हा जाई[3] ॥८८॥
नारि अहल्या सूँ रते सुरपति से देवा।
इंद्र सहस भग होगये कुछ ख्याल न भेवा[3] ॥८९॥

---

(१) पृथ्वी। (२) सिरका।
(३) एक बार देवराज इन्द्र का मन गौतम ऋषि की स्त्री अहिल्या को देख कर मोहित हो गया। विचार किया कि यह सुन्दरी हम को कैसे प्राप्त हो क्योंकि सिवाय बड़े तड़के स्नान के हेतु और कभी ऋषि जी घर से बाहर जाते नहीं। तब आधी रात को मुरग़ा का रूप धर कुकड़ूँकूँ की आवाज़ दी। ऋषि जी यह समझ कर कि सबेरा हो गया घबरा कर जागे और गंगा स्नान करने चले गये। इन्द्र गौतम का रूप धारण करके अहिल्या के पास आये और कहा कि अभी रात बहुत है स्नान की बेला नहीं है इस लिये हम लौट आये, यह कह कर अहिल्या के संग भोग किया। जाते समय गौतम जी भी

प्रान अपान[1] समान कर सुरती लौ लाई।
दुहु बर कोट ढहाइया अरु तहँ बड़ खाई ॥१०८॥
भरम बुरज भाने सबै सोलह सुर धाई।
सतरह सुरती हंसिनी सब खबरैं लाई ॥१०९॥
चढ़ा बिहंगम नाद भर निरगुन निरबानी।
सिव साहब के लिंग पर गिर गंगा आनी ॥११०॥
मान तलाई मालवे[2] तिरबेनी तालं।
गंगा जमुना सरसुती जब छुटी दयालं ॥१११॥
सिव साहब के लिंग पर तिरबेनी बूड़े।
कलमष[3] कसमल कट गये सब बंधन छूटे ॥११२॥
परा नंद नित बूझहीं दरबार हमारे।
अमृत की भाठी झरै कलमष कूँ जारै ॥११३॥
ब्रह्म-रंध्र[4] का घाट है घट मठ से न्यारा।
सुरति हंसनी चढ़ गई लख पूरब द्वारा ॥११४॥
सतगुरु मेरा महरमी काया धर आया।
जिन्ह माटी के महल में निज ब्रह्म लखाया ॥११५॥
बाहर भीतर एक है पल जोड़े प्रानी।
हिरदे ही में देख ले वह अगम निसानी ॥११६॥
सुन्न सलहला[5] पंथ है पद पारख लीजै।
जटा कुंडली जाइये अमृत रस पीजै ॥११७॥
जटा कुंडली पर बसै सतपुरुष बनानी।
जहँ समरथ का तख्त है धुन अनहद बानी ॥११८॥
जहँ वहँ रहन कबीर की निज मंदिर महली।
चढ़ै सही गिर गिर परै वह पंथ सलहली ॥११९॥
पैड़ी पंथ न पग धरन कैसे कर जाऊँ।
मिला रहै अरु ना मिलै कहँ सुरत लगाऊँ ॥१२०॥

(१) नीचे की वायु। (२) उपजाऊ देश। (३) पाप। (४) तीसरा तिल। (५) रपटीला।

ऊँची भुमि अकास मठ जहँ जाय न कोई।
सुरत निरत से अगम है धुन ध्यान समोई ॥१२१॥
दरस परस देवल धजा फरकै दिन राती।
जोत अखंडित जगमगै दीपक बिन बाती ॥१२२॥
नभ से न्यारा नूर है झीने से झीना।
ज्ञान ध्यान की गम नहीं परखै परबीना ॥१२३॥
संख कलप जुग होगये जो टरै न टारा।
खड़ग बान बेधे नहीं है अधर अधारा ॥१२४॥
पत्थर में हीरा चलै धन धरती जानै।
लाख लोग पासे खड़े दरसत पाषानै ॥१२५॥
सात आवरन बेधिहै जो पावै हीरा।
काया में से उड़ चले पलकों के तीरा ॥१२६॥
उरगन[1] हीरा गह लिया सुरती घर आना।
सेत धजा देवल खिमै[2] जहँ कोट निसाना ॥१२७॥
कमल रूप करतार है नैनों के माहीं।
सातो कमल सरीर में वह न्यारा साँईं ॥१२८॥
जागत सोवत है नहीं कछु खाय न पीवै।
चिरंजीव चिंतामनी जो बहु जुग जीवै ॥१२९॥
काल कर्म आगे खड़े लावै जिस लागै।
भगली भगल उचारिहै बिद्या अनुरागै ॥१३०॥
काल कर्म आगे खड़े नित नाच कराहीं।
भगली भावै सो करै जा की गम नाहीं ॥१३१॥
पलक बीच पैमाल[3] है सब खंड ब्रह्मंडा।
अजब नवेली मेदनी[4] छिन में परचंडा ॥१३२॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस से कँपैं दिन राती।
निर्दावै[5] सोई भये जिस काल न खाती ॥१३३॥

(१) साँप। (२) झलकै। (३) नाश (४) पृथ्वी (५) निर्भय।

अनंत कोटि ब्रह्मांड का चरबन कर लेई।
महा काल की डाढ़ में आवे सब कोई ॥१३४॥
काल डरै करतार से कर बंधन जोड़ी।
संख असंखौ चल गये सिव बिस्नु करोड़ी ॥१३५॥
अकल पुरुष साहब धनी अविगत अबिनासी।
गरीबदास सरना लिया काटो जम फाँसी ॥१३६॥

॥ कुसंगत का अंग ॥

कमल फूल मन भँवर है काँटा कर्म कुसंग।
पाँच बिषय सूँ बँध रहा कैसे लागे रंग ॥१॥
काया सरवर मीन मन दसौ दिसा कूँ जाय।
बिषय लहर दिल देह में भगूति न रंच[1] सुहाय ॥२॥
कुटिल बासना कमल[2] में पावत नहीं मुराद।
मरजीया[3] मन कूँ करै जहँ पथ अगम अगाध ॥३॥
सुरभी[4] बँधी चमार के ब्राह्मन बोई भाँग।
चंदन खर के लेपिये कुंदन बदले राँग ॥४॥
कर्म कटारी बाँध के करै भारथी जंग[5]।
अपने सिर लेवै नहीं प्राछित सौंपै गंग ॥५॥
तरन तारनी बकस दे हमरे प्राछित काट।
पारब्रह्म सूँ ऊलभै परभी न्हावै घाट ॥६॥
बगुला हंसा एक सर एकै रूप रसाल।
वह सरवर मोती चुँगै वह मच्छी का काल ॥७॥
सीप पियत है स्वाँति कूँ बिच है खारी नीर।
माहें मोती नीपजै करनी बंध सरीर ॥८॥

(१) कुछ। (२) हृदय। (३) गोताखोर। (४) गाय। (५) महाभारत सरीखी लड़ाई।

नग फूटा बिकता नहीं सारा लीजै सोध।
हीरा पत्थर में बसै धन धरती ले खोद ॥९॥
कदली माँह कपूर है गज मोती अँदरून।
चुभक चिड़ैया चोंच भर पैठे गज नाखून ॥१०॥
यौ तो सतसँग तुझ कहा कुसँग कहूँ भय भीत।
स्वाँति पड़े जो सरप मुख करता जहर अनीत ॥११॥
भूम पड़े जैसा फलै सुर की संगत कीन।
नीचन मुख नहि देखना ना कोइ मिलै कुलीन ॥१२॥
लोहे चुम्बक प्रीतड़ी[1] दोनों जड़ जगदीस।
चेतन चेतन तें मिलै ल्हीस मिलत है ल्हीस ॥१३॥
रूमी[2] बस्तर अंतरा लोहा पारस बीच।
चार जुगन मेला नहीं रहते निकट नगीच ॥१४॥
ऐसा नीच न जान दे साहब के दरबार।
समझत नहिं अज्ञान बुध लग रहे करम लगार ॥१५॥
करम भरम भारी लगे मनसा चंचल चाव।
बुध बेधै नहिं सुरत सत महल न लगे लगाव ॥१६॥
पिंगल घाटी ना लखी हरफ[3] न लगी कसीस।
ये दोनों परसिद्ध हैं लाल झमक्कै सीस ॥१७॥
कौन कुसंगत ना लखा आड़ा परदा खोल।
यह तन तालिब कूँ दिया माहें रतन अमोल ॥१८॥
गदहा मिसरी प्याइये जा का योही काल।
माखी घृत नहवाइये परसत ही पैमाल ॥१९॥
जवासा जल रोग है आक[4] सूख बरखंत।
ओला अगिनी एकसर संसारी बिच संत ॥२०॥
अठसठ तीरथ में मिली देखो गंगा ज्ञान।
न्यारी धारा चलत है गंगा सागर जान ॥२१॥

(१) प्रीत। (२) ऊन। (३) नकश, कर्म का लेखा। (४) मदार।

ज्यों कुंजर सिर धुनत है अगला[१] जनम सुझंत।
अबकी हेले[२] नर करे तो सेऊँ पूरे संत ॥१८॥

राज दुवारे जाय कर रापत[३] रोवै काहि।
पग जंजीर न डारिये कजली बन कूँ जाहि ॥१६॥

सीस महावत बसत है अंकुस मोड़ समोड़।
बचन फिरत है पलक में साँईं नाहीं लोड़[४] ॥२०॥

ऐसा हाफिज[५] फील है रहत गयंद गियान।
राज दुवारे बन्धिया बिन साँईं के ध्यान[६] ॥२१॥

सुन्न समुद जो मन रहै तो नहि भरमै प्रान।
अरस कुरस से भिन्न है देखै अकल अमान ॥२२॥

सुन्न सरोवर सिखर सर सूभर[७] तालम ताल।
मन मरजीया छोड़िये लावै हीरा लाल ॥२३॥

सुन्न सरोवर सैर कर गगन उड़ाना मन्न।
अगम भूमि भूलै नहीं लावै नाम रतन्न ॥२४॥

सुन्न सिखर संगत करै मूलै खोज न पंथ।
फेर उलट हटिहै नहीं रावत जेहा दंत[८] ॥२५॥

सती पुकारै सर[९] चढ़ी मुख बोलत है राम।
कौतुक देखन सो गये जिनके मन सहकाम ॥२६॥

सती जरै अरु सर जरै कौतुक[१०] देखनहार।
धाम जहाँ का तहाँ है मिलै रूप संसार ॥२७॥

सती बहुर उपजै नहीं घर जाने की प्रीत।
सती रटत है राम कूँ कौतुक गावै गीत ॥२८॥

---

(१) पुरबला। (२) बार। (३) हाथी। (४) इच्छा। (५) कुरान को याद किये हुए। (६) मशहूर है कि हाथी को अपना पिछला जन्म याद रहता है कि मैं कौन था और भगवन्त को भूल जाने से पशु जोनि पाई इसी सोच में हाथी खड़ा खड़ा अपना शरीर और सिर धुनता है और प्रण करता है कि अगले जन्म में जो दया से मनुष्य तन पाऊँगा तो मालिक को कभी न बिसारूँगा। (७) शुभ्र=प्रकाशमान। (८) जैसे हाथी के दाँत बाहर निकले हुए फिर भीतर नहीं पैठते। (९) चिता। (१०) तमाशाई।

जनम पुरबला सूझई जरिहैं बारंबार।
बिषय बासना उर बसै तक कूँ करिहैं छार ॥२९॥
सती न संका जरन की काम लुब्ध[1] घट बीच।
सकल सखी झूलन चलीं जैसे सावन तीज ॥३०॥
जनम इकीस जो सँग जरै तौ स्वर्गापुर बास।
मन इच्छा फल पावहीं पुरुष समीप निवास ॥३१॥
नारी पुरुष पिरेम सूँ बैठे स्वर्ग अकास।
नव करोर दिब[2] बरस लग पुरवत मन की आस ॥३२॥
करनी भरनी भुगत कर पैठत हैं मृत लोक।
बिना भग्ति भावै नहीं सब संगत में दोष ॥३३॥
तपी तपै तन कूँ दहै पाँचो इंद्री साध।
नहि इच्छा दीदार की भूले आदि अनाद ॥३४॥
लाख बज्र कूँ झेल कर सूरे जूझैं खेत।
बादी जोगी हठ करैं चिनगी बरखै रेत ॥३५॥
बादी जोगी बँध रहा मन इच्छा बड़ राज।
अंत बेर यों मारिये ज्यों तीतर पर बाज ॥३६॥
तन तो बाँबी हो गया मन की गई न बान।
स्वर्ग पहुँच दोजख गये सतगुरु लगे न कान ॥३७॥
तन की तारी लावई मनसा जरै मसाल।
राज पाय नरकै परै बाँधी पोट जवाल[3] ॥३८॥
पाँचो इंद्री मन छुठा फिरता डाँवाँडोल।
सप्तपुरी का राज तज लगे तपस्या झोल ॥३९॥
तप से धीर न होत है यह मन रंगा राज।
साहब की नहिं बंदगी साजा झूठा साज ॥४०॥

---

(१) लोभ। (२) देवताओं का बरस। (३) खराबी।

सतगुरु संगत सार है सकल कुसँग सब जीव।
पानी में निकसै नहीं अनेक जतन कर घीव ॥२२॥
परमानँद से बिछुड़ता यह मन हंसा काग।
मुक्ति नहीं सतगुरु बिना कहाँ छिपै लै दाग ॥२३॥
कमरी के रँग ना चढ़ै कोइला नहीं सपेद।
सतगुरु बिन सूझै नहीं कहा पढ़त है बेद ॥२४॥
कौड़ी बदले जात है यह मानिक नग हंस।
पाँचो सेती बँध रहा जुग जुग होत बिधंस ॥२५॥
पाँच पचीस कुसंगनी सुन्न सिखर नहि न्हाहिं।
सतगुरु सूँ मेला नहीं यों चौरासी जाहिं ॥२६॥
सतगुरु सूरत नगर से आये हैं बड़ काज।
काम कदर जानै नहीं हंसा चढ़ै जहाज ॥२७॥
कस्तूरो को बासना मिरगा लेत सुबास।
निरख परख आवै नहीं बहुरि ढँढोरै घास ॥२८॥
कस्तूरी महकंत है साहब है संबूह।
नौका चढ़ै न नाम की अंधे डूबत कूँह ॥२६॥

॥ संगत का अंग ॥

संगत कीजे साध की संसारी भटकंत।
पिंजर सूआ बसत है किस कूँ बूझै पंथ ॥ १ ॥
सतगुरु की संगत भली हंसा थीर मुकाम।
जुगन जुगन के बीछुरे परसे लोक निदान ॥ २ ॥
साधौं की संगत करै बड़ भागी बड़ देव।
आपन तौ संसा नहीं और उतारै खेव ॥ ३ ॥
संगत सुर की कीजिये असुर न आवै होस।
बुध भ्रष्टी सूँ संग क्या उलटा देही दोस ॥ ४ ॥
संगत सुर की कीजिये असुरन सूँ क्या हेत।
डार मूल पावै नहीं ज्यों मूली का खेत ॥ ५ ॥

संगत सुर की जो रहै असुरों की है गंध।
सुर हैं स्वर्गालोक के असुर मलीने जिंद ॥ ६ ॥
सूआ सतगुरु कहत है पिंजरे परे परान।
खिड़की खुलते उड़ गया मंतर लगा न कान ॥ ७ ॥
अंतर हेत न प्रीत पद सूए ज्यों संसार।
पिंजरा खाली तासु का उड़ गया बनों मँझार ॥ ८ ॥
सत गुर दत दाता[1] कहै बानी बड़ी बलंद।
मुख बोले क्या होत है अंतर हेत न अंध ॥ ९ ॥
सुअटा खाली रह गया पार पहूँचा नाहिं।
राम राम प्रानी कहै जम की नगरी जाहिं ॥१०॥
सुअटा पढ़ै सुभान गत अंतर नहीं उचार।
कुंज[2] कुरल[3] अंड पोखहीं कोसन सहस हजार ॥११॥
कुरल अंड हर हेत जप अललपच्छ गहि तार।
हिरदा सुद्ध सरीर सर[4] कच्छप दृष्ट निहार ॥१२॥
ऐसी संगत जो मिलै तौ साँई सूँ भेट।
ऊपरली बरबाद है जम मारैगा फेट ॥१३॥
कुरला कच्छप अलल कूँ किन समझाया ज्ञान।
आड़ा परदा है नहीं हिरदे अंतर ध्यान ॥१४॥
ऐसी संगत जो मिलै भगत गर्भ प्रहलाद[5]।
नारद से सतगुरु मिलैं सूझै अगम अगाध ॥१५॥
सुकदे गर्भ जोगेस्वर[5] ध्रुव का ध्यान अमान।
लाख बरस के बह गये पाँच बरस परवान ॥१६॥
जैसे मीन समुद्र में दसो दिसा कूँ जाय।
हृदय कमल में पैठ कर जो खोजै सो पाय ॥१७॥

---

(१) तोता के पढ़ाने की बोली। (२) कुंजबन चिड़िया। (३) कोक चिड़िया। (४) तालाब। (५) कहते हैं कि प्रहलाद और सुकदेव माँ के पेट से भक्त पैदा हुए।

ज्यों कुंजर सिर धुनत है अगला[1] जनम सुभंत।
अबकी हेले[2] नर करे तो सेऊँ पूरे संत ॥१८॥
राज दुवारे जाय कर रापत[3] रोवै काहि।
पग जंजीर न डारिये कजली बन कूँ जाहि ॥१९॥
सीस महावत बसत है अंकुस मोड़ समोड़।
बचन फिरत है पलक में साँईं नाहीं लोड़[4] ॥२०॥
ऐसा हाफिज[5] फील है रहत गयंद गियान।
राज दुवारे बन्धिया बिन साँईं के ध्यान[6] ॥२१॥
सुन्न समुद जो मन रहै तो नहि भरमै प्रान।
अरस कुरस से भिन्न है देखै अकल अमान ॥२२॥
सुन्न सरोवर सिखर सर सूभर[7] तालम ताल।
मन मरजीया छोड़िये लावै हीरा लाल ॥२३॥
सुन्न सरोवर सैर कर गगन उड़ाना मन्न।
अगम भूमि भूलै नहीं लावै नाम रतन्न ॥२४॥
सुन्न सिखर संगत करै मूलै खोज न पंथ।
फेर उलट हटिहै नहीं रावत जेहा दंत[8] ॥२५॥
सती पुकारै सर[9] चढ़ी मुख बोलत है राम।
कौतुक देखन सो गये जिनके मन सहकाम ॥२६॥
सती जरै अरु सर जरै कौतुक[10] देखनहार।
धाम जहाँ का तहाँ है मिलै रूप संसार ॥२७॥
सती बहुर उपजै नहीं घर जाने की प्रीत।
सती रटत है राम कूँ कौतुक गावै गीत ॥२८॥

---

(१) पुरबला। (२) बार। (३) हाथी। (४) इच्छा। (५) कुरान को याद किये हुए। (६) मशहूर है कि हाथी को अपना पिछला जन्म याद रहता है कि मैं कौन था और भगवन्त को भूल जाने से पशु जोनि पाई इसी सोच में हाथी खड़ा खड़ा अपना शरीर और सिर धुनता है और प्रण करता है कि अगले जन्म में जो दया से मनुष्य तन पाऊँगा तो मालिक को कभी न बिसारूँगा। (७) शुभ्र=प्रकाशमान। (८) जैसे हाथी के दाँत बाहर निकले हुए फिर भीतर नहीं पैठते। (९) चिता। (१०) तमाशाई।

जनम पुरबला सूझई जरिहैं बारंबार।
बिषय बासना उर बसै तक कूँ करिहैं छार ॥२६॥
सती न संका जरन की काम लुब्ध[1] घट बीच।
सकल सखी झूलन चलीं जैसे सावन तीज ॥३०॥
जनम इकीस जो सँग जरै तौ स्वर्गापुर बास।
मन इच्छा फल पावहीं पुरुष समीप निवास ॥३१॥
नारी पुरुष पिरेम सूँ बैठे स्वर्ग अकास।
नव करोर दिब[2] बरस लग पुरवत मन की आस ॥३२॥
करनी भरनी भुगत कर पैठत हैं मृत लोक।
बिना भग्ति भावै नहीं सब संगत में दोष ॥३३॥
तपी तपै तन कूँ दहै पाँचो इंद्री साध।
नहिं इच्छा दीदार की भूले आदि अनाद ॥३४॥
लाख बज्र कूँ झेल कर सूरे जूझैं खेत।
बादी जोगी हठ करैं चिनगी बरखै रेत ॥३५॥
बादी जोगी बँध रहा मन इच्छा बड़ राज।
अंत बेर यों मारिये ज्यों तीतर पर बाज ॥३६॥
तन तो बाँबी हो गया मन की गई न बान।
स्वर्ग पहुँच दोजख गये सतगुरु लगे न कान ॥३७॥
तन की तारी लावई मनसा जरै मसाल।
राज पाय नरकै परै बाँधी पोट जवाल[3] ॥३८॥
पाँचो इंद्री मन छठा फिरता डाँवाँडोल।
सप्तपुरी का राज तज लगे तपस्या झोल ॥३९॥
तप से धीर न होत है यह मन रंगा राज।
साहब की नहिं बंदगी साजा झूठा साज ॥४०॥

---

(१) लोभ। (२) देवताओं का बरस। (३) खराबी।

तप तारी तन में लगी परगन[१] की तकसीस।
साहब की नहिं बंदगी सतगुरु ना बकसीस ॥४१॥
मन इच्छा नित तू करै राज करन मन लोभ।
बहु बिध घट में कामना ज्यों बिरछा पर गोभ[२] ॥४२॥
सँगत कुसंगत अंतरा इकसाँ ही मत जान।
ज्यों सोवत है सेज पर त्यों धरे अंत मसान ॥४३॥
पारख[३] प्रेम न आवही ना कहिं हाट जुखंत।
सौदा तबहीं होत है भेटैं सतगुरु संत ॥४४॥
जैसे माता गर्भ को राखै जतन बनाय।
ठेस लगै तो छीन है ऐसे भग्ति दुराय[४] ॥४५॥
दम सुमार आधार रख पलकों मद्ध धियान।
संतों की संगति करै समझ बूझ गुरु ज्ञान ॥४६॥
इड़ा पिंगला सोध कर चढ़ गिरवर कैलास।
दो दल की घाटी जहाँ भगल बिदाहै[५] दास ॥४७॥
ब्रह्म रंध्र के द्वार को खोलत है कोइ एक।
द्वारे से फिर जात हैं ऐसे बहुत अनेक ॥४८॥
संख भगल छल होत है नद है परले पार।
संगत सतगुरु की करै तब पावै दीदार ॥४९॥
संसारी सूँ साख क्या ऊसर बरषा देख।
बोवै बीज न खेत हित तो क्या काटै मेख ॥५०॥
नाम रते निरगुन कला मानस नहीं मुरार[६]।
ज्यों पारस लोहा लगै कटिहै करम लगार ॥५१॥

॥ बैराग का अंग ॥

बैराग नाम है त्याग का पाँच पचीसों माहिं।
जब लग संसा सरप है तब लग त्यागी नाहिं ॥ १ ॥

(१) परगना। (२) नया कुला। (३) परखने में। (४) छिपाय। (५) घास निकालने के लिए खेत को फिर से जोतने का नाम। (६) मुराद।

बैराग नाम है त्याग का पाँच पचीसौ संग।
ऊपर की केंचल तजी अंतर बिषय भुअंग ॥ २ ॥
असन बसन सब तज गये तज गये गाँव गिरेह।
माहें संसा सूल है दुरलभ तजना येह ॥ ३ ॥
बाज कुही[1] गत ज्ञान की गगन गरज गरजंत।
लूटै सुन्न अकास तें संसा सरप भछंत ॥ ४ ॥
नित ही जामै नित मरै संसय माहिं सरीर।
जिनका संसा मिट गया सो पीरन सिर पीर ॥ ५ ॥
ज्ञान ध्यान दो सार है तीजे तत्त अनूप।
चौथे मन लागा रहै सो भूपन सिर भूप ॥ ६ ॥
कासी करवत लेत है आन कटावै सीस।
बन बन भटका खात है पावत ना जगदीस ॥ ७ ॥
संसा तो संसार है तन पर धारै भेख।
मरकब[2] होहिं कुम्हार के सन्यासी अरु सेख ॥ ८ ॥
मन की झीनी ना तजी दिलही माहिं दलाल।
हर दम सौदा करत है करम कुसङ्गति काल ॥ ९ ॥
मन सेती खोटी गढ़ै तन सूँ सुमिरन कीन।
माला फेरे क्या हुआ दुर कुट्टन बेदीन ॥१०॥
तन मन एक वजूद कर सुरत निरत लौ लाय।
बेड़ा पार समुद्र होइ एक पलक ठहराय ॥११॥
दृष्टि पड़े तो फना[3] है धर[4] अंबर[5] कैलास[6]।
किरतम बाजी झूठ है सुरत समोवो स्वाँस ॥१२॥
सुरत स्वाँस कूँ एक कर कंज[7] किनारे लाय।
जा का नाम बिराग है पाँच पचीसो खाय ॥१३॥

---

(१) शिकरा। (२) कुम्हार के लादने के जानवर यानी गधे। (३) नाश होने वाला है। (४) धरती। (५) आकाश। (६) स्वर्गादि। (७) शिव-नेत्र।

पाँच पचीसो भून कर बिरह अगिन तन जार।
सो अबिनासी ब्रह्म है खेलै अधर अधार ॥१४॥
त्रिकुटी आगे झूलता बिनहीं बाँस[1] बरंत[2]।
अजर अमर आनंद पद परखै सुरत निरंत ॥१५॥
यह महिमा कासे कहूँ नैनों माहीं नूर।
पल पल में दीदार है सुरत सिंधु भरपूर ॥१६॥
झीना दरसै दास को पुहुप रूप परमान।
बिन ही बेली गहबरे[3] है सो अकल[4] अमान ॥१७॥
अकल अभूमी[5] आदि है जा के नाहीं अंत।
दिलही अंदर देव है निर्मल निर्गुन तंत ॥१८॥
तन मन सेती दूर है माहें मंझ मिलाप।
तरवर छाया बिरिछ में है सो आपै आप ॥१९॥
नौ तत के तो पाँच हैं पाँच तत्त के आठ।
आठ तत्त का एक है गुरू लखाई बाट ॥२०॥
चार पदारथ एक कर सुरत निरत मन पौन।
असल फकीरी जोग यह गगन मँडल कूँ गौन ॥२१॥
पंछी घाला आलना[6] तरवर छाया देख।
गरभ जून के कारने मन में किया बिबेक ॥२२॥
जैसे पंछी बन रमा संझा ले बिसराम।
प्रात समय उड़ जात है सो कहिये निःकाम ॥२३॥
जा के नाद न बिंदु है घट मठ नहीं मुकाम।
गरीबदास सेवन करै आदि अनादं राम ॥२४॥

॥ लै का अंग ॥

लै[7] लागी तब जानिये जग सूँ रहै उदास।
नाम रटै निरभय कला हर दम हीरा स्वाँस ॥ १ ॥

---

(१) खंभा। (२) रस्सी। (३) घने पेड़। (४) अकाल। (५) बेठौर। (६) खोता लगाया। (७) लौ।

लै लागी तब जानिये जग सूँ रहै उदास।
नाम रटै निरदुंद होय अनहदपुर में बास ॥ २ ॥
लै लागी तब जानिये हरदम नाम उचार।
एकै मन एकै दिसा साँई के दरबार ॥ ३ ॥
लै लागी तब जानिये हरदम नाम उचार।
एकै मन एकै दिसा खड़ा रहै दरबार ॥ ४ ॥
लै लागी तब जानिये हर दम नाम उचार।
धीरे धीरे होयगा वह अल्लह दीदार ॥ ५ ॥
लै लागी तब जानिये हर दम नाम हनोज।
बिकट पंथ पावै नहीं मौनी केसा खोज[1] ॥ ६ ॥
लै लागी तब जानिये हर दम नाम हनोज।
मैं मेरी कूँ पटक दे सिर से डारो बोझ ॥ ७ ॥
लै लागी तब जानिये लै की लगै दुकान।
ले लँगर[2] सौदा करै छाँड़ महातम मान ॥ ८ ॥
लै लागी तब जानिये लै की लगै दुकान।
बखत परे सौदा करै कोठे डारै ज्ञान[3] ॥ ९ ॥
महँगा सस्ता देख ले सौदा करै बिचार।
दुगुने तिगुने चौगुने करिहै साहूकार ॥१०॥
महँगा सस्ता देख ले सौदा करै समोय[4]।
दूने तिगुने चौगुने कर ले जाता कोय ॥११॥
पूँजी साहूकार की बंजारा संसार।
पूँजी माल गँवाइया नाहक बहै बिगार ॥१२॥
ये पुरपट्टन ये गली बहुरि न देखै आय।
सतगुरु सूँ सौदा हुआ भर ले माल अघाय ॥१३॥

---

(१) जैसे गूँगा किसी बेजाने हुए स्थान या मनुष्य की खोज में सैन से पूछै तो पता नहीं लग सकता। (२ खैरात-खाना। (३) कोठे पर ज्ञान को पटक दे। (४) घुस कर।

ये पुरपट्टन ये गली बहुरि न देखै आय।
सतगुरु सूँ सौदा हुआ लीजै माल लदाय ॥१४॥
ये मुकते[1] निज पैठ हैं ये मुकते बाजार।
सतगुरु सूँ सौदा भया भरले बालद[2] लार ॥१५॥
राम नाम निज सार है राम नाम निज मूल।
राम नाम सौदा करो राम नाम नहिं भूल ॥१६॥
इस दुनियाँ में आय कर इन चारों कूँ बंध।
काम क्रोध छोह चूहरा[3] लोभ लपटिया अंध ॥१७॥
मोह मवासी पकर ले ममता का सिरताज।
दुरमत दामनगीर होइ निःचल नगरी राज ॥१८॥
ज्ञान जोग अरु भक्ति ले सील संतोष समाधि।
लै लागी तब जानिये छूटै सकल उपाधि ॥१९॥
ज्ञान जोग अरु भक्ति ले सील संतोष बिबेक।
लै लागी तब जानिये जब दिल आवै एक ॥२०॥
गगन गरज भाठी चुए हीरा घंटिक सार।
लै लागी तब जानिए उतरै नहीं खुमार ॥२१॥
गगन गरज भाटी झरै चोखा फूल चुअंत।
सिर के साँटे पाइये कोई साधु पिअंत ॥२२॥
गगन गरज घन बरषहीं बाजै दीरघ नाद।
अमरापुर आसन करैं जिन्ह के मते अगाध ॥२३॥
गगन गरज घन बरषहीं बाजै अनहद तूर।
लै लागी तब जानिये सनमुख सदा हजूर ॥२४॥
गगन गरज घन बरषहीं दामिन खिमै अखंड।
दास गरीब कबीर है सकलदीप नौ खंड ॥२५॥

(१) अनेक। (२) बैल। (३) भंगी।

॥ साँच का अंग ॥

साँचा सतगुरु जो मिलै हंसा पावै थीर।
झकझोले जूनी मिटै मुरसिद गहिर गंभीर ॥ १ ॥
साँचे कूँ तो साँच है कूड़े कूँ है कूड़।
बैल होत कंगाल का गल में पहरे जूड़ ॥ २ ॥
साँचे कूँ परनाम है झूठे के सिर दंड।
ठौर नहीं तिहुँ लोक में भरमत है नौ खंड ॥ ३ ॥
साँचे का सेवन करो झूठे कूँ ले लूट।
साँच सब्द सूँ यों डरै ज्यों स्याने की मूठ[1] ॥ ४ ॥
साँचे का सुमिरन करो झूठे द्यो जंजाल।
साँचा साहब आप है झूठ कपट सब काल ॥ ५ ॥
साँचे के चरनों लगो झूठे का ल्यो सीस।
साँच सकल में रहैगा झूठ न बिस्वे बीस ॥ ६ ॥
साँचे कूँ सब सौंप द्यो भग्ति बंदगी नाम।
झूठा कपटी मारिये हमरे कौने काम ॥ ७ ॥
साँचे कूँ स्वर्गापुरी झूठा दोजख माहिं।
चंद सूर की आयु[2] लग दोजख निकसै नाहिं ॥ ८ ॥
साँचे संकर रीझहीं ब्रह्मा जोड़ैं प्रीत।
बिसनू करैं प्रतिपाल हद[3] सकल संत संगीत ॥ ९ ॥
साहब जिन्ह के उर बसै झूठ कपट नहिं अंग।
तिन्हका दरसन न्हान है कहँ परबी फिर गङ्ग ॥१०॥
साँचे के सन्मुख रहो झूठे सूँ क्या नेह।
संख जुगन जुग परैगी झूठे के मुख खेह ॥११॥
झूठा सब संसार है साँचा है सो एक।
पारब्रह्म सतपुरुष पद सब बसुधा[4] की टेक ॥१२॥

---

(१) गुनी के जादू का बान। (२) आयुर्दाय। (३) बहुत। (४) पृथ्वी।

साँचे साँईं संत जन झूठे हैं सब लोक।
मेढक मछली तड़फड़ै ज्यों ओछे जल जोंक ॥१३॥
साँचे सदा मसंद[1] पर उस चंगे दरबार।
झूठों के जूती पड़ै जम किंकर की मार ॥१४॥
झूठे कपटी जीव सब साँचे संत सुजान।
तिरबाचा छूटै नहीं झूठों ना कर कान ॥१५॥
साँचों के संग चालिये झूठों संग न जाह।
रावन मिलता है नहीं बीभीखन की बाँह ॥१६॥
बीभीखन लंका दई रावन कटिहै मूड़।
साँचे साधू भँवर हैं झूठे गोबर भूढ़[2] ॥१७॥
झूठा कंसा मारिये फिर चानूर चमार।
रुकमिन कूँ ब्याहन गया सीस कटा सिसुपाल ॥१८॥
बालि सहस्राबाहु से मारे छाती तोर।
साँचा जन प्रहलाद है झूठी जल गइ होरि[3] ॥१९॥
हिरनाकुस के उदर कूँ नख से गेरा फार।
निरगुन सूँ सरगुन भये धर नरसिंघ औतार ॥२०॥
द्रोपदि चीर बधाइया[4] पीतंबर पटनाल।
दूसासन से पच गये कौरों पड़ा जवाल[5] ॥२१॥
दुर्जोधन की मेदनी होगई खंड बिहंड।
द्रोनाचार्ज भीषम पिता बचे न धर सिर दंड ॥२२॥
गज अरु ग्राह उबारिया पसू जूनि सूँ संत।
दान मेड़ छाँड़ी नहीं करन तुड़ाये दंत[6] ॥२३॥

---

(१) तकिया मसनद। (२) गुजुवा। (३) होलका जो अग्नि से अमर समझी जाती थी अपने भतीजे प्रहलाद भक्त को जलाने के लिये गोद में लेके आग में बैठी सो आप ही जल गई और प्रहलाद बच गये। (४) बढ़ाया। (५) खराबी। (६) राजा करन के दान के समय सोना कम हो जाने पर अपना दाँत तोड़ डाला कि उसमें से जड़ा हुआ सोना निकाल कर दान कर सकें।

महाभारत के जंग में पाँच उबारे पंड।
जुगन जुगन की भक्तनी घंटा लै रख अंड[१] ॥२४॥
साँचों के संगति रहै झूठों सेतीं दूर।
परमेसुर करुना मई रहै सकल घट पूर ॥२५॥
बालमीक आये सुपच बजा पाँच-जन नाद।
पंडों जग असुमेध में एकै पाया साध[२] ॥२६॥

---

(१) भगवंत ने भरुही चिड़िया की प्रार्थना पर महाभारत के मैदान में उसके अंडों की रक्षा के लिये हाथी का घंटा गिरा कर उन को ढाँक कर बचा दिया। (२) पांडवों के राजसूय यज्ञ में यद्यपि पृथ्वी भर के सब ऋषीश्वर और मुनीश्वर और योगीश्वर आदि उपस्थित थे पर श्रीकृश्न का पंचजन्य शंख जो चिन्ह यज्ञ के सुफल होने का है नहीं बजा। राजा युधिष्ठिर ने कारण पूछा तो श्रीकृश्न ने उत्तर दिया कि यह सब जो जमा हुए हैं अहंकारी हैं इनमें कोई सच्चा भक्त नहीं है, जाओ बाल्मीकि नामक स्वपच अर्थात् डोम को जो सच्चा भक्त और महात्मा है आदर सहित बुला लाओ तब यज्ञ सुफल होगा। यह सुनकर भीमसेन स्वपच को बुलाने को भेजे गये। भीमसेन ने अहंकार से स्वपच से कहा कि चल तुझे राजा ने याद किया है। स्वपच ने जवाब दिया कि मैं पूजा पर बैठा हूँ जरा माला मेरी खूँटी से उतार कर मुझे दे दीजिये तो जाप करके तुर्त चला आऊँ। भीमसेन ने कुभाव से माला को खूँटी से उतार कर देना चाहा पर यद्यपि उनको अस्सी हजार हाथी का बल था उस माला को न उठा सके, फिर भी अहङ्कार न छूटा और नाक भौं चढ़ा कर बोले कि तूही उठ कर लेले मुझे देर होती है। जब भीमसेन लौट कर गये तो श्रीकृश्न से कहा कि महाराज स्वपच थोड़ी देर में हाजिर होता है। श्रीकृश्न हँस कर युधिष्ठिर से बोले कि आप खुद जाकर बुला लाइये। जब राजा युधिष्ठिर स्वपच के घर पहुँचे तो उसे खिचड़ी पकाते पाया, बड़ी आधीनता से प्रार्थना की कि यज्ञ में सुशोभित होकर उसे सुफल कीजिये। स्वपच बोला कि मैं तो नीच डोम यज्ञ में बैठने योग्य नहीं हूँ पर राजा की आज्ञा सिर आँखों पर धरता हूँ जरा खिचड़ी खा लूँ। राजा ने जवाब दिया सब काम से निपट लीजिये मुझे जल्दी नहीं है। स्वपच ने हाँडी से थोड़ी खिचड़ी निकाल कर राजा के सामने धरी, राजा ने यह कह कर कि धन्य भाग उसके जिसे भक्तों का प्रसाद मिले पूरे भाव से हाथ फैलाया परन्तु स्वपच ने अपना हाथ खींच लिया कि ऐसा नहीं हो सकता और उठकर राजा के साथ हो लिया। जब यज्ञ में पहुँचा तो श्रीकृश्न ने पाँडवों की स्त्री द्रोपदी से उत्तम उत्तम प्रकार के भोजन बनवा रक्खे थे जिसे थालों में रुकमिणी जी ने सजाकर स्वपच के सामने धरा। स्वपच मीठे सलोने खट्टे इत्यादि सब प्रकार के भोजन एक साथ सान कर मुंह में भरने लगा। यह तमाशा देख कर द्रोपदी के जी में आया कि आखिर डोम मेरे पकाये हुए उत्तम खानों का स्वाद क्या जाने। इस खयाल के उपजते ही स्वपच ने हाथ खींच लिया और पंचजन्य शंख जो उसके आते ही बजने लगा था एक बारगी बन्द हो गया तब लोग फिर श्रीकृश्न के समीप आये। श्रीकृश्न बोले कि द्रोपदी से पूछो कि उसके जी में क्या खयाल गुजरा। द्रोपदी बड़ी लज्जित

भेखों के लसकर फिरैं बानी चोर कठोर।
सतगुर धाम न परसहीं चौरासी के ढोर[१] ॥२७॥
पारंगत[२] परिचय नहीं बानी कहै बनाय।
धरमराय दरगह[३] सड़ै झूठा लतरी[४] खाय ॥२८॥
कपटी कूँ भावै नहीं भक्ति मुक्ति की रीत।
झूठा लंगर फिरत है साधों टोहत सीत[५] ॥२९॥
साँचे सूरे संत हैं मरदाने जूझार[६]।
लाख दोस ब्यापै नहीं एक नाम की लार ॥३०॥
सत्त सुकृत अरु बंदगी जा उर ज्ञान बिवेक।
साध रूप साँईं मिले पूरन ब्रह्म अलेख ॥३१॥
सत्त सुकृत संतोष सर आधीनी अधिकार।
दया धरम जा उर बसै सो साँईं दीदार ॥३२॥
आदि अंत मध संत हैं रंचक झूठ जहान।
कपटी जुग जुग कपट है लख चौरासी खान ॥३३॥
साँचे कूँ संका नहीं झूठे भय घर माहिं।
कोट किले क्या चुनत है झूठा छूटै नाहिं ॥३४॥
साँईं बिन कित ठौर है साँईं बिन कित बास।
साँच मिलैगा साँच में झूठे जाहिं निरास ॥३५॥
साँच भगति नरहर[७] रची झूठा रचा जहान।
झूठा सब संसार है साँचे साधू जान ॥३६॥
सत्त सुकृत की बंदगी सत्त सुकृत का जाप।
झूठे जौजख[८] दीजिये साँचा आपै आप ॥३७॥

हुई तब श्रीकृश्न ने आज्ञा की कि यह भोजन अशुद्ध हो गया रुकमिणी दूसरी सामग्री भोग की भाव पूर्वक बनावे तब स्वपच भक्त के भोग के योग्य होगी। इस पर द्रोपदी ने बड़ी नेष्ठा से दूसरा भोग तैयार करके दीनता के साथ स्वपच के आगे धरा और ज्योंही स्वपच ने खाना शुरू किया पंचजन्य शंख बजने लगा और यज्ञ सुफल हुआ।

(१) चौपाया। (२) जो भवसागर पार हुए हैं। (३) दरबार। (४) पनही। (५) साधों का प्रसाद खोजता है। (६) योधा। (७) परमेश्वर। (८) नरक।

साहब सेती दोसती सन्तों सेती प्यार।
तिन्ह को संका है नहीं धरमराय दरबार ॥३८॥

॥ बिचार का अंग ॥

ज्ञान बिचार न ऊपजै क्या मुख बोलै राम।
संख बजावै बादई रते न निरगुन नाम ॥ १ ॥

ज्ञान बिचार बिबेक बिन क्यों दम तोरै स्वाँस।
कहा होत हरि नाम सूँ जो दिल ना बिस्वास ॥ २ ॥

ज्ञान बिचार बिबेक बिन क्यों भौंकत है स्वान।
दस योजन जल में रहै भीजत ना पाखान ॥ ३ ॥

ज्ञान बिचार बिबेक बिन क्यों रेंकत खर गीध।
कहा होत हरि नाम सूँ जो मन नाहीं सीध ॥ ४ ॥

समझ बिचारे बोलना समझ बिचारे चाल।
समझ बिचारे जागना समझ बिचारे ख्याल ॥ ५ ॥

करै बिचारै समझ कर खोज बूझ का खेल।
बिना मथे निकसै नहीं है तिल अंदर तेल ॥ ६ ॥

जैसे तिल में तेल है यों काया मध राम।
कोल्हू में डारे बिना तत्त नहीं सहकाम ॥ ७ ॥

बिचार नाम है समझ का समझ न परी परक्ख।
अकलमंद एकै घना बिना अकल क्या लक्ख ॥ ८ ॥

बिना बिचारे क्या लहै कस्तूरी भटकंत।
बिन बूझे नहिं पाइये गाँव डगर मग पंथ ॥ ९ ॥

ज्ञान सफा के चौक में जहाँ बिचार बिबेक।
कुटिलाई जिव बहुत हैं निरमल अंगा एक ॥१०॥

बिना बिचारे भरम है सुरपति सारखा होय।
गौतम रिषि गुरुवा बड़े जा की पत्नी जोय[१] ॥११॥

---

(१) बिना बिचार के इन्द्र सरीखा दूषित हो जाता है जिसने अहिल्या के संग प्रसङ्ग किया।

बिना बिचारे बिचरता बैरागी सुकदेव ।
सप्त पुरी में गमन कर ढूँढ़े जनक बिदेह[१] ॥१२॥
गोरखनाथ सुनाथ है जंतर मंतर जोग ।
सतगुरु मिले कबीर से काटे दीरघ रोग[२] ॥१३॥
गँधरपसेन गदहा भया पुत्तर पिता सराप ।
बिना बिचारे पैठ माँ सुना उरबासी लाप[३] ॥१४॥
जादो गये बिचार बिन भरमे छप्पन क्रोड़ ।
दुर्बासा से छल किया लागी मोटी खोड़[४] ॥१५॥

---

(१) शुकदेव जी के पिता व्यास जी ने उनको बहुत समझाया कि घर के त्याग करने से कुछ परमार्थ का काम नहीं बनता पर शुकदेव जी के मन में यह बात न बैठती थी सातो पुरी इत्यादि की यात्रा करते ही रहे तब व्यासजी ने थक कर उनसे कहा कि एक बेर राजा जनक से मिल लो फिर जो जी में आवे सो करो। शुकदेव जी राजी हुए और राजा जनक के पास गये। राजा जनक को राज्य कार्य में फँसा हुआ देख कर इन के मन से उनकी महिमा जाती रही। जब जनक ने पूछा कि कैसे आये तो उत्तर दिया कि पिता जी से आपके ज्ञानी और बिदेह होने की महिमा सुनी थी सो देख लिया और हम तो बन में एकान्त बास करेंगे। इस पर राजा जनक ने अपने तपोबल से ऐसा चमत्कार किया कि राज्य भवन में जहाँ वह बैठे थे बड़े जोर से आग लग गई। राजा जनक निश्चिन्त बैठे अपना काम करते रहे परन्तु शुकदेव जी अपनी कोपीन और कमंडल सम्हाल कर भागने लगे। इस पर राजा हँसे और कहा कि इसी को त्याग कहते हो ! मेरा सब महल और माल जल रहा है सो मुझे फिकर नहीं है और तुम एक लँगोटी के बचाने में बेचैन हो गये, याद रक्खो कि जितना तुम को अपनी लँगोटी और कमण्डल का बन्धन है उतना मुझे अपने सकल राज का नहीं है। त्याग मन में होता है तन से नहीं, जब तुम्हारे संग तन, दसों इन्द्री, मन और पंच भूत का कुटुम्ब लगा है तो बाहरी कुटुम्ब के त्याग से क्या होता है। शुकदेव जी यह सुन कर बहुत लज्जित हुए और फिर बन बास का ख्याल छोड़ दिया। (२) गोरखनाथ जी कबीर साहब का नाम सुन कर उनकी परीक्षा के अभिप्राय से काशी में आये और आकाश में त्रिशूल पर आसन मार कर बैठे और कबीर साहब को आवाज दी कि यहीं आवो तो वार्तालाप करें। कबीर साहब ने जवाब दिया कि आप बड़े सिद्ध हैं मैं तो महा अधम हूँ क्योंकर आप तक पहुँच सकता हूँ। फिर कबीर साहब ने सत्यलोक में जो पिण्ड और ब्रह्मांड के परे है आसन लगाकर गोरखनाथ को दया से दर्शन दिये। गोरखनाथ चकित हो गये और कबीर साहब के पूरे सतगुरु होने के कायल होकर चरनों पर गिरे यह कबीर गोरख की गोष्टी में प्रसिद्ध कथा है।

(३) राजा गन्धर्पसेन को उरबसी अप्सरा का गान सुनकर मोहित होने से गदहे का चोला धारण करना पड़ा। (४) खोड़ = बड़ा अपराध—एक समय दुर्बासा ऋषि

इजै बिजै थे पौरिया बिसुन पौर दरबान।
बिन बिचार राकस भये बड़ कलंक है मान[1] ॥१६॥
रावन सिव का तप किया दीन्हे सीस चढ़ाय।
दस मस्तक बीसो भुजा जो दीन्हे सो पाय[2] ॥१७॥

घूमते घूमते द्वारिका में पहुँचे जहाँ छप्पन करोड़ यादवों के लड़के खेल रहे थे। लड़कों ने कलोल में श्रीकृष्ण के पुत्र परम सुन्दर शाम्ब को स्त्री का रूप बना कर उसके पेट पर एक तवा बाँध दिया जिसमें गर्भवती मालूम हो, फिर ऋषि के सन्मुख ला कर कहा कि यह स्त्री गर्भवती है लज्जा से बोलती नहीं पर जानना चाहती है कि इस गर्भ से पुत्र होगा या कन्या। दुर्वासा ध्यान से असल बात समझ गये और क्रोध में आकर शाप दिया कि इस गर्भ से लोहे का मूसर उत्पन्न होगा जो सारे यादवों के बंश का नाश करेगा। यह सुन कर लड़के घबरा गये और जो शाम्ब के पेट का कपड़ा खोला तो तवे के बदले उसमें से लोहे का मूसर गिर पड़ा। जब यह समाचार श्रीकृष्ण को मिला उस समय यह यादवों की सभा के बीच में बैठे हुए थे। यादवों ने सलाह करके मूसर को लोहार से रेतवा कर समुद्र में डलवा दिया और एक छोटा सा टुकड़ा जो नहीं रेता गया उसको भी समुद्र में डलवा दिया। कितने दिन पीछे समुद्र की लहरों से वह रेत किनारे लगकर जम आई और पटेरा (सरपत) रूप हो गई और इसी को ले ले कर प्रभास क्षेत्र से लौटती बेरा यादव लोग नशे की हालत में आपस में लड़ कट मरे। लोहे के बचे हुए टुकड़े को एक मछली लील गई थी जब वह जाल में फँसी तो वह लोहा एक व्याध के हाथ लगा और उसने उस टुकड़े की अपने तीर की गाँसी बनाई। यादवों के संहार के बाद पीपल के पेड़ के नीचे पैर पर पैर रक्खे श्रीकृष्णचन्द्र बैठे थे, दूर से उनके चरण की चमक को मृगा के कान समझ कर बहेलिया ने तीर मारा जिससे उनका शरीर छूट गया।

(१) बैकुंठ में भगवान के पार्षद जय, बिजय द्वारपाल पहरा दे रहे थे, कि ब्रह्मा के मानसिक पुत्र सनक, सनन्दन, सनत्कुमार चारो ऋषि जिन की सदा पाँच बरस की अवस्था रहती है भगवान के दर्शन को आये। दोनों द्वारपालों ने उनको लड़का समझकर बेत से रोक दिया। ऋषियों को इस अपमान पर क्रोध आया और शाप दिया कि तुम दोनों पृथ्वी पर जा कर राक्षस योनि को प्राप्त हो। इसी बीच में बिष्णु भगवान मुसकाते हुए वहाँ आ पहुँचे। ऋषि लोग उनको देख कर अपने शाप पर लज्जित हुए और कहा कि तीन जन्म में तुम दोनों का उद्धार हो जायगा। भगवान बोले कि यह हमारी इच्छा से हुआ और ऋषियों को आदर पूर्वक महल में ले गये। फिर यही दोनों द्वारपाल पहिले जन्म में हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष, दूसरे जन्म में रावण और कुम्भकर्ण और तीसरे जन्म में शिशुपाल और दन्तवक्र हुए, तिस के बाद बैकुंठ को गये।

(२) रावण ने शिव जी की भारी तपस्या की और कितनी ही बार अपने मस्तकों को काट काट कर शिव जी के प्रसन्न करने को अग्नि कुंड में होम कर दिया इसी से

लंक राज रावन किया खोया बिना बिचार।
　　पलक बीच परलय भये लंका के सरदार[१] ॥१८॥
सीता सतवन्ती सही रामचन्द्र की नार।
　　रावन दानै छल लई बिनही ज्ञान बिचार[१] ॥१९॥
पारासर सेवन करै कुटिल कला घट माहिं।
　　कन्या सूँ संगम किया ज्ञान बिचारा नाहिं[२] ॥२०॥
उद्दालक के नासकेत गये फूल बनराय।
　　पिता बचन जब मेटिया तौ जम नगरी जाय[३] ॥२१॥

रामचन्द्र जी जब उसके सिर काटते थे तो तुर्त दूसरे सिर उनकी जगह निकल आते थे। इससे यह सिद्ध हुआ कि जो दे सो पावे।

(१) जब श्रीरामचन्द्र मारीच राक्षस को जो मृग का रूप धारण करके प्रगट हुआ था मारने गये और लक्ष्मण जी भी जिनको रामचन्द्र सीता जी की रक्षा के लिए छोड़ गये थे सीता जी के कटु बचन से रामचन्द्र जी की खोज में चले तो उन्होंने सीता के चारो ओर एक लकीर खींच दी कि उसके बाहर कदापि पग न धरैं। सीता जी को अकेली पाकर रावण यती का भेष धर कर भीख माँगने आया। सीता जी ने देखा और भीतर से भीख देना चाहा तब यती रूपी रावण बोला कि मेरे गुरु ने बँधी भिक्षा लेने का निषेध किया है। सीता जी धर्म लोप से डर कर भिक्षा देने लकीर के बाहर निकलीं कि रावण ने तुर्त सीता सती को दान करते हर लिया। इसी अत्याचार के प्रभाव से रावण ने लंका को जलवाया और आप मिट्टी में मिल गया।

(२) पाराशर ऋषि ने मछोदरी से नाव में भोग किया (यह कन्या उन्हीं के बीज से मछली के पेट से पैदा हुई थी जो बीज गंगा में नहाते वक्त ऋषि जी का किसी समय में गिर गया था और एक मछली ने खा लिया था) उस मछोदरी ने कहा अभी दिन है लोग देखते हैं तब ऋषि ने अपनी सिद्ध शक्ति से अँधेरा कर दिया आकाश में बादल आ गये। फिर स्त्री ने कहा मेरे बदन से मच्छी की बदबू आती है ऋषि ने बदबू को बदल के खुशबू कर दिया। नतीजा इस संगत का यह हुआ कि व्यास जी उस मछोदरी से पैदा हुए।

(३) उद्दालक ऋषि के पुत्र नासकेत जी के पिता ने आज्ञा दी कि पूजा के लिये पुष्प जल्द लाओ। नासकेत फूल लेने बन को गये पर देर लग गई और ऋषि जी की पूजा का समय निकल गया। जब नासकेत जी लौट कर आये तो पिता क्रोध से बोले कि क्या तुम यमपुरी होकर आये जो इतनी देर लगाई। यह सुन कर नासकेत पिता को पुष्प इत्यादिक देकर प्रणाम कर यमपुरी को चले गये और अपने तपोबल से उसी देह से लौट आये। उद्दालक ऋषि ने यह देख कर पुत्र को गले से लगा लिया कि उसकी योग सिद्धि पूर्व जन्म की है और अपने बेबिचारे बचन पर बहुत पछतावा किया।

नारद मुनि निरगुन कला ततबेता[1] तिहुँ लोक।
नर सेतीं नारी भया यह हीना बड़ धोख[2] ॥२२॥

---

(१) तत्व ज्ञानी।

(२) एक समय नारद मुनि ने बैकुंठ में जाकर भगवान से कहा कि महाराज अब मैंने आपकी माया को जीत लिया। भगवान मुस्करा कर बोले कि आप बड़े ज्ञानी हैं आप के लिये माया को जीत लेना क्या बड़ी बात है, इस पर नारद मुनि फूले न समाये। थोड़ी देर पीछे भगवान ने मुनि जी से कहा कि आज कान्यकुब्ज देश के राजा से मिलने को हम जाते हैं आप का जी चाहे तो हमारे साथ गरुड़ पर आप भी सवार हो लीजिये। यह सुन कर नारद भी भगवान के साथ चले। कान्यकुब्ज देश की सीमा पर बन में एक सुन्दर ताल देख पड़ा नारद जी की इच्छा से विष्णु भगवान वहाँ उतरे और कहा कि आप का चित्त चाहे तो झटपट स्नान पूजा कर लीजिये। नारद जी स्नान के लिये नदी में धसे जब डुबकी लगा कर उछले तो स्त्री हो गये और इस बीच में विष्णु गरुड़ पर चढ़ कर बैकुंठ को लौट आये। नारद जी स्त्री वेष में बिचारने लगे कि मैं सुन्दर युवा स्त्री हूँ मेरे योग्य पति भी मिलना चाहिये। इतने में वहाँ का राजा शिकार खेलता हुआ पहुँचा और स्त्री पर मोहित होकर पूछा कि तुम किस की कन्या हो और इस बन में क्या करने आईं। स्त्री बोली कि मैं कुछ नहीं कह सकती आप को जो उचित जान पड़े सो कीजिये। राजा उस सुन्दरी को घोड़े पर बैठा कर अपने राजभवन में लाये और अपनी पटरानी बनाया और दोनों बड़े प्रेम से रहने लगे। समय पाकर रानी को १२ पुत्र और १२ कन्या उत्पन्न हुईं फिर उनके बिवाह होकर १२ पतोहें और बारह दामाद घर आये और पोते और नातियों की नई टकसार खुली। अब तो रानी को बड़ा अहंकार हुआ कि मेरे बराबर संसार में कौन भाग्यवान हो सकता है। इस तरह रानी-रूप नारद के साठ बरस बीते। उस समय एक दूसरे देश के राजा ने उस पर चढ़ाई की और युद्ध में रानी के बारहों पुत्र मारे गये। रात को जब लड़ाई बन्द हुई रानी अपने पति को लेकर लड़कों के छिन्न भिन्न मृतक शरीर उठा लाई और अति बिलाप करने लगी कि मुझ सी दुखिया अभागी संसार में दूसरी न होगी। गर्ब-प्रहारी भगवान को यह दीन दशा नारद की देख कर दया आई और ब्राह्मण का रूप धर कर प्रगट हुए और रानी को समझाया कि इस रोने पीटने से क्या मिलेगा तुम्हारे पुत्र प्यासे मारे गये हैं इससे जल्द स्नान कर के उनको तिलांजलि दो जिसमें उनकी प्यास बुझै मंत्र हम पढ़ देंगे। ऐसा सुन कर रानी झटपट उसी ताल में स्नान को धँसी जब गोता लगा कर पानी के ऊपर सिर निकाला तो जठा लटकाये मूछ बढ़ाये नारद का रूप हो गई और भौंचक्की होकर इधर उधर देखने लगी। भगवान भी अपना रूप धारण करके नारद से बोले कि मुनिजी देखते क्या हो जल्द अपनी लँगोटी पहिन कर तुम्बा उठाओ और मेरे साथ चलो राजा से मिलने को देर होती है। नारदजी दौड़ कर भगवान के चरणों पर गिरे और कहा कि धन्य आपकी माया वह आप ही के आधीन है और मैं आप की शरण हूँ। भगवान मुस्करा कर बोले कि आप यह कैसी बहकी बातें करते हो अभी तो आपने छिन भर हुआ गोता लगाया था। नारद बोले कि अब

पुत्र बहत्तर बाक छल नर से नारी कीन्ह ।
मान डिंभ छूटा नहीं ततबेता मतहीन ॥२३॥
भृगू भरम में बह गये कीन्हा नहीं बिचार ।
त्रिभुवन नाथ बिसंभरै लात घात करतार[१] ॥२४॥
बिन बिचार तन क्या धरे कुटिलाई बस प्रान ।
नाहीं सुरत सरीर की ता घट कैसा ज्ञान ॥२५॥
गोपी लुट गइँ कृस्न की अर्जुन सरिखे संग ।
लख संधानी बान कर जीते भारी जंग[२] ॥२६॥
काबा गोपी लूटिया अर्जुन चले न बान ।
होनी होय सो होत है समझ बूझ यह ज्ञान[२] ॥२७॥

रहने दीजिये और मुझे राजा के पास जिस की रानी बन कर साठ बरस साथ रही फिर न ले चलिये ।

(१) एक समय देवताओं में यह विचार होने लगा कि ब्रह्मा बिश्नु और महादेव में कौन बड़ा है इसे परीक्षा लेने को सब देवता और ऋषियों ने भृगुजी को भेजा । भृगुजी पहले अपने पिता ब्रह्मा के सामने आये और प्रणाम नहीं किया जिस पर ब्रह्मा को ऐसा क्रोध आया कि शाप देना चाहा पर मूर्ख लड़का समझ कर रुक गये । फिर भृगु जी कैलाश में महादेव जी के पास गये शिव उनको देख कर बड़े आदर से भेटने को चले कि भृगु ने पीछे हट कर कहा कि खबरदार हम को छुओ नहीं क्योंकि अशुद्ध चिता-भस्म और मुंडमाल धारण किये हो । यह सुन कर महादेव जी क्रोध में भर त्रिशूल लेकर भृगुजी को मारने दौड़े भृगुजी भागते भागते बैकुण्ठ में जा घुसे तब बचे । बैकुण्ठ में पहुँचने पर भृगु ने बिश्नु को सुख सय्या पर सोता पाया जिस पर उन्हों ने बड़े जोर से बिश्नु की छाती में लात मारी । बिश्नु महाराज चौंक पड़े और भृगु के चरण पकड़ कर सुहराने लगे और बोले कि कहाँ बज्र से अधिक कठोर मेरा हृदय और कहाँ पुष्प से भी कोमल आपका चरणारबिन्द इससे मेरे जगाने में आपको बड़ा कष्ट हुआ क्षमा कीजिये । भृगुजी ने शरमा कर सिर नीचा कर लिया । फिर देवताओं की सभा में जाकर खबर दी कि तीनों देवताओं में बिश्नु सब से बड़े हैं क्योंकि वही शान्त हैं ।

(२) जब कृष्ण भगवान का इस संसार से कूँच करने का समय आया तो अर्जुन से कहा कि आज के सातवें दिन द्वारिका को समुद्र डुबा लेगा इस लिये तुम हमारी स्त्रियों को माल असबाब समेत हस्तिनापुर को ले जाओ तुम उनकी रक्षा करने की सामर्थ्य रखते हो । यह सुन कर अर्जुन सब स्त्रियों को लेकर रवाना हुए रास्ते में काबा अर्थात् भीलों ने लूटने को घेरा । अर्जुन ने डाकुओं के मारने को अपना गांडीव धनुष चलाना चाहा परन्तु चलाने की कौन कहे उसको चढ़ा भी न सके, वह सामर्थ्य और बल श्रीकृष्णचन्द्र के साथ ही गुप्त हो गये और जिस अर्जुन ने अठारह अक्षौहिणी दल

॥ जरना[1] का अंग ॥

ऐसी जरना चाहिये ज्यों पृथ्वी तत थीर ।
खोदे से कसकै नहीं ऐसा बज्र सरीर ॥ १ ॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यों अप[2] तेज अनूप ।
न्हावै धोवै थूक दे तामस नहीं सरूप ॥ २ ॥
ऐसी जरना चाहिये पवन तत्त परमान ।
कुटिल बचन कोई कहै मानै नहीं अमान ॥ ३ ॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यों अगिन तत्त में होय ।
जो कुछ परै सो सब जरै बुरा न बाचै कोय ॥ ४ ॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यों गगन तत्त गलतान ।
बुरा भला बाचै नहीं ता में सकल समान ॥ ५ ॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यों तरवर[3] के तीर ।
काटै चीरै काठ को तौ भी मन है धीर ॥ ६ ॥
बृच्छ नदी अरु साध जन तीनों एक सुभाव ।
जल न्हावे फल बृच्छ दे साध लखावे नाँव ॥ ७ ॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यों घनहर[4] जल मेह ।
सबही ऊपर बरसता ना दिल दोष सनेह ॥ ८ ॥
दीठी अनदीठी करैं जिन की लूँ मैं दाद[5] ।
सँग से कभी न बिच्छरूँ खेलूँ आदि अनाद ॥ ९ ॥
दीठी अनदीठी करैं जिन की लूँ मैं दाद ।
सँग से कभी न बिच्छरूँ परम सनेही साध ॥१०॥
दीठी अनदीठी करैं जिनकी लूँ मैं दाद ।
सँग से कभी न बिच्छरूँ हर दम नाम अराध ॥११॥

महाभारत में उसी धनुष बाण से सबको जीता था उनके देखते देखते काबों ने सब स्त्रियों को लूट लिया ।

(१) सहना, आपा घालना, लगन। (२) जल। (३) पेड़। (४) गहरा बादल। (५) न्याव, बखशिश।

दीठी अनदीठी करैं सब अपने सिर लेहिं।
सँग से कभी न बिच्छरूँ जो मुझ सरबस देहि ॥१२॥
दीठी अनदीठी करैं जिन के हूँ मैं संग।
भक्ति पुरातम देत हैं चढ़त नवेला रंग ॥१३॥
दीठी अनदीठी करैं जिनके हूँ मैं साथ।
भक्ति पुरातम देत हैं पीड़ा लगै न गात ॥१४॥
दीठी अनदीठी करैं जिनके हूँ मैं तीर।
बजर टूटते राखहीं पीड़ा नहीं सरीर ॥१५॥
दीठी अनदीठी करैं सो साधू परबीन।
नाम रते निरबंध हैं छाँड़े दोनों दीन ॥१६॥
दीठी अनदीठी करैं सो साधू सिर-पोस।
जो बीतै सो सिर धरैं देहि न काहू दोस ॥१७॥
दीठी कूँ कहि देत हैं जिनके दिल नहिं थीर।
ता के सँग हम ना रहैं सो कुट्टन बेपीर ॥१८॥
जरना जोगी जगतगुरु जरना है जगदीस।
जरना आप अलेख है राखो अपने सीस ॥१९॥
जरना जोगी जगतगुरु जरना अलह अलेख।
जरना कभी न डिगमिगै जरना निःचल देख ॥२०॥
जरना जोगी जगतगुरु जरना आप करीम।
जरना हमरे उर बसै जम नहिं चंपै सीम[1] ॥२१॥
जरना जोगी जगतगुरु जरना अलख अलाह।
जरना कूँ कुरबान जाँ जरना बेपरवाह ॥२२॥
जरना जोगी जगतगुरु जरना रमता राम।
जरना कूँ कुरबान जाँ जरना है निःकाम ॥२३॥

(१ जम अपनी सीमा याने हद पर नहीं रोक सकता।

जरना पूरन ब्रह्म है जरना करता आप।
जो कछु लखै सो सब जरै जरना है गरगाप ॥२४॥
जरै सो अछै निरंजन कहिये जरै सकल में देव।
जरना जोगी गुरमुखी जरना अलख अभेव ॥२५॥
जरना जोगी जुग जुग जिवै जरना प्रलय न जाय।
जरना जोगी जगतगुरु पद में रहै समाय ॥२६॥
जरना जोगी जुगजुग जिवै जरना प्रलय न होय।
जरना जोगी जगतगुरु सब्द समाना सोय ॥२७॥
कसनी कसै कपूर ज्यों करनी करै करार।
जरना जोगी जगतगुरु आप तरै जग तार ॥२८॥
सिंघ साध का एक मत जीवत ही कूँ खायँ।
यह जग मुरद-फरोस[1] है पर द्वारे नहिं जायँ ॥२९॥
सिंघ साध का एक मत भच्छन करैं बिचार।
यह जग मुरद फरोस है जाहिं न आन दुआर ॥३०॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यों अललपच्छ के अंग।
अंडा छुटै अकास तें बहुर मिलै सतसंग[2] ॥३१॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यों अललपच्छ के होय।
सतसंगत सेवत रहा बिछुर गया दिन दोय[2] ॥३२॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यों चन्दन के अंग।
मुख से कछू न कहत है तन कूँ खात भुवंग ॥३३॥

---

(१) मुर्दा-परस्त याने मुर्दा पूजने वाले से मतलब है। (२) एक चिड़िया जिसकी निस्बत कहा जाता है कि वह इतने ऊँचे आकाश में रहती है कि वहाँ जब अंडा देती है तो रास्ते में वायुमंडल की रगड़ से अंडा सेय जाता है और बच्चा पैदा होकर पृथ्वी पर पहुँचने के पहिले उसके पंख जम आते हैं और वह रास्ते ही से अपने माता पिता की संगत में लौट जाता है।

ऐसी जरना चाहिये ज्यों पारस के होय।
लोहे से सोना करै कह न सुनावै कोय ॥३४॥
ऐसी जरना चाहिये ज्यों पृथ्वी-पति इन्द्र।
मोती मुक्ता होत है बूँदें स्वाँत समुन्द्र ॥३५॥
जरना बिन जोगी अफल बस्तु न लागै हाथ।
बिन जरना क्या पाइये भाट बकै पर-बात[१] ॥३६॥
कथनी से क्या होत है करनी कारन मूल।
करनी कर जरना जरै लगै पान फल फूल ॥३७॥
कथनी में कुछ है नहीं करनी में रँग लाग।
करनी कर जरना जरै सो जोगी बड़ भाग ॥३८॥
अनंत कोटि धुन होत है अनंत कोटि भनकार।
एती सुन जरना जरै सो जोगी करतार ॥३९॥
अनंत कोटि धुन होत है अनंत कोटि छबि रंग।
एती लख जरना जरै सो साधू सब्द बिहंग ॥४०॥
अनंत कोटि बाजे बजैं अनंत कोटि रबि तेज।
एती लख जरना जरै सो साधू परसै सेज ॥४१॥
साहब से परचै भये दुनिया बीच अधीन।
एती लख जरना जरै सो साधू परबीन ॥४२॥
साहब से परचै भये उस दरबार अबाद।
इहाँ न परगट होत हैं परम सनेही साध ॥४३॥
काँछ[२] बाँछ[२] परबन्ध है सतबादी नर सूर।
साहब के दरबार में जिन्ह मुख रहता नूर ॥४४॥
काँछ बाँछ को कस रहे सतबादी नर एक।
साँईं के दरबार में रहै जिन्हों की टेक ॥४५॥

(१) दूसरों के गुन। (२) इच्छा।

जरना साहब संत है जरना सतगुरु साँच।
जरना पाँचो तत्त है ऐसी जरना काँच ॥४६॥
जरै सो अबिचल रहैगा जरै सो परलय नाहिं।
जरना जोगी ना मरै आवागमन ना जाहि ॥४७॥
जरै सो निरगुन नूर है जरै सो निरगुन तंत।
जरै सो साहब आप है जरै सो सत भगवंत ॥४८॥
ज्ञान जोग कूँ सब जरै जरै नाम निरधार।
आठ सिद्ध नौ निद्ध कूँ जरना अधम उधार ॥४९॥
भक्ति मुक्ति कूँ सब जरै जरै जोग बैराग।
आपा ठहरावै नहीं यह मत पूरन भाग ॥५०॥
दया धर्म को सब जरै जरै सील सन्तोष।
मनी कुफर ब्यापै नहीं मिल पद रहै अजोख ॥५१॥
मुख से कहै सो सब जरै सरवन सुनै समोय।
मन की धारन सब जरै सो जन निःचल होय ॥५२॥
चार मुक्ति जरना जरै बिहिस्त बैकुंठ बिलास।
काया माया सब जरै सो साधू निज दास ॥५३॥
पुर पट्टन नगरी बसै भेद न काहू देत।
कीड़ी कुंजर[1] पोषता अपना नाम न लेत ॥५४॥
पुर पट्टन नगरी बसै निरधारं आधार।
लख चौरासी पोषता ऐसी जरना सार ॥५५॥
चौरासी भाँड़े गढ़ै खेलै खेल अनंत।
जाकी जरना देख कर जे कोइ साधै संत ॥५६॥
चौरासी भाँड़े गढ़ै खेलै खेल अपार।
खान पान सब देत है ऐसा समरथ सार ॥५७॥

---

(१) चींटी से हाथी तक।

कहि न सुनावे और कूँ जो कुछ करै सो लीन[१]।
जाकी जरना देख कर संत भये बेदीन ॥५८॥
परचे कोट अनंत हैं अजमत[२] कोट अनंत।
कीमत कोट अनंत है जरना जोगीकंत ॥५९॥
कच्छ मच्छ बारह[३] कुरम[४] सेस धौल[५] फन धार।
ब्रह्मंड कोट अनंत है रोम रोम की लार ॥६०॥
एती लख जरना जरै कारन कवन अलेख।
संत सूर जरना जरै कोइ हमरी जरना देख ॥६१॥
धौल गगन गिरनार[६] है बसुधा[७] ब्रह्म बिलास।
हमरी जरना देख कर बिस्नु लहै कोइ दास ॥६२॥
निरगुन सरगुन सब कला बहुरंगी बरियाम[८]।
पिंड ब्रह्मंड पूरन पुरुष अवगत रमता राम ॥६३॥
अनँत कला कलधूत[९] हैं अनँत कला परवान।
ऐसी जरना तू जरै धन कादिर[१०] कुरबान ॥६४॥
सब जानत है जगत गुरु कहि न सुनावे कोय।
ऐसी जरना तू जरै नहीं किसी से होय ॥६५॥
जुगन जुगन के पाप सब जुगन जुगन के मैल।
जानत है जगदीस तू जोर किये बद-फेल ॥६६॥
करमों कारन देख कर मौन रहे मुसताक।
तेरी जरना देख कर संतों हासिल हाथ ॥६७॥
जरना बड़ जाजुल्ल[११] है जरना नाद समोय।
ऐसी जरना सो जरै जा तन सीस न होय ॥६८॥

---

(१) गुप्त। (२) करामात। (३) बाराह। (४) कुरम और कच्छ दोनों एक ही हैं जियादा "दिग्गज" का शब्द लगता है क्योंकि आठों दिशा के गज और शेष नाग पृथ्वी को सम्हाले हुए हैं। (५) सपेद। (६) नाम पहाड़ का जिस पर बहुत से सिद्ध रहते हैं। (७) पृथ्वी। (८) वरीयान=सब से श्रेष्ठ। (९) निर्दोष। (१०) शक्तिमान। (११) खूब जलता हुआ।

जरना जरै सो जालिम जोगी जरना जालिम जिंद।
जरना जरै सो आपै आपं काल करम नहि फंद ॥६९॥
परदा कभी न पाड़िये[1] जे सिर जलै अँगीठ।
चाबुक तोड़ौ चौपटे गुनहगार की पीठ॥७०॥
परदा कभी न पाड़िये जे सिर बलै अँगार।
चाबुक तोड़ौ चौपटे गुनहगार सिर भार॥७१॥
परदा कभी न पाड़िये अपने ही सिर लेह।
चाबुक तोड़ौ चौपटे गुनहगार मुख खेह॥७२॥
परदा कभी न पाड़िये जे सिर आई होय।
चाबुक तोड़ौ चौपटे सार झरंता लोह॥७३॥
परदा कभी न पाड़िये जे जाता है सीस।
चाबुक तोड़ौ चौपटे हुकम सरे जगदीस॥७४॥
परदा कभी न पाड़िये जो जाती है जान।
चाबुक तोड़ौ चौपटे नीर छीर कूँ छान॥७५॥
एती जरना जब जरै सतगुरु से है भेंट।
बका बकाई करत हैं जिन्ह हद्दी गुरु फेंट[2]॥७६॥
जिन के अंतर लगन है जोर कहेंगे राम।
बका बकाई करत हैं आन झखैं बेकाम॥७७॥
पृथ्वी का गुन लीजिये औगुन उर नाहें धार।
जिनके दिल में एक है दूजे को दें डार॥७८॥
सब्द अनाहद जो रते दूजा नहीं उपाव।
सुन्न मँडल में रम रहा ना जहँ करम लगाव॥७९॥
अनहद मंदल[3] बाजहीं बारह मास अचंभ।
कबीर दास गरीब कूँ भक्ति दई आरंभ॥८०॥

(१) उघारिये। (२) जो संसारी गुरू की लपेट में रहेंगे वह बाद बिबाद में जन्म गँवावेंगे। (३) तबला, मृदंग।

॥ निश्चय का अंग ॥

अपने दिल साधू नहीं वा कूँ दरसा साध।
भैंस सींग से जानिये गत कुछ अगम अगाध[१] ॥ १ ॥

उसके मन की फुरत है अपने मनकी नाहिं।
गनिका चढ़ी बिमान में अजामील की बाँहि[२] ॥ २ ॥

तीन धात हैं पिता की चार धात हैं माय[३]।
सिष स्वामी इकसा मिलै हंसा पहुँचै ठाँय ॥ ३ ॥

निःचय ऊपर नामदेव पाहन दूध पिलाये।
भैंस सींग में साहब आये नाम रतन धन पाये[४] ॥ ४ ॥

निःचय ही से देवल फेरा पूजो क्यों न पहारा।
नामदेव दरवाजे बैठा पंडित के पिछवारा ॥ ५ ॥

---

(१) देखो नोट पृष्ठ २०। (२) अजामिल के कुकर्मी होने और अन्त में नारायण नाम के प्रताप से तर जाने की कथा नोट पृष्ठ २१ में लिखी है परन्तु उसकी बदौलत उसकी बेश्या का भी उद्धार होने का प्रमान कहीं नहीं पाया जाता। (३) बालक में पिता और माता दोनों के अंश से तीन तीन बस्तु की उत्पत्ति लिखी है—पिता के अंश से हड्डी रग और मज्जा (या गूदा) और माँ से बाल लोहू और मांस, चौथी वस्तु माँ के अंश से कौन सी बनी है इसका प्रमान हम को कहीं नहीं मिला। महात्मा चरनदास जी ने पिता के अंश में रग की जगह बीज लिखा है और माता के अंश में बाल की जगह त्वचा।

(४) नामदेवजी की प्रचंड भक्ति जगत-प्रसिद्ध है। यह बामदेव जी की विधवा कन्या के उदर से भगवंत की दया दृष्टि से हजरत ईसा की भाँत जनमे थे। इन के नाना भी बड़े भक्त और माता पूरी सती और प्रेमी थीं। नामदेवजी के विषय में बहुत से चमत्कार लिखे हैं। लड़कपन ही से इन की परमार्थ में रुचि थी और उसी अवस्था में एक बार उनके नाना ठाकुर जी की सेवा उनके सुपुर्द कर के बाहर गये। जब नामदेवजी ने ठाकुर जी के सामने दूध धरा और उन्होंने न पिया तो इन्होंने समझा कि हमसे अप्रसन्न हैं और तीन दिन तक मन्दिर में बिना अन्न पानी के दुखी पड़े रहे अंत को ठाकुर जी ने कटोरा उनके हाथ से लेकर दूध पी लिया और थोड़ा सा उनको प्रसाद दिया।

किसी मेले के समय में नामदेव जी अपना जूता कमर में बाँध कर पंडरपुर के ठाकुरद्वारे में दर्शन को गये संयोग से जूता किसी ने देख लिया और इन को मार कर मन्दिर से निकाल दिया। बेचारे मंदिर के पीछे जाकर दर्शन न मिलने से व्याकुल होकर बैठ गये और वहाँ बिनती करने लगे उसी दम मंदिर जड़ से फिर कर द्वारा उनकी ओर हो गया।

निःचय ही से गऊ जियाई निःचय बच्छा चूगै।
देस दिसंतर भक्ति गई है फिर को लावे भूगै[1] ॥ ६ ॥
गोपीचन्द भरथरी जोगी निःचय राज बिराजी[2]।
निःचय होय तो नेड़े निपजै क्या पंडित क्या काजी ॥७॥
निःचय सेऊ सीस चढ़ाया चोरी संत सिधारे।
बनियाँ कूँ जहँ पकड़ लिया है करदे[3] सीस उतारे[4] ॥८॥
पिता समन और माता नेकी जिनके निःचय भारी।
जहाँ कबीर कमाल फरीदा भोजन की भइ त्यारी[4] ॥९॥
सेऊ के धड़ सीस चढ़ाया मीन मेख नहिं कोई।
हाजिर नाजिर मिले बिसंभर ऐसा निःचय होई ॥१०॥
तपिया के तौ जकतक[5] कीना लोदिया के घर आये।
ताड़ी घाल लिये परमेसर निःचय हाथ बँधाये ॥११॥
निःचय ऊपर बालद आई और केसो बन्जारा।
नौलख बोरी लदा लदीना कासी नगर मँझारा[6] ॥१२॥
निःचय पंडा पाव[7] बुझाया जगन्नाथ के माहीं।
अटका फूट पड़ा पाँवन पर अजहूँ बात न भाई ॥१३॥

---

(१) एक बार बादशाह ने उनको पकड़ बुलाया और कहा कि तुमने सिद्धाई का ढचर फैला रक्खा है हमारी गाय मर गई है उसको जिला दो नहीं तो कतल कर डाले जाओगे। नामदेवजी ने बहुत उजर किया कि मैं तो एक नीच छीपी हूँ मुझ में कोई गुन नहीं है—पर बादशाह ने न माना आखिर को महात्मा जी ने भगवत चरन में बिनती की और गाय जी उठी।

एक बार घर में आग लगी तो नामदेवजी और सामान जो घर के बाहर रक्खा हुआ था उसको भी आग में मालिक की मौज से उसका लगना समझ कर डालने लगे। भगवान ने उनका छप्पर का घर दूसरा बिचित्र रीति से आप रच दिया।

(२) राजा भर्थरी बड़े त्यागी और जोगी हुए और राजा गोपीचन्द उनके भांजे उनके चेले बने। (३) छुरी से। (४) देखो नोट पृष्ठ १३। (५) झगड़ा। (६) देखो नोट पृष्ठ २९। (७) पावक=आग [जगन्नाथ जी के मन्दिर में आग लग जाने से वहाँ का रसोइया जलने लगा कबीर साहब ने काशी में धरती पर पानी गिरा कर आग बुझा दी]।

कासी तज कर मगहर पहुँचे ऐसा निःचा कहिये।
सतगुरु साख समझ ले भाई थीर पकर थिर रहिये[१] ॥१४॥
कासी मरे सो जाय मुक्ति कूँ मगहर गदहा होई।
पुरुष कबीर चले मगहर कूँ ऐसा निःचा जोई[१] ॥१५॥
कासी के तो पंडित कूकैं मगहर मरो न भाई।
वा तौ पृथ्वी सूची नाहीं त्रिसंक पड़ो बिल्लाई[१] ॥१६॥
कासी तजं मगहर कूँ चाले किया कबीर पयाना।
चादर फूल बिछेही छाँड़े सब्दै सब्द समाना[२] ॥१७॥
मगहर में तो कबर बनाई बिजलीखान पठाना।
कासी-चौरा उड़ गया भौंरा दूनों दीन दिवाना ॥१८॥
कनक जनेऊ कंध दिखाया है रैदास रँगीला।
धरे सातसै रूप तास कूँ ऐसी अद्भुत लीला[३] ॥१९॥
पीपा तो दरिया में कूदे ऐसा निःचा कहिये।
मिले बिसम्भर नाथ तासु कूँ झूठी भक्ति न गहिये[४] ॥२०॥
सेना के घर साहब आये करी हजामत सेवा।
संतों की तो सरधा राखी पारब्रह्म निज देवा[५] ॥२१॥

---

(१) कबीर साहब काशी से जाकर मगहर में रहे थे और वहीं शरीर त्याग किया। मगहर को मग्गह देस बोलते हैं और लोगों का विश्वास है कि वहाँ मरने से गधे की जोनि मिलती है क्योंकि गुरुद्रोही राजा त्रिशंकु का शरीर जो अधर में लटक रहा है उसकी छाया उस भूमि पर पड़ने से वह अपवित्र हो गई है।

(२) कबीर साहब के अंतकाल के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि हिन्दुओं ने इनके मृतक शरीर को जलाना और मुसलमानों ने गाड़ना चाहा इस पर बहुत झगड़ा हुआ अंत को चादर उठा कर देखा तो मृतक स्थान पर शरीर नदारद था फूल और खाट पड़ी थी (कितने खाट की जगह पान कहते हैं) तब हिन्दुओं ने फूल लेकर मगहर में उनकी समाधि बनाई और मुसलमानों ने जिनमें कबीर साहब का जेठा चेला बिजलीखाँ पठान प्रधान था कबर बनाई। काशी में उसी समय एक भौंरे के कहने से कबीर साहब के गुरुमुख शिष्य धर्म्मदासजी ने कबीर-चौरा बनाया। (३) देखो नोट पृष्ठ २७। (४) देखो नोट पृष्ठ ७८। (५) देखो नोट पृष्ठ २७।

नरसी की तो हुंडी झाली कागज सीस चढ़ाया।
धयोती का तो ब्याह भया जब भात भरन कूँ आया[१] ॥२२॥
तिरलोचन के भये बिरतिया ऐसी भक्ति कमाई।
संतों के तो नाल फिरे अरु तीन लोक ठकुराई[२] ॥२३॥
जीवन मूल बिसम्भर[३] साहब आतमदेव बिनानी[४]।
जहँ जहँ भीर परी संतों कूँ छाना दूध अरु पानी ॥२४॥
प्रहलाद भक्त कूँ दई कसौटी चौरासी बरताया।
नरसिह रूप धरे नारायन खंभ फार कर आया[५] ॥२५॥

---

(१) नरसी जी गुजरात देश के बासी थे जिन की प्रचंड भगवत भक्ति प्रसिद्ध है। इनकी महिमा ग्रन्थों में बहुत कुछ बर्नन की है। दो चमत्कार जो इस कड़ी में लिखे हैं एक तो यह है कि जब नरसी जी दान देते देते कंगाल हो गये थे एक समय साधुओं ने आकर इन को घेरा कि द्वारिका की जात्रा के लिये खर्च दो। नरसीजी ने अपनी नादारी हजार कही पर जब साधुओं ने पिंड न छोड़ा तो हुण्डी द्वारिका को भगवान के ऊपर साँवल साह के नाम से लिख दी। वहाँ ईश्वर ने आप साँवल साह का रूप धर कर उनकी हुण्डी का दाम चुका दिया। दूसरे यह कि जब उनकी बड़ी बेटी के लड़का हुआ अर्थात् नरसीजी के दोहता पैदा हुआ तो छठियारे के लिये कुछ न था भगवान ने आप उस रसम को अदा किया।

(२) तिरलोचन देव वैश्य कुल के भक्त थे इन को साधु सेवा में सहायता के लिये एक नौकर की बड़ी खोज थी और मन का आदमी नहीं मिलता था आखिर को भगवान तीन लोक के ठाकुर अर्थात् स्वामी नौकर का भेष धर आप इनकी चाकरी में रहे।

(३) बिश्वंभर।।(४) बिज्ञानी।

(५) प्रहलाद भक्त का पिता हिरण्य-कश्यप बड़ा ईश्वर-द्रोही था और अपने बेटे को राम नाम लेने से रोकता था। इसी अकस से प्रहलाद को सारे दंड चौरासी के दिये, अर्थात् पहाड़ से गिराया, जंजीर से बाँधकर नदी में डलवाया, हाथी से रुँदवाना चाहा, जमीन में गड़वाया, अंग में साँप लिपटवाया, तोप पर रक्खा, सिर पर आरा फेरा, उल्टा टाँग कर तीर चलाये, चिता बना कर जलवाया, (देखो होलिका की कथा नोट पृष्ठ ५४), बिष पिलाया और आखिर को खंभे से बाँध कर खड्ग से सिर काट डालना चाहा तब ईश्वर ने नरसिंह रूप धर कर हिरण्य-कश्यप का पेट नख से फाड़ कर उसका बध किया। इस अवसर के भयानकपन को नीचे लिखे हुए दंडक छंद में इस तरह लिखा है :—

ध्रू का ध्यान अमान अगोचर डिगै न डोलै भाई ।
सप्त पुरी पर तारी लागी कोटि कल्प जुग जाई[1] ॥२६॥
नारद पुंडरीक और व्यासा गोरख जनक बिदेही ।
द्वादस कोट बंध जिन तोरी भक्ता परम सनेही[2] ॥२७॥
सुल्तानी बाजीद फरीदा देत तत्त गलताना ।
जब राजा कूँ नाम दिया जब सब्दै सब्द समाना[2] ॥२८॥
कहा बखानूँ कोटिन निर्नय राजा पारँग कीन्हा ।
अकल अजीत उदित अध्यातम गोरख से परबीना[2] ॥२६॥
बसिष्ट बिश्वामित मद माते मन माया जिन जीते ।
कागभखुंड डंड नहिं जाके अवगत आनंद चीते[2] ॥३०॥
लोमष ऋषि और मारकंड को ध्यान लगा वा पद में ।
अबिनासी से अरस परस है सुरत बसी अनहद में[2] ॥३१॥
मोरद्धुज तामरधुज राजा अम्बरीक अनुरागी ।
हरीचन्द पद हाजिर नाजिर मन से माया त्यागी[2] ॥३२॥
द्रोपद सुता के चीर बढ़ाये पीतंबर पहराना ।
अंत भये कछु वार न पारा दूसासन हैराना[3] ॥३३॥
पंडों के जग अस्वमेध में सुपच बजाया संख ।
द्रोपदी के दिल में राखी काढ़ी मन की बंक[4] ॥३४॥
निःचा ऊपर नाम का कहा ज्ञान कहा ध्यान ।
निःचा खेत निपाइया काँकर बोई जान[5] ॥३५॥
काम लुब्ध पाखंड रचा धरे बिसंभर रूप ।
ऐसा निःचा चाहिये मारे राजा भूप ॥३६॥

गगड़ गड़गड़ान्यो खम्भ फाट्यो चरचराय निकस्यो नरनाहर को रूप अति भयानो है। ककट कटकटावै दाढ़ै दशन लपलपावै जीभ अधर फरफरावै मोच्छ व्योम व्याप्त मानो है। भभरि भरभराने लोग डडरिडर पराने धाम थथरि थरथराने अङ्ग चितै चाहत खानो है। कहत रघुनाथ कोपि गर्जे नरसिंह जबै प्रलय को पयोधि मानो तड़पि तड़तड़ानो है।

(१) देखो नोट पृष्ठ ?७। (२) भक्तजन, ऋषि, मुनि और राजाओं के नाम। (३) देखो नोट पृष्ठ २०। (४) देखो नोट पृष्ठ ५५–५६। (५) देखो नोट पृष्ठ २६।

सील सँतोष बिबेक बुध दया धर्म इक तार।
बिन निःचै पावै नहीं साहब का दीदार ॥३७॥

सत बोलै साँची कहै दिल में परै न बाँक।
मुसकी घोड़ा सेत होय अकल अकीनै झाँक ॥३८॥

निःचै गोकुल गूजरी बिनही बेड़े पार।
पंडित के दिल दुई थी गुरवा रह गये वार[1] ॥३९॥

ज्यों मीरा राठौर को राखी नहीं अधार।
पकर्‍यो लोहा ज्ञान को कोटों कटक सँघार ॥४०॥

मीरा हाथ सितार था पद गावै लौ लाय।
पत्थर की थी पतिमा जा में गई समाय[2] ॥४१॥

---

(१) श्रीकृष्ण का आज्ञा से गोपियाँ दुर्वासा ऋषि के लिये भोजन लेकर जमुना पार गईं थीं जब कि जमुना जी ने फट कर जाने का रास्ता दे दिया।

(२) मीरा बाई मेरते के राजा की बेटी और चित्तौड़ के राना की पतोह थीं। इन की अनुपम भक्ति संसार भर जानता है। देवी की पूजा करने से इनकार करने पर इन को सास ने अपने घर से अलग दूसरे घर में रख दिया जहाँ वह बेरोक टोक भगवत-भक्ति और साध सेवा में रात दिन लगी रहती थीं। यह बात राना को न सुहाई खासकर साधुओं की बेधड़क संगत करना। राना ने मीरा बाई को रोकने के लिये कोई जतन उठा न रक्खा लेकिन जब कुछ बस न चला तो चरनामृत के नाम से घोर बिष का प्याला उसको भेजा। मीरा बाई उसे सिर पर चढ़ा कर पी गइ और कुछ असर न हुआ। कहते हैं कि भगवान इनके साथ साक्षात बैठ कर चौसर खेलते थे। मीराबाई वृन्दाबन गईं और वहाँ जीव गोसाईं से मिलना चाहा। गोसाईं जी ने कहला भेजा कि हम स्त्रियों से नहीं मिलते जिस पर मीराबाई ने जवाब दिया कि मैं तो वृन्दाबन में सिवाय श्रीकृष्ण के सब को सखी रूप जानती थी आज मालूम हुआ कि उनके और भी पट्टीदार हैं। यह सुन कर गुसाईं जी अति लज्जित हुए और मीराबाई के दर्शन को आप नंगे पाँव दौड़े आये। बृन्दाबन से मीराबाई फिर चित्तौड़ लौटीं पर राना की बुद्धि वैसी ही भ्रष्ट पाकर द्वारिका में जा बसीं। चित्तौड़ में मीराबाई के छोड़ते ही ऐसे उपद्रव खड़े हुए कि राना डरा कि मीराबाई को दुख देने के कारन ईश्वर का कोप हुआ और घबरा कर उनको बुलाने के लिये आदमी भेजे। जब वह न आईं तो कई ब्राह्मन भेजे जो मीराबाई के द्वार पर धरना बैठे अंत को मीरा बाई रनछोड़ जी से बिदा होने को उनके मंदिर में गईं और भक्तमाल में लिखा है कि मूर्त्ति के सम्मुख एक प्रेम का पद जिसकी अन्तिम कड़ी यह है—'मीरा के प्रभु गिरिधर नागर मिलि बिछुड़न नहिं कीजै" गाया कि मूर्त्ति में समा कर लुप्त हो गईं और सिवाय इसके कि रनछोड़ जी की मूर्त्ति पर पीताम्बर की जगह मीराबाई की सारी देख पड़ी और कोई चिन्ह उनका बाकी न रहा।

भवन तेग थी काठ की जैसे चमकी बीज।
ओटनहारा को नहीं अवगत अलख अछीज[१] ॥४२॥
भवन गमन गगनै किया घोरे सुधा गुलाम।
ज्यों मिसरी साहब मिले बरछी लोह लगाम ॥४३॥
करनहिं जाँचे आन कर मंगत किया जुहार।
मो कूँ पारस दीजिये दालिद्दर बेडार[२] ॥४४॥
करन तोहि कूँ दसत में सोच परी बड़ भीर।
धरती कूँ खोदन लगा मेटी जन की पीर[२] ॥४५॥
पारस ठहका आन कर लगी तीर की भाल।
परसत ही सोना भया कीन्हा करन निहाल[२] ॥४६॥
ऐसी निःचा चाहिये पारस पूरन हाथ।
जो रंगे सोई रँगे साँईं जेही दात ॥४७॥
गगन मँडल हुन बरखिया तीन बेर तत सार।
सीता लछमन राम की मध मूरत करतार ॥४८॥

---

(१) भवन भक्त, जाति के राजपूत चौहान, राना के एक भारी कामदार थे। एक बेर राना के साथ शिकार में एक हिरनी के पीछे घोड़ा डाला और उसको तलवार से मारा। वह हिरनी गाभिन थी उसका बच्चा भी दो टुकड़े हो गया। भवन जी को बड़ी ग्लानि आई और उस दिन से प्रण किया कि लोहे की तलवार के बदले काठ की तलवार रखना। एक चुगलखोर ने राना से कह दिया, राना ने इनको तलवार दिखलाने को कहा। जब इन्होंने म्यान से काठ की तलवार खींची तो वह फौलाद की हो कर बिजली की नाईं चमकी कि सब की आँखें चौंधिया गईं। भक्त का ओटनहार अर्थात् रत्ता करने वाला भगवन्त आप ही हैं।

(२) कथा है कि राजा करन सवासौ मन सोना हर रोज दान किया करते थे एक दिन भगवान उनकी जाँच करने को मँगता के भेष में आये और राजा से ताजा सोना माँगा [गरीबदास जी ने पारस पत्थर का माँगना लिखा है] राजा का प्रण था कि कभी किसी का सवाल खाली न जाय इससे बड़ी फिकर में पड़ कर जंगल को निकल गये और सोंच में धरती को तीर से कुरेदने लगे। भगवान को उनकी दशा देख कर करुना आई और तीर की गाँसी के तले पारस पत्थर रख दिया जिसके छूते ही गाँसी सोने की हो गई और राजा ने निहाल होकर पारस पत्थर को धरती में से निकाल लिया और ताजा सोना बन गया।

सो मूरत क्यूँ ना पूजहीं पत्थर ढेला डार।
सीता लछमन राम के लीजे चरन जुहार ॥४९॥
ग्यारह रुद्रों पर तपै द्वादस मद्ध मिलाप।
सूछम मूरत सूँरते ब्रह्म सब्द गरगाप ॥५०॥
कोट धुजा[1] किस काम का सूम सकल है चाल।
असी गंज[2] बाँटे नहीं परा तासु पर ज्वाल[3] ॥५१॥
दिल दानी है तासुका सदाबरत मन माहिं।
पृथ्वी पारस हो रही हुन बरषी जिस ठाहिं ॥५२॥
सुअर गऊ कूँ खात है बिसमिल[4] करै हमेस।
दोऊ दीन दोजख गये जम तेहि पकरे केस ॥५३॥
करदी करद[5] चलावहीं जीव जोनि पर जाय।
नैन बैन सूँ मिलि रहा छाती परदे पाय ॥५४॥
यह तो काफिर करम है धरम नहीं यह पाप।
द्रोही नबी रसूल के डूबेंगे गरगाप ॥५५॥
जिव हिंसा जो करत हैं या आगे क्या पाप।
कंटक जूनि जहान में भेंटा सिंह अरु साँप ॥५६॥
आतम प्रान उधार ही ऐसा धरम न और।
कोटि जग्ग असुमेध फल सब्द समाना भौंर ॥५७॥

॥ साध महिमा का अंग ॥

धन जननी धन भूमि धन धन नगरी धन देस।
धन करनी धन सुकुल धन जहाँ साध परबेस ॥ १ ॥
जा ऊदर साधू बसै सो ऊदर है पाख[6]।

---

(१) पहिले क़ायदा था कि पूरे करोड़ रुपये पर एक फरहरा खड़ा कर दिया करते थे जो निशान करोड़पती होने का समझा जाता था। (२) ख़ज़ाना। (३) ज़वाल। (४) ज़िबह। (५) छुरी। (६) पाक।

सनकादिक से उपज ही सुकदे बोले साख[१] ॥ २ ॥

गंदा अंडा गरद मिल परा बिरिछ के खोढ़।
संकर तत्त सुनाइया पारबती गई पौंढ़[१] ॥ ३ ॥

धन संकर धन गीरजा धन सुकदे धन ब्यास।
धन जननी सुकदेव की द्वादश बरस बिलास[१] ॥ ४ ॥

जहाँ साध जन औतरे तहाँ भक्ति का भेव।
गोरख उपजे ज्ञान जब भभूत दई महदेव[२] ॥ ५ ॥

सूया अनसूया मिले तीनों देवा ध्यान।
सब्द स्वरूपी औतरे दत्तात्रे परमान[३] ॥ ६ ॥

संत सुरसरी चलत हैं मारू देस बहंत।
बागड़ मंझ बिलास होय नदी सुरसरी संत ॥ ७ ॥

साध नदी दो अगम नग इन सम तुल नहिं और।
साध भक्ति के खंभ हैं नदिया बिरछा मौर ॥ ८ ॥

---

(१) कथा है कि एक समय में महादेव जी पारबती जी को एकान्त में तत्व-ज्ञान का उपदेश दे रहे थे पास ही एक पेड़ था जिसके खोढ़र या खोखली पेड़ी में एक गंदा अंडा सुग्गे का पड़ा हुआ था, वह उस चरचा के प्रताप से सजीव होकर फूटा और बच्चा बन कर बड़ा हो गया। कथा के बीच में पारबती जी को औंघाई आ गई तब वह सुग्गा जो कथा को सुन रहा था पारबती जी की जगह हुंकारी भरने लगा जिस में महादेव जी कथा को बंद न कर दें। जब कथा समाप्त हुई तो महादेव जी ने पारबती जी को सोता देख कर पूछा कि तुम तो सो गई थीं हुंकारी कौन भरता था। पारबती जी ने कहा मैं नहीं जानती। इस पर महादेव जी ने क्रोध में भर कर अपना त्रिशूल छोड़ा। सुग्गा भागा और त्रिशूल ने उसका पीछा किया। रास्ते में व्यास जी की स्त्री सूर्य्य की पूजा कर रही थीं और उनका मुँह खुला हुआ था सुग्गा उनके मुँह में होकर पेट में समा गया और बारह बरस तक उनके पेट में रहा क्योंकि त्रिशूल को उस स्त्री के बध करने का अधिकार न था। जब व्यास आदिक ने जाकर महादेव जी से बिनती की तब शिव जी ने त्रिशूल को फेर लिया और सुग्गा शुकदेव जी के रूप में व्यास जी की स्त्री के उदर से निकल कर जंगल को चला। व्यासजी उनके फेर लाने को पीछे दौड़े तो शुकदेव जी ने उनको ज्ञान सुनाया।

(२) गोरखनाथ जी जोगी महादेव के उपासक थे। (३) अत्रय ऋषि की स्त्री अनसूया के अंतर में ध्यान करते समय त्रिदेव ने अपना अंश डाल दिया जिससे दत्तात्रेयजी उत्पन्न हुए। इन्होंने चौबीस गुरू धारन किये।

साँईं सरिखे संत हैं यामैं मीन न मेख।
परदा अंग अनादि है बाहर भीतर एक ॥ ९ ॥
साँईं सरिखे देखले बरतावै जे कोय।
सप्त कोस जल चढ़ गया जहाँ साध मुख धोय[1] ॥१०॥
सकल मेदिनी[2] भर गई सब्द न पूटा[3] फेर।
सप्त कोस क्या बात है डूबे मेरु सुमेर ॥११॥
ऐसे साधू संत जन पार ब्रह्म की जात।
सदा रते हरि नाम सूँ अंतर नाहीं घात ॥१२॥
साध अगाध अपार जन परमानँद सूँ प्रीत।
कहवत के तौ संत हैं अवगत अलख अतीत ॥१३॥
साध सगे हैं जगत में संत सगाई साँच।
साधू ढूँढ़न नीकलूँ बहु बिधि काछूँ काछ ॥१४॥
साध समुंदर गगन गत सुन्न समाने सोय।
परमानँद के परमहंस एक कहूँ की दोय ॥१५॥
साध समुन्दर लाल नग संत हीरों की खान।
सतगुरु बेदी बाँचहीं सुनतेही परवान ॥१६॥
महिमा कीजै संत की तन मन धन सब देहि।
सिर माँगे टालो नहीं मोरद्धज लखि लेहि[4] ॥१७॥

---

(१) गिरनार पहाड़ जहाँ अच्छे साधू रहते हैं वहाँ से सात कोस नीचे हनुमान धारा गिरती है। (२) पृथ्वी। (३) पीठ।

(४) राजा मोरध्वज की प्रचण्ड भक्ति की बहुत सी कथा हैं। जिस बात का यहाँ ज़िकर है वह यह है कि श्रीकृष्ण अर्य्युन को राजा मोरध्वज की असदृश भक्ति की लीला दिखलाने को आप एक बूढ़े ब्राह्मन का रूप धर कर और अर्य्युन को अपना पुत्र बना कर राजा के घर आये और कहा कि रास्ते में लड़के को बाघ ने पकड़ा था और हमारे बहुत बिनती करने पर इस शर्त पर छोड़ा कि राजा मोरध्वज का दाहिना अंग हमारे खाने को लाओ। राजा ने जवाब दिया कि बड़े भाग मेरे कि यह निकाम देह साध सेवा में काम आवै और बूढ़े ब्राह्मन के कहने मुताबिक अपनी रानी और कुँवर को आज्ञा दी कि आरे से चीर कर सिर से पाँव तक दो टुकड़े कर दो। आरा उठा कर राजा के सिर पर रक्खा गया और एक ओर से रानी और दूसरी ओर से राजकँवर चलाने लगे कि

संत सलहली सेज के जिन में कैसी भिन्न ।
　　साहब साँईं ऊतरे नाम धराया जन्न[1] ॥१८॥
संत सलहली सेज के जिन के कैसी भिन्न ।
　　साहब परगट संत हैं जिन का एकै मन्न ॥१९॥
मोड़ अमोड़ं मगन है हद बेहद में सैल ।
　　साहब साधू पाक है उपजी बाजी मैल ॥२०॥
माल मुलक सब घूर है बिन साँईं के नाह[2] ।
　　दुनिया अलग बिजोग है साधू साहब माँह ॥२१॥
माल मुलक सब घूर है पाक परम गुरु संत ।
　　जिन सूँ साहब निकट है तिन में कैसा अंत ॥२२॥
जिन में नाहीं अंतरा अरस परस परवान ।
　　साहब साधू एक हैं दुनिया दूजी जान ॥२३॥
संत सामना संत में दुनिया है सो न्यार ।
　　जिन में दूजी भिन्न क्या राते सिरजनहार ॥२४॥
साध समुन्दर कमल गति माहें साँईं गंध ।
　　जिन में दूजी भिन्न क्या सो साधू निरबंध ॥२५॥
कमल न डूबे जल चढ़ै माहें मधुकर[3] बास ।
　　जैसे चन्द कमोदिनी यूँ साँईं निज दास ॥२६॥
नौ नेजे जो जल चढ़ै कमल न भींजै गात ।
　　माहें ज्ञान सुगन्ध सर[4] आदि अंत का साथ ॥२७॥
नौ नेजे जो जल चढ़ै बूँद न लागै पान ।
　　ऐसे साधू अगम गत संसारी परवान ॥२८॥

इसमें राजा को बाँईं आँख से एक आँसू टपक पड़ा । इस पर बूढ़े ब्राह्मन बोले कि यह दान अब अशुद्ध हो गया क्योंकि तुम रोये जो चिन्ह दुःख और खेद का है । राजा ने उत्तर दिया कि ऐसा कदापि नहीं है बरन बाँईं आँख अपनी अभाग्यता पर शोक करती है कि हमारी ओर का अंग साध सेवा में न लगा । इस पर श्रीकृष्ण ने प्रसन्न होकर निज रूप से दर्शन दिया ।

(१) भक्त । (२) नेह । (३) भँवरा । (४) तालाब ।

कमल पत्र की बासना जाको कवन सरूप ।
महकै गंध अपार गति सूँघत बड़े बड़े भूप ॥२६॥
भूप संत साधु कहे जुगन जुगन के राव ।
सप्त पुरी नहिं बासना जिनके भक्ति पसाव[१] ॥३०॥
मन मधुकैर काया केवड़ा महकत गंध अजोख ।
हूँट हाथ गढ़ अगम है रच राखे सब लोक ॥३१॥
स्वर्ग सलेमा[२] बास है तिरबेनी के घाट ।
आगे अगम अगाध गति अवर नहाहीं आट[३] ॥३२॥
संत सरोवर हंस हैं भच्छन करैं बिचार ।
पुहुप बासना ज्यूँ रहैं राई रिंच न भार[४] ॥३३॥
साध कमल मध बासना ऐसा हलका अंग ।
मैल मनोरथ ना रहै निरमल धारा गंग ॥३४॥
साध सँगत हरि भक्ति बिन कोई न पावै पार ।
निरमल आदि अनादि है गंदा सब संसार ॥३५॥
साध साध सब कोउ कहै साध सुमत सें जान ।
कुमत कमावे जीव है जैसे जल पाखान ॥३६॥
ज्यूँ जल में पाखान है भींजत नाहीं अंग ।
चकमक लागे अगिन है कहा करे सतसंग ॥३७॥
जहँ महिमा है साध की चरन कमल से हेत ।
जुगन जुगन उर में रखूँ ध्रू प्रहलाद सकेत ॥३८॥
साध संत के ऐन[५] में बसैं हुजूर अमान ।
जा घर निन्दा साध की सो घर डूबे जान ॥३९॥
लख छल छिद्दर मैं करूँ अपने संतों काज ।
हिरनाकुस ज्यूँ मारहूँ नरसिंघ धरहूँ साज[६] ॥४०॥

(१) क़दर । (२) सुखाला । (३) पाँच तत्व और तीन गुन । (४) जैसे फूल में सुगंध जिसका रत्ती भर बोझ नहीं होता । (५) घर, आँख । (६) देखो नोट पृष्ठ ७३ ।

स्वर्ग पतालों सकल में है अनुरागी राम।
नरसिंघ होकर अवतरे प्रहलाद भक्त के काम[१] ॥४१॥
जहँ जन की महिमा सुनूँ तहँ मैं गमन करंत।
वो तौ नगर अमान है जहँ मेरे प्यारे संत ॥४२॥
साध साध सब कोउ कहै साध समुन्दर तीर।
अवगत की गत को लखै मिल गये नीर कबीर[२] ॥४३॥
नीर कबीर निरंजनं अंजन धरे सदेस[३]।
अंजन मंजन माँजिये जब होवे परबेस ॥४४॥
साध कहावन कठिन है मग पर धरे न पाँव।
सहँगी[४] संगत है नहीं चढ़ो नाम की नाव ॥४५॥
साध कहाया जगत में परचे पड़े न प्रान।
जग सोभा जब होयगी मिलै अलख निरबान ॥४६॥
सब्द मिलावा अंग रस परसन है दीदार।
रोम रोम तारी लगै झिलमिल किरन अपार ॥४७॥
बरषै किरन अबरन गत रिमझिम रिमझिम रंग।
जो देखै सोई कहै अरस परस परसंग ॥४८॥
संत सकल के मुकट हैं साँईं साध समान।
बड़ भागी वे हंस हैं जिन संतों नाल पिछान ॥४९॥

॥ राग-धुनि ॥

आज मेरे आये सन्त सुजान।
तन मन धन वारूँगी प्रान ॥ टेक ॥
चरन कमल रज डारूँ सीस।
मानो आप मिले जगदीस ॥ १ ॥

(१) देखो नोट पृष्ठ ७३। (२) कबीर साहब नौजनमतुआ बालक की दशा में काशी के लहरतारा तालाब में बहते मिले थे [देखो जीवन-चरित्र कबीर शब्दावली भाग १ में]। (३) निकट। (४) सस्ती, सहज।

संत की महिमा कही न जाय।
अठसठ तीरथ चरनों माँय ॥ २ ॥
संत की महिमा अपरम्पार।
पूरन ब्रह्म मिले करतार ॥ ३ ॥
संत की महिमा अगम अगाध।
नारद से उधरे प्रहलाद[1] ॥ ४ ॥
ध्रु भेंटे नारद निबाँन।
अमरापुर पर रचे बिमान[1] ॥ ५ ॥
संत की महिमा अगम अगाह।
बूड़न तें राखे गज ग्राह[2] ॥ ६ ॥
संत की महिमा निस्चल थीर।
द्रोपद सुता की बढ़ गई चीर[3] ॥ ७ ॥
संत की महिमा अधिक सुमेर।
भिलनी के जूठे खाये बेर[4] ॥ ८ ॥
संत की महिमा निस्चल अंक।
बालमीक का बाजा संख[5] ॥ ९ ॥
संत की महिमा अमन अमान।
देखो गनिका चढ़ी बिमान[6] ॥१०॥
संत की महिमा पद गरगाप।
तिरलोचन के बिर्तिया आप[7] ॥११॥
पंडरपुर नामा निबाँन।
देवल फेर छवा दई छान[8] ॥१२॥

---

(१) प्रह्लाद भक्त की कथा नोट पृष्ठ ७३ में और ध्रू भक्त की नोट पृष्ठ २७ में दी है। प्रह्लाद को गर्भ में और ध्रू को बन में नारद मुनि ने उपदेश दिया था। (२) देखो नोट पृष्ठ २०। (३) देखो नोट पृष्ठ २०। (४) सेवरी भिल्लिनी के दाँत से कुतर कर चीखे हुए बेर श्री रामचन्द्र ने बड़ी रुचि से भोग लगाये। (५) देखो नोट पृष्ठ ५५-५६। (६) देखो नोट पृष्ठ २०। (७) देखो नोट पृष्ठ ७३। (८) पंडरपुर के ठाकुरद्वारे का दरवाजा फिर जाने और नया छप्पर बन जाने का हाल नामदेव भक्त की कथा नोट पृष्ठ ७१ में देखो।

कासीपुरी कबीर कमाल।
गैबी बालद लाइ रसाल[१] ॥१३॥
दिया भंडारा जन रैदास।
कनक जनेऊ पद परकास[२] ॥१४॥
संत की महिमा कही न जाय।
पीपा कूद परे दरियाय[३] ॥१५॥
दास गरीब संत कूँ सेव।
चौरासी मिट गइ सुकदेव[४] ॥१६॥

॥ पारख का अंग ॥

अनंत कोटि अवतार हैं नहिं चितवै बुध नास।
खालिक खेलै खलक में छः ऋतु बारस मास ॥ १ ॥
पीछे पीछे हरि फिरैं आगे संत सुजान।
संत करैं सोइ साँच है चारो जुग परमान ॥ २ ॥
साँई सरिखे साध हैं इन सम तुल नहिं और।
संत करैं सोइ होत है साहब अपनी ठौर ॥ ३ ॥
संतों कारन सब रचा सकल जमीं असमान।
चंद सूर पानी पवन जग तीरथ औ दान ॥ ४ ॥
ज्यूँ बच्छा गउ की नजर में यूँ साँईं औ संत।
हरि जन के पीछे फिरैं भक्त बछल भगवंत ॥ ५ ॥
धारा मेरे संत की मुझ से मिटै न अंस।
बुरी भली भाषै नहीं सोई हमारा बंस ॥ ६ ॥
संखों जिव परलै करैं संखों उत्पति ख्याल।
ऐसे समरथ संत हैं एक खिसै[५] नहिं बाल ॥ ७ ॥

---

(१) भगवंत ने कबीर की लाज रखने को बैलों अन्न उनके द्वारे पर पहुँचा दिया [देखो नोट पृष्ठ २९] कमाल कबीर साहब के पुत्र और चेले थे। (२) देखो रैदास जी की कथा, नोट पृष्ठ २८-२९। (३) देखो नोट पृष्ठ २७। (४) तोते की चौरासी छूट कर शुकदेव जी का चोला पाने की कथा देखो नोट पृष्ठ ७८। (५) उखड़ै।

गरजैं इन्द्र अनंत दल बहु बिध बरषा होय।
संखों जिव परलै करैं संखों उत्पति होय ॥ ८ ॥
इच्छा कर मारैं नहीं बिन इच्छा मर जाहिं।
निःकामी निज संत हैं तहँ नहिं पाप लगाहिं ॥ ९ ॥
बरषैं तड़कैं डोब दें तारैं तीनों लोक।
ऐसे हरिजन संत हैं सौदा रोकम रोक[1] ॥१०॥
बहतर छोहन छै करी कूरुक्छत्तर देख[2]।
कपिल सँघारे सगर के पाप लगा नहिं एक[3] ॥११॥
द्वादस कोट निनानबे गोरख जनक बिदेह।
यूँ तारे यूँ डोब दे यामें नहीं सँदेह ॥१२॥
सील माहिं सब लोक हैं ज्ञान ध्यान बैराग।
जोग जग्य तप होम नेम गंगा गया पराग ॥१३॥
संतोष स्वर्ग पाताल सब और कहा मृत लोक।
फिर पीछे कूँ क्या रहा जब आया संतोष ॥१४॥
बिबेक बिहंगम अचल है आया हिरदे माहिं।
भक्ति मुक्ति औ ज्ञान गति फिर पीछे कुछ नाहिं ॥१५॥
दया सर्ब का मूल है छिमा छका जो होय।
तिरलोकी कूँ तार दे नाम निरंजन गोय ॥१६॥
दस हजार रापत[4] बली कामदेव महमंत।
जा सिर अंकुस सील का तोरत गज के दंत ॥१७॥
क्रोध बली चंडाल है बल रापत द्वादस सहंस।
एक पलक में डोब दे अनंत कोट जिव हंस ॥१८॥

(१) नक़द, खरा। (२) कथा है कि कुरुक्षेत्र में महाभारत के संग्राम में बहत्तर छोहनी दल जमा हुआ था जिन में से एक न बचा—एक छोहनी में दस हजार हाथी, तीस हजार रथ, एक लाख मल्ल या पहलवान, दस लाख घोड़े, और छत्तीस करोड़ सिपाही होना बतलाते हैं। (३) कपिलमुनि ने राजा सगर के साठ हजार पुत्रों को जो उनसे दुर्वचन बोले थे भस्म कर दिया। (४) हाथी।

जा सिर अंकुस छिमा का मारे तुस तुस[1] बीन।
तिरलोकी से काट दे जे होय साधु प्रबीन ॥१६॥
लोभ सदा लहरा रहै तिरलोकी में इच्छ।
बल रापत[2] बीस सहस है पलक पलक के बिच्च ॥२०॥
ता अंकुस संतोष है तिरलोकी से काढ़।
काटै कोटक कटक दल संतोष तेग बड़ बाढ़ ॥२१॥
मोह मवासी मस्त है बल रापत[2] तीस सहंस।
तिरलोकी परिवार है जहँ उपजे तहँ बंस ॥२२॥
जा सिर अंकुस बिबेक है पूरन करै मुराद।
तिरलोकी की बासना ले बिबेक सब साध ॥२३॥

॥ ब्रह्म बेदी ॥

ज्ञान सागर अति उजागर निरबिकार निरंजनं।
ब्रह्म ज्ञानी महा ध्यानी सत सुकृत दुख भंजनं ॥ १ ॥
मूल चक्र गनेस बासा रक्त बरन जहँ जानिये।
क्लिँग जाप कुलीन तज सब सब्द हमरा मानिये ॥ २ ॥
स्वाद चक्र ब्रह्मादि बासा जहँ साबित्री ब्रह्मा रहै।
ओं जाप जपत हंसा ज्ञान जोग सतगुरु कहै ॥ ३ ॥
नाभि कमल में बिस्नु बिसंभर जहँ लछमी सँग बास है।
हँग जाप जपन्त हंसा जानत बिरला दास है ॥ ४ ॥
हृदय कमल महादेव देवं सती पारबती संग है।
सोहं जाप जपंत हंसा ज्ञान जोग भल रंग है ॥ ५ ॥
कंठ कमल में बसै अबिद्या ज्ञान ध्यान बुधि नासही।
लील चक्र मध काल कर्म आवत दम कूँ फाँसही ॥ ६ ॥
त्रिकुटी कमल परमहंस पूरन सतगुरु समरथ आप है।
मन पोना सम सिंध मेलो सुरत निरत का जाप है ॥ ७ ॥

(१) भूसी। (२) छिलका। (३) हाथी।

सहसकमलदल आप साहब ज्यूँ फूलन मध गंध है।
पूर रहा जगदीस जोगी सत समरथ निरबंध है ॥ ८ ॥
मीन खोज[१] हनोज[२] हर दम उलट पंथ की बाट है।
इला पिंगला सुखमन खोजो चल हंस औघट घाट है ॥ ९ ॥
ऐसा जोग बिजोग बरनौ जो संकर ने चित धरा।
कुंभक रेचक द्वादस पलटै काल करम तिस तें डरा ॥१०॥
सुन्न सिंघासन अमर आसन अलख पुरुष निर्बान है।
अति लालीन बेदीन मालिक कादिर कूँ कुरबान है ॥११॥
है नरसिंघ अबंध अवगत कोट बैकुंठ नख रूप है।
अपरंपार दीदार दरसन ऐसा अजब अनूप है ॥१२॥
घुरै निसान अखंड धुन सुन सोहं बेदी गाइये।
बाजै नाद अगाध अगहै जहँ ले मन ठहराइये ॥१३॥
सुरत निरत मन पवन लपटै बंकनाल सम कीजिये।
स्रवै[३] फूल अस्थूल अस्थिर अमी महारस पीजिये ॥१४॥
सप्तपुरी मेरुडंड खोजो मन मनसा गहि राखिये।
उड़िहैं भँवर अकास गमनं पाँच पसीसो नाखिये[४] ॥१५॥
गगन मँडल की सैल करले बहुर न ऐसा दाव है।
चल हंसा परलोक पठाऊँ भवसागर नहिं आव है ॥१६॥
कंदर्प[५] जीत उदीत[६] जोगी षटकर्मी यह खेल है।
अनुभव मालिन यह हार गूँधै सुरत निरत का मेल है ॥१७॥
सोहं जाप अथाप थरपौ त्रिकुटी संजम धुन लगै।
मार सरोवर न्हान हंसा गंग सहसमुख जित बहै ॥१८॥
कालिन्द्री कुरबान कादिर अवगत मूरत खूब है।
छत्र सेत बिसाल लोचन गलताना महबूब है ॥१९॥

---

(१) मछली की राह जिसका निशान नहीं होता। (२) सदा। (३) चुवै। (४) रोकिये। (५) कामदेव। (६) प्रकाशमान।

दिल अंदर दीदार दरसन बाहर अंत न जाइये ।
काया माया कहा बपुरी[1] तन मन सीस चढ़ाइये ॥२०॥
अवगत आदि जुगादि जोगी सत पुरुष लौलीन है ।
गगन मँडल गलतान गैबी जाति अजाति बेदैन है ॥२१॥
सुख सागर रतनागर निरभय बिन मुख बानी गावही ।
बिन आकार अजोख निरमल दृष्टिमुष्टि न आवही ॥२२॥
झिलमिल नूर जहूर जोती कोट पदम उजार है ।
उलट नैन बेसुन्न बिस्तर जहाँ तहाँ दीदार है ॥२३॥
अष्ट कमलदल सकल रमता त्रिकुटी कमल मध निरखहीं ।
सेत धजा सुन गुमठ[2] आगे पचरँग झंडे फरकहीं ॥२४॥
सुन्न मंडल सतलोक चलिये नौ दर मूँद बेसुन्न है ।
बिन चसमों एक बिम्ब[3] देखा बिन सरवन सुनि धुन्न है॥२५॥
चरन कमल में हंस रहते बहुरंगी बरियाम है ।
सूछम मूरत स्याम सूरत अचल अभंगी राम है ॥२६॥
नौ मुखंध[4] निसंक खेलो दसवें दर मुख[5] मूल[6] है ।
मालिन रूप अनूप सजनी बिन बेली का फूल है ॥२७॥
स्वास उस्वास पवन कूँ पलटै नागफली कूँ भूच[7] है ।
सुरत निरत का बाँध बेड़ा गगन मँडल कूँ कूँच है ॥२८॥
सुनले जोग बिजोग हंसा सब्द महल कूँ सिध करो ।
गहु गुरुज्ञान बिज्ञान बानी जीवतही जग में मरो ॥२९॥
उजल हिरंबर सेत भौंरा अछे बृछ सत बाग है ।
जीते काल बिसाल सोहं तरजीजन बैराग है ॥३०॥
मनसा नारी कर पनिहारी खाकी[8] मन जहँ मालिया ।
कुंभक काया बाग लगाया फूले फूल बिसालिया ॥३१॥

(१) बेचारी । (२) गुम्बज़ । (३) प्रकाशमान गोलाकार । (४) द्वारे । (५) मुख्य । (६) सार वस्तु । (७) भोंचना । (८) पिंडी ।

कच्छ मच्छं कुरम धौलं सेस सहस-फन गावहीं ।
नारद मुनि से रटैं निस दिन ब्रह्मा पार न पावहीं ॥३२॥
संभु जोग बिजोग साधा अचल अडिग समाध है ।
अवगत की गत नाहि जानी लीला अगम अगाध है ॥३३॥
सनकादिक औ सिध चौरासी ध्यान धरत हैं तासुका ।
चौबीसो अवतार जपत हैं हरमहंस प्रकास का ॥३४॥
सहस अठासी औ तेंतीसो सूरज चंद चिराग है ।
धर[1] अंबर[2] धरनीधर[3] रटते अवगत अचल बिहाग है ॥३५॥
सुर नर मुनिजन सिध अरु साधक पारब्रह्म कूँ रटत हैं ।
घर घर मँगलचार चौरी ज्ञान जोग जहँ बटत हैं ॥३६॥
चित्रगुप्त धरमराय गावै आदि माया ओंकार है ।
कोट सरसुती लाप करत हैं ऐसा ब्रह्म दरबार है ॥३७॥
कामधेनु कलपबृच्छ जाके इन्द्र अनंत सुर भरत है ।
पारबती कर जोर लछमी सावित्री सोभा करत है ॥३८॥
गंधर्ब ज्ञानी अरु मुनि ध्यानी पाँचो तत्त खवास हैं ।
त्रिगुन तीन बहुरंग बाजी कोइ जन बिरले दास हैं ॥३९॥
ध्रू प्रहलाद अगाध स्वर्ग है जनक बिदेही जोर है ।
चले बिमान निदान[4] बीता धमराय की बँध तोर है ॥४०॥
गोरखदत्त जुगादि जोगी नाम जलंधर लीजिये ।
भरथरी गोपीचन्द सीझे ऐसी दिच्छा दीजिये ॥४१॥
सुलतानी बाजीद फरीदा पीपा परचे पाइया ।
देवल फेरा गोप गुसाँईं नामा[5] की छान छवाइया ॥४२॥
छान छवाई गऊ जिवाई गनिका चढ़ी बिवान में ।
सदना[6] बकरे कूँ मत मारै पहुँचे आन निदान में ॥४३॥

---

(१) धरती । (२) आकाश । (३) शेषनाग । (४) आदि कर्म्म । (५) देखो नोट पृष्ठ ७० । (६) देखो नोट पृष्ठ २१-२२ ।

अजामेल से अधम उधारे पतित-पावन ब्रिद[१] तासु है ।
केसो आन भया बनजारा षट दल कीन्ही हाँस है ॥४४॥
धना[२] भक्त का खेत निपाया माधो[३] दई सिकलात[३] है ।
पंडा पाव[४] बुझाया सतगुरु जगन्नाथ की बात है ॥४५॥
गैबी ख्याल बिसाल सतगुरु अचल दिगंबर[५] थीर है ।
भक्ति हेत काया धर आये अवगत सत्त कबीर है ॥४६॥
नानक दादू अगम अगाधू तिरी जहाज खेवट सही ।
सुख सागर के हंसा आये भक्ति हिरंबर उर धरी ॥४७॥
कोटि भानु प्रकास पूरन रोम रोम की लार है ।
अचल अभंगी है सतसंगी अवगत का दीदार है ॥४८॥
धन सतगुरु उपदेस देवा चौरासी भ्रम मेटहीं ।
तेज पुंज तन देह धरके इस बिध हमकूँ भेंटहीं ॥४९॥
सब्द निवास अकास बानी यह सतगुरु का रूप है ।
चंद सूर न पवन पानी जहाँ छाँह न धूप है ॥५०॥
रहता रमता राम साहब अवगत अलह अलेख है ।
भूले पंथ बिडंब[६] बानी कुल का खाविंद[७] एक है ॥५१॥
रोम रोम में जाप जप ले अष्ट कमल दल मेल है ।
सुरत निरत को कमल पठवो जहँ दीपक बिन तेल है ॥५२॥
हर दम खोज हनोज[८] हाजिर तिरबेनी के तीर है ।
दास गरीब तबीब[९] सतगुरु बन्दी छोड़ कबीर है ॥५३॥

---

(१) बिरद=कीर्ति । (२) देखो नोट पृष्ठ २८ । (३) सकलात=पीताम्बर–माधवदास जगन्नाथजी के एक प्रेमी पुजारी थे जिनको कोई कड़ी बीमारी हो गई थी । और पुजारी लोग उनको समुद्र किनारे बैठा आये । रात को जब माधवदासजी को जाड़ा लगा तो जगन्नाथजी अपना पीताम्बर उनको ओढ़ा आये और आरोग कर दिया । सवेरे पीताम्बर मूर्ति पर न पाकर उसकी खोज पड़ी तो पुजारियों ने उसे माधवदास के तन पर पाकर उनकी महिमा जानी और आदर से मंदिर में लाये । (४) पाव=आग–देखो नोट पृष्ठ ७१ । (५) बिना वस्त्र । (६) पाखंड । (७) स्वामी । (८) सदा । (९) वैद्य ।

॥ सुलच्छन कुलच्छन ॥

उत्तम कुल करतार दे द्वादस भूषन संग।
रूप द्रब्य दे दया कर ज्ञान भजन सतसंग ॥ १ ॥
सील सँतोष बिबेक दे छिमा दया इकतार।
भाव भक्ति बैराग दे नाम निरालँब सार ॥ २ ॥
जोग जुगत जगदीस दे सूछम ध्यान दयाल।
अकल अकीन अजनम जत अठसिध नौनिध ख्याल ॥ ३ ॥
सुरग नरक बाँचे नही मोछ बंध से दूर।
बड़ी गरीबी जगत में संत चरन रज धूर ॥ ४ ॥
जीवत मुक्ता सो कहो आसा तृस्ना खंड।
मन के जीते जीत है क्यूँ भरमे ब्रह्मंड ॥ ५ ॥
साला[1] करम सरीर में सतगुरु दिया लखाय।
गरीबदास गलतान[2] पद नहि आवै नाहिं जाय ॥ ६ ॥
चौरासी की चाल क्या मो सेती सुन लेह।
चोरी जारी करत है जाके मुखड़े खेह ॥ ७ ॥
काम क्रोध मद लोभ लट छुटी रहै बिकराल।
क्रोध कसाई उर बसै कुसब्द छुरा घर घाल ॥ ८ ॥
हरष सोग है स्वान गत संसा सरप सरीर।
राग दोष बड़ रोग है जम के परे जँजीर ॥ ९ ॥
आसा तृस्ना नदी में डूबे तीनों लोक।
मनसा माया बिस्तरी आतम आतम दोष ॥ १० ॥
एक सत्रु इक मित्र है भूल परी रे प्रान।
जम की नगरी जाहिगा सब्द हमारा मान ॥ ११ ॥
निंदा बिंदा[3] छाँड़ दे संतों सूँ कर प्रीत।
भवसागर तिर जात है जीवत मुक्त अतीत ॥ १२ ॥

---

(१) घर, स्थान। (२) मदहोश, मस्त। (३) बुरा भला कहना।

अजामेल से अधम उधारे पतित-पावन ब्रिद[1] तासु है ।
केसो आन भया बनजारा षट दल कीन्ही हाँस है ॥४४॥
धना[2] भक्त का खेत निपाया माधो[3] दई सिकलात[3] है ।
पंडा पाव[4] बुझाया सतगुरु जगन्नाथ की बात है ॥४५॥
गैबी ख्याल बिसाल सतगुरु अचल दिगंबर[5] थीर है ।
भक्ति हेत काया धर आये अवगत सत्त कबीर है ॥४६॥
नानक दादू अगम अगाधू तिरी जहाज खेवट सही ।
सुख सागर के हंसा आये भक्ति हिरंबर उर धरी ॥४७॥
कोटि भानु प्रकास पूरन रोम रोम की लार है ।
अचल अभंगी है सतसंगी अवगत का दीदार है ॥४८॥
धन सतगुरु उपदेस देवा चौरासी भ्रम मेटहीं ।
तेज पुंज तन देह धरके इस बिध हमकूँ भेंटहीं ॥४९॥
सब्द निवास अकास बानी यह सतगुरु का रूप है ।
चंद सूर न पवन पानी जहाँ छाँह न धूप है ॥५०॥
रहता रमता राम साहब अवगत अलह अलेख है ।
भूले पंथ बिड़ंब[6] बानी कुल का खाविंद[7] एक है ॥५१॥
रोम रोम में जाप जप ले अष्ट कमल दल मेल है ।
सुरत निरत को कमल पठवो जहँ दीपक बिन तेल है ॥५२॥
हर दम खोज हनोज[8] हाजिर तिरबेनी के तीर है ।
दास गरीब तबीब[9] सतगुरु बन्दी छोड़ कबीर है ॥५३॥

---

(१) बिरद=कीर्ति। (२) देखो नोट पृष्ठ २८। (३) सकलात=पीताम्बर—माधवदास जगन्नाथजी के एक प्रेमी पुजारी थे जिनको कोई कड़ी बीमारी हो गई थी। और पुजारी लोग उनको समुद्र किनारे बैठा आये। रात को जब माधवदासजी को जाड़ा लगा तो जगन्नाथजी अपना पीताम्बर उनको ओढ़ा आये और आरोग कर दिया। सबेरे पीताम्बर मूर्ति पर न पाकर उसकी खोज पड़ी तो पुजारियों ने उसे माधवदास के तन पर पाकर उनकी महिमा जानी और आदर से मंदिर में लाये। (४) पाव=आग—देखो नोट पृष्ठ ७१। (५) बिना वस्त्र। (६) पाखंड। (७) स्वामी। (८) सदा। (९) वैद्य।

॥ सुलच्छन कुलच्छन ॥

उत्तम कुल करतार दे द्वादस भूषन संग।
रूप द्रब्य दे दया कर ज्ञान भजन सतसंग ॥ १ ॥
सील सँतोष बिबेक दे छिमा दया इकतार।
भाव भक्ति बैराग दे नाम निरालँब सार ॥ २ ॥
जोग जुगत जगदीस दे सूछम ध्यान दयाल।
अकल अकीन अजनम जत अठसिध नौनिध ख्याल ॥ ३ ॥
सुरग नरक बाँचे नहीं मोछ बंध से दूर।
बड़ी गरीबी जगत में संत चरन रज धूर ॥ ४ ॥
जीवत मुक्ता सो कहो आसा तृस्ना खंड।
मन के जीते जीत है क्यूँ भरमे ब्रह्मंड ॥ ५ ॥
साला[1] करम सरीर में सतगुरु दिया लखाय।
गरीबदास गलतान[2] पद नहि आवै नाहिं जाय ॥ ६ ॥
चौरासी की चाल क्या मो सेती सुन लेह।
चोरी जारी करत है जाके मुखड़े खेह ॥ ७ ॥
काम क्रोध मद लोभ लट छुटी रहै बिकराल।
क्रोध कसाई उर बसै कुसब्द छुरा घर घाल ॥ ८ ॥
हरष सोग है स्वान गत संसा सरप सरीर।
राग दोष बड़ रोग है जम के परे जँजीर ॥ ९ ॥
आसा तृस्ना नदी में डूबे तीनों लोक।
मनसा माया बिस्तरी आतम आतम दोष ॥ १० ॥
एक सत्रु इक मित्र है भूल परी रे प्रान।
जम की नगरी जाहिगा सब्द हमारा मान ॥ ११ ॥
निंदा बिंदा[3] छाँड़ दे संतों सूँ कर प्रीत।
भवसागर तिर जात है जीवत मुक्त अतीत ॥ १२ ॥

---

(१) घर, स्थान। (२) मदहोश, मस्त। (३) बुरा भला कहना।

जो तेरे उपजै नहीं तो सब्द साख सुन लेह।
साछीभूत संगीत है जा सूँ लावो नेह ।।१३।।
स्वर्ग सात असमान पर भटकत है मन मूढ़।
खालिक तो खोया नहीं इसी महल में ढूँढ़ ।।१४।।
करम भरम भारी लगै संसा सूल बबूल।
डाली पातों डोलते परसत नाहीं मूल ।।१५।।
स्वाँसा ही में सार पद पद में स्वाँसा सार।
दम देही का खोज कर आवागमन निवार ।।१६।।
बिन सतगुरु पावै नहीं खालिक खोज बिचार।
चौरासी जग जात है चीन्हत नाहीं सार ।।१७।।
मरद गरद में मिल गये रावन से रनधीर।
कंस केस चानूर से हिरनाकुस बलबीर ।।१८।।
तेरी क्या बुनियाद है जीव जनम धर लेत।
गरीबदास हरि नाम बिन खाली परसी[1] खेत ।।१९।।

॥ सवैया ॥

बाजीद[2] दुनी[3] सेती बिचरा, कादिर कुरबान सँभाला है।
फँद टूट गया तब ऊँट[4] मुआ, तहँ पकर पलान[5] उतारा है।।१।।
अरवाह[6] चली कहु कौन गली, धौरा[7] पीरा अक[8] कारा है।
कहिं पैर पियादा पालकियों, कहिं हस्ती[9] का असवारा है।।२।।
सत खुद खुदाय अलह लखिया, सब झूठा सकल पसारा है।
कपड़े फाड़े तन से डारे, अब सत्त प्रनाम हमारा है ।।३।।
बीबी रोवैं चोली धोवैं, तू सुन भरतार हमारा है।
मैं ना मानूँ मस्तान भया, लागा निज निकट निवारा है ।।४।।

(१) पड़ा। (२) दादू दयाल के एक चेले का नाम। (३) दुनिया। (४) मन। (५) ऊँट की काठी। (६) सुरत। (७) सफेद। (८) या। (९) हाथी।

उर में अविनासी आप अलह, सतगुरु कूँ पार उतारा है।
कहँ गल कंटक दुनिया दूती, येहू बन कैसा गारा[1] है ॥५॥
हम जान लिया जगदीस गुरू, जिन जंतर[2] महल साँवरा है।
कुछ तौल न मोल नहीं जा का, देखा नहिं हलका भारा है॥६॥
कुछ रूप न रेख बिबेक लखा, चाखा नहिं मीठा खारा है।
गलतान[3] समान समाय रहा, जो पिंड ब्रह्मण्ड से न्यारा है॥७॥
सुर संख समाधि लगाय रहे, देखा इक अजब हजारा[4] है।
कहै दास गरीब अजब दरिया, झिलमिल झिल वार न थार है॥८॥

(२)

सुख सागर न्हान चलो हंसा[5], भवसागर भूल रहे लोई।
कुल काट[6] लगा जम आन ठगा, अगली पिछली सबही खोई॥१॥
निंदत नेमी नर ताय लिये, कुछ समझैं हैं नहिं गुरु-द्रोही।
संतों का दोष धरैं दिल में, अघ पाप के बीज बहुत बोई ॥२॥
सुसरे सालों हितकार करैं, सासू साली कोई नंदोई।
जग लड़े मरैं परतीत नहीं, बोलै नहिं साँच जगत धोई ॥३॥
लगरे[7] भड़ुए नहिं भेद लहैं, गुझ[8] बीरज मंत्र कूँ हम गोई।
साधू माखन मध छाक रहे, जग पीवत है पिछली छोई[9] ॥४॥
दिन आवत है सुनि दंग भया, जम तलब छुटी तब दे रोई।
कहे दास गरीब जगाय रहे, भड़ुए निस बासर रहैं सोई ॥५॥

(३)

तप राज लिया बड़ जुलम किया, आगम अँधरो नहिं सूझत है।
घट में सत सालिग्राम सही, चेतन होकर जड़ पूजत है ॥१॥
पाती तोरै नहिं मुख मोरै, पाहन पानी सूँ लूझत[10] है।
अंधे बहिरे गूँगे गहले,[11] नहिं सब्द अनाहद बूझत है ॥२॥

---

(१) घना। (२) कलों का। (३) मस्त, मदहोश। (४) सहसदलकमल। (५) जीव। (६) मैल, दाग। (७) फरेबी। (८) गुप्त। (९) छाछ।(१०) उलझता है। (११) बेसमझ।

कामधेनु सदा कलपबृच्छ कला, जहँ अमी महारस दूझत[१] है।
कहै दास गरीब गगन गादी, गैबी गलताना गूँजत है ॥३॥

(४)

झलकै निज नूर जहूर सदा, बिभै[२] निरधार अपार कला।
कादिर कुरबान अमान सही, रहता रमता है अलख अलाह ॥१॥
सरबंग अभंग अनाहद है, जल थल पूरन है सुन्न सिला।
दरवेस दयाल निहाल करै, करनी भरनी डूबै न जला[३] ॥२॥
घट देह सनेह नहीं जाके, सरवन चसमैं नहि कंठ गला।
कुछ रूप न रंग अभंग बिधा, सोवै न जगै बैठा न खला[४] ॥३॥
करले दीदार जुहार[५] सही, तेरा जुगन जुगन होय जात भला।
कहै दास गरीब अलख लखिये, कोइ दरगह में पकरे न पला[६] ॥४॥

(५)

निरबान निरंजन चीन्ह भइया, दुख दारिद मोछ करै करता।
गरभ बास मिटै निज नाम रटे, क्यूँ जुगन जुगन चोले धरता ॥१॥
चल थीर करो अवगत नगरी, तू लख चौरासी क्यूँ फिरता।
सत संगत ले निज साधन की, नहिं नाम बिना कारज सरता ॥२
दयावंत बिबेकि भये ज्ञानी, टुक छेड़ करे से सब लड़ता।
चुंडित[७] मुंडित[७] सब पकर लिये, इनसे जम किंकर[८] ना डरता ॥३॥
तू कौन कहाँ से आन फँदा, देख आग बिरानी क्यूँ जरता।
समझै नहि सीख सुदरगह[९] ले, बड़े भूत भये जो पिंड भरता ॥४॥
मुकता होने का भेद कहूँ, चल चौर सोहंगम जित ढुरता।
कहै दास गरीब निवास सदा, जहँ नाद अखंड अजब घुरता ॥५

(६)

झलकै जोती मुकता मोती, निरभै निरबानी भेंटा है।

---

(१) दुहा है। (२) फैल रही है। (३) जल में। (४) खड़ा। (५) प्रणाम। (६) पल्ला, दामन। (७) जटा धारी और मूड़ मुड़ाये हुए भेष। (८) दूत, नौकर। (९) अच्छी दरगाह को पकड़।

त्रिकुटी ताना भर नाम नली,[1] एकै लख पूरन पेटा[2] है ॥१॥
इक बिद पिछान जहान रचा, कोइ बाप कहै कोइ बेटा है।
कोइ पीतसरे[3] कोइपाति[4] लगा, कोइ ससुर भया समधेटा[5] है॥२॥
जद काल महा बली पकड़ लिया, मरघर में आकर लेटा है।
साऊ[6] सबही खप्पर फोरैं, सिर फोर दिया पुत जेठा[7] है।
गत बूझत है जद फूँक दिया, खर खोज नहीं सब मेटा है ॥३॥
कहै दास गरीब उपाध लगी, सब भूत भये जग हेठा है ॥४॥

(७)

मग[8] पूछत है परतीत नहीं, नादी[9] बादी[10] झगड़ा ठानैं।
मुकता रुकता नहिं राह लहैं, नहि साध असाध कूँ जानत हैं॥१॥
देवल जाहीं मसजिद माहीं, साहब का सिरजा भानत है[11]।
पंडित काजी डोबी[12] बाजी, नहि नीर खीर[13] कूँ छानत हैं॥२॥
चेतन का गल काटत हैं, धर पत्थर पाहन मानत हैं।
कहै दास गरीब निरास चले, धिरकार जनम नर लानत है॥३॥

(८)

दुख दुंद उपाध में जीव बँधे, समरथ की नहीं उपासा[14] है।
नेमी धर्मी धर्म धाम फिरैं, साध संगत कूँ हासा[15] है ॥१॥
बघनी ठगनी कूँ लूट लिये, चीन्हा नहिं निरगुन रासा है।
जल अरघ दिया जम आन लिया, न्हाते जल बारह मासा है॥२॥
सूझै नहिं सिध अबंध बिद्या, पाती तोरैं नर घासा है।
जम मारत है मुगदर मोढ़े,[16] चसमों में देत धवाँसा है ॥३॥
चंचल चोर कठोर कुटिल, क्या पहिरत मलमल खासा है।
जम नगन करै साहब की सौं, देगा तुझ बहुत तिरासा है ॥४॥
दिल खोज भइया निज नाम जपो, सत पूरन ब्रह्म खुलासा है।
कहै दास गरीब पत्थर पटको, तुम डारो निरगुन पासा है॥५॥

---

(१) बुनने की नली जिस पर सूत भरा होता है। (२) ताजा तैयार हुआ कपड़ा। (३) चचिया ससुर। (४) पति। (५) समधी। (६) साथी। (७) बड़ा बेटा। (८) राह। (९) भेष। (१०) पंडित। (११) मालिक के पैदा किये हुए जीवों की हिंसा करते हैं। (१२) डुबा दी। (१३) दूध। (१४) उपासना। (१५) हँसते हैं। (१६) कंधा।

(९)

जुलमी जुलमाना छाँड़ भइया, गल काटत है बदला लीजै।
खिचड़ी खाना तज हलवाना,[1] सुरापान[2] पराधी[3] क्यूँ कीजै ॥१
रहै कोट बरस सँग साधों के, जल में पाहन का क्या भीजै।
चंदन बन में रंग लावत है, इक बाँस बिटंबी[4] ना सीझै ॥२॥
बहिरे आगे पद छंद कहा, समझै नहिं मूढ़ कहा रीझै।
कहै दास गरीब कुटिल काजी, चल ज्वाब सरे[5] में क्या दीजै॥३॥

(१०)

पापी परभात[6] नहीं भेंटै, मुख देखत पाप लगै जा का।
जननी नौ मास तिरास दई, धिरकार जनम तिसकी मा का ॥१
चौरासी कुंड पड़ै पापी, है जगन जुगन कुंभी पाका।
गर्भ छेदन बेधन पीर लगै, मिटता नाहीं इच्छा टाँका ॥२॥
जिस सेरी[7] साधू संत गये, वह मारग कठिन बहुत बाँका।
कहै दास गरीब धर बूझ भइया, भया तीन लोक सावँत साका[8] ॥३

॥ रेखता ॥

(१)

अजब महरम मिला ज्ञान अगहै[9] खुला, परख परतीत सूँ दुंद भागा।
सब्द की संध में फंद मनुवाँ गया, बिरह घनघोर में हंस जागा ॥१
अष्टदल कमल मध जाप अजपा चलै, मूल कूँ बंध बैराट छाया।
तिरकुटी तीर बहु नीर नदियाँ बहें, सिंध सरवर भरे हंस न्हाया ॥२
खेचरी भूचरी चाचरी उनमुनी, अकल अगोचरी नाद हेरा।
सुन्न सतलोक कूँ गमन हंसा किया, अगमपुर धाम महबूब मेरा ॥३
अछर की डोर घनघोर में मिल गई, भेद भेदा मैं करतार महली।
दास गरीब यह बिषम[10] बैराग है, समझ देखो नहीं बात सहली[11]॥

---

(१) बकरी का बच्चा। (२) शराब खोरी। (३) अपराध। (४) गठीला। (५) शरा यानी हजरत मुहम्मद की नसीहतों की किताब। (६) तड़के। (७) तङ्ग रास्ता। (८) किसी शूरवीर की कीर्ति का नया सम्बत्। (९) दुर्लभ। (१०) कठिन। (११) सहज।

(२)

बिरह की पीर जिस गात गूदा नहीं, बीझ पिंजर गया अस्थिसूखा[1]
उनमुनी रेख[2] धुन ध्यान निःचल भया, पाँच जहूद[3] तन ठोकफूँका
लगैगी दाह जब धाहै[4] देता फिरै, बिरह के अंग में रोवता है।
पलक आँझू[5] झरै ध्यान बिरहन धरै, प्रेम रस रीत तन धोवता है॥
हाड़ तन चाम गूदा असत[6] गलत है, उड़ैगा गात तन रुई रंगा[7]।
पिंड तन पीत[8] उदीत[9] बैराग है, देत है मद्ध ज्यूँ कूक[10] बंगा[11] ॥
हंस परमहंस सरबंग से जा मिला, बिरह बियोग यह जोग जोगी।
दास गरीब जहँ पास प्याले फिरैं, पीवते सही रस भोग भोगी॥

(३)

दीद बर दीद परतीत परतच्छ है, नयन के नाद में गरक[12] होई।
अजब गलतान कुरबान इक तन्त[13] है, सब्द अतीत कूँ परख लोई॥
जस पानी के बीच में बुदबुदा होत है, फिर पानी के बीच पानी समाया
तस ब्रह्म दरियाव में अद्भुत ख्याल है, कोइ पारखी संत की दृष्ट आया
सब्द टकसाल की लहर छानी[14] नहीं, जस दीप दरवंत[15] भोडल[16] धरीता[17]
संत सूभर[18] भरैं तन्त मस्तक धरैं, हद का जीव सब सकल रीता[19]॥
जस तिल्ली में तेल है काठ में अगिन है, दूध में घित्त मथ काढ़ लीया।
सोई नर साध अगाध निःचल भये, नूर प्याला जिन्हों जान पीया॥
नाभि के कमल पर बुर्द[20] बाजी रची, सुरत औ निरत का नाहिं मेला
मेरुडंड मैदान पर कला[21] सन्मुख करै, सो जानता होयनट भगल[22] खेला
बंक बाजीगरी बिषम सा खेल है, नूर प्याले पिवै पैठ सैझै[23]।

---

(१) बिरही की छाती में गूदा बाकी नहीं रहता और पिंजर जरजर होकर हाड़ सूख जाता है [बीझना = खुंदजाना । अस्थि = हाड़] (२) डोरी। (३) पंच दूत अर्थात काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को जला दिया। (४) दोहाई। (५) आँसू। (६) अस्थि, हाड़। (७) समान। (८) पीला। (९) उदित = प्रकाशमान। (१०) चीख। (११) बाँस की पोर—जिस तरह हवा का झोंका लगने से बाँस चीखता है। (१२) डूबना। (१३) तत्व। (१४) छिपी। (१५) दिखाई देता है। (१६) अबरक। (१७) धरने से। (१८) शुभ्र = स्वेत, निर्मल। (१९) खाली। (२०) आधी। (२१) कर्तब। (२२) झूठा। (२३) सहज में।

लाख बानी पढ़ै ध्यान सुन में धरै, महल का मरहमी भेद बेधै[१] ॥
अजगैब[२] के कोट में चोट लागै नहीं, सब्द अतीत में नेस[३] होई।
दास गरीब गुर भेद से पाइये, अगमपुर धाम की बाट जोई ॥७

(४)

घट घट में नाद उच्चार बानी, मिहीं[४] महल में मारफत[५] पावता है।
ताल मिरदंग जहँ सख सुर पूरिये[६], बिना मुख नाद बजावता है॥
तूर तुतकार धुमार[७] तिस नगर में, अजग गुलजार इक नूर चंपा।
कोकिला बैन सुख चैन सुनते भये, बिधा[८] है हंस लै बिरह कंपा[९] ॥
आद अरु अंत इक मद्ध मेला भया, सिखर की सुन्न में जिकर[१०] लागी
केतकी कमल जहँ अजब बाड़ी बनी, भँवर गुंजार निःतन्त[११] रागी॥
दुलहनी दंग दुलहा भई देखकर, संख रबि झिलमिलै नूर जोती।
अजब दरियाव जहँ कोट बेड़े पड़े, चुगत है हंस बिन चंच[१२] मोती ॥
जहँ गुमठ अनूप इक सेत छत्तर बना, गगन गुलजार जहँ नूर गादी।
दास गरीब दिल दूसरा दूर कर, सब्द अतीत सुन में समाधी ॥५

(५)

देव ही नहीं तौ सेव किसकी करूँ, किसे पूजूँ कोई नाहिं दूजा।
करता ही नहीं तो किरत[१३] किसकी करूँ, पिंड ब्रह्मंड में एक सूझा ॥
जागा ही नहीं तौ जाग किसकूँ कहूँ, सोता ही नहीं किसकूँ जगाऊँ।
खोया ही नहीं तौ खोज किसका करूँ, बिछुड़ा नहीं किसे ढूँढ़ लाऊँ॥
बोलता संग और डोलता है नहीं, कला के कोट (अलख) छिप रहा प्यारा
गैब से आया और गैब छिप जायगा, गैब ही गैब रचिया पसारा ॥
प्रान कूँ सोधकर मूल कूँ दर गहो, बेद के धुंध[१४] से अलख न्यारा।
बेद कुरान कूँ छाँड़ दे बावरे, नूर ही नूर करले जुहारा ॥४
करमना भरमना छाँड़ दे बावरे, छाँड़ सब बरत इक बैठ ठाहीं।
दास गरीब परतीत ही तें कहै, ब्रह्मंड की जोत इस पिंड माहीं ॥५

(१) पावै। (२) अज़गैब=छिपा हुआ। (३) निष्ठा। (४) झीना। (५) गुरज्ञान। (६) भरिये। (७ धूम। (८) छिद गया। (९) चिड़िया फँसाने की कल। (१०) जाप। (११) निःतत्त। (१२) चोंच। (१३) कीर्त्ति। (१४) अँधेरा।

॥ झूलना ॥

(१)

चढ़ो नाम की नाव जहाज भइया, तेरा पार चलन कूँ जो दिल है जी ।
अजब कहर में नाव लागी, जहँ मन मलाह जाजुल[१] है जी ॥
चप्पे[२] चित लावो बरदवान[३] बाँधो, बड़ा पन्थ के बीच कूल[४] है जी ।
जहँ भँवर भारी नाव डिग मिगे है, ठेका खावे गहि गलहरी[५] जी ॥
सूवा बोलता खाक के पिजरे में, सुरत सिध मेला बुलबुल है जी ।
चिदानन्द चीन्हो ब्रह्म गाजता है, जैसे मधुकर बासना फूल है जी ॥
कहै दास गरीब दलाल सोई, सौदा नाम कीन्हा सम तूल है जी ॥

(२)

बन्दी-छोड़ साहब का नाम लीजै, कटै फंद सब अंध नहि चीन्हता है ।
देई[६] धाम कूँ पूज कर मगन होई, देखो सब्द की नहीं यकीनता[७] है ॥
भेदी भेद दीन्हा सब्द महल का रे, सीढ़ी सुन्न में लाय कर पैठ धाये ।
मारा मोरचा पहलई मोह का जी, बही[८] ज्ञान तरवार सिर काट लाये ॥
चढ़े सील संतोष बिबेक बंका,[९] जहँ काम दल कटक[१०] सब फूक दीन्हे ।
जब दया के चौतरे चार आये, अनुराग निःतन्त निर्बान चीन्हे ॥
आँखी मार[११] मैदान गढ़ कोट ढाया, सफर जंग की राड़[१२] है खेत भाई
दुरजन मारकर गगन में नाद बाजा, देख दीद बरदीद परतीत आई
चित चौतरे बैठ कर बाँधिया जी, हम लोक परलोक कूँ गमन कीन्हा ।
उलटी चाल चाले नहि चूके हैं जी, निरालंब निरबान निःतन्त चीन्हा
गैबी गैब दरियाव में मार गोता, जैसे मीन का खोज नहि पावता है ।
कहै दास गरीब दरहाल धारा, परबी प्रेम की बेग नहवावता है ॥

(३)

बंदी-छोड़ साहब का ध्यान धरो, निरलंब निज नूर निज नेक है जी ।
जल थल में थीर गंभीर गैबी, देखो लोक परलोक में एक है जी ॥

---

(१) जुलमी । (२) नाव का पानी उलचना । (३) पाल । (४) खाड़ी । (५) गलही, नाव का माथा । (६) देवी । (७) विश्वास । (८) चली । (९) शूरवीर । (१०) फौज । (११) पलक भाँजते । (१२) लड़ाई ।

धर ध्यान दुरबीन यकीन कीजै, दिल देहरे बैठकर परख भाई ।
कुरबान करतार के सेहरे पर, जहँ सुरत औ निरत दो निरख आई ॥
अलह नूर मौला मगन आप है जी, गलतान सुबहान[1] सही देख लीजै
बैठा अरस[2] के तखत पर आप साईं, दीदार के वास्ते सीस दीजै ॥
देख दीदार दरहाल दरिया, जाके मुकट पर संख रवि झिलमिलै जी ।
जोती जगमगै जोग बिजोग बानी, जाकी खलक में पलक जहान है जी
नहि दीखता मुगध[3] दृष्टि आवै, संत खोज लिया कलधूत[4] है जी।
सुन्न सैल कर सिंध में सुरत पैठी, जहँ आप अवगत अनभूत है जी ॥
मनी मारकर छत्र कूँ फेर भइया, होय अदल अवधूत इस भेद हाजी[5] ।
अलह बैठकर आप इन्साफ करता, चित चौतरे चूक नहि भई काजी ॥
पड़ै गैब की मार सुमार नाहीं, देखो कुफर कूँ कुफर दिखावता है ।
फजल सिर फजल जहँ होय भइया, जाके एक नहि पल की लावता है ॥
सुन्न सिखर के महल में दिया डेरा, चौक चाँदनी बिच नहि पला[6] पकड़ै
कुफर कूँ मार पैमाल नीचा करै, लालखाँ[7] बाँधकर जहाँ जकड़ै ॥
मलागिर की सेज सूली नजर आवती, मिले सुलतान कूँ कुफर तोड़ा।
दास गरीब कबीर सतगुरु मिले, सुरत और निरत का तार जोड़ा ॥

(४)

बंदी-छोड़ साहब कूँ चीन्ह भइया, मारो नूर के सिंध में गैब गोता ।
बिन पंख पंखी उड़ै भँवर सुन में चढ़ै, अछै वृछ में बैठ निज सुन तोता
दया की दाल और नाम चोखा[8] चुगै, सत्त गुरुदत्त बानी बिलासा ।
प्रेम के पींजरे बीच बैठा रहै, करम खिड़की दई तोड़ फाँसा ॥
इक पींजरे पास मंजार[9] बैठा रहै, खोज कर खोज कर खोज खोजी ।
कौन से भेद से अरस झूलत रहै, चुगै मत चुगा यह ऋद्ध[10] रोगी ॥

---

(१) पाक (खुदा) । (२) अर्श । (३) गँवार । (४) सोना । (५) जिसने हज्ज किया है । (६) पल्ला । (७) मन । (८) चावल । (९) बिल्ली । (१०) यह ऋद्धि अर्थात् बिभूति रोग रूप है ।

सुन्न के ताक[1] में पाँच परपंच हैं, तीन के भवन पर गमन कीजै ।
खड़ा मंजार सिर पीट रोवै सदा, उड़ै आकास बृछ अछै लीजै ॥
प्रेम बानी पढ़ै नाम निःचै रटै, चंद चकोर ज्यूँ ध्यान ध्यानी ।
दास गरीब यह खेल जो याद है, तौ पींजरा छोड़ नहिं ब्रह्म ज्ञानी ॥

(५)

बंदी-छोड़ साहब कूँ देख भइया, तेरे नैन में बैन बिलास बानी ।
कच्छ कुरम जिन धौल धरना धरे, लोक परलोक इक सब्द ठानी ॥
सूछम सा रूप बिस्तार एता किया, आदि अरु अंत मध नाहिं है रे ।
स्रिष्ट का करता स्रिष्ट में रम रहा, नैन के बीच में सही है रे ॥
गुलबास निवास जो पहुप गँध झीन है, मुग्ध की दृष्ट में नाहिं आवै ।
सुरत की सैल से निरत आगे चलै, बिना आकार का भेद पावै ॥
पिंड ब्रह्मंड से सिध न्यारी कहूँ, तिर्कुटी भिकुटी नाहिं दसमाँ ।
हद्द बेहद्द के मद्ध निज महल है, रोसनी सेज बिन देख चसमाँ ॥
रँग महल की सैर जहँ सुरत निःचल करै, निरत कूँ वार और पार पेलै ।
पिंड ब्रह्मंड का खोज पावै नहीं, बिना आकार आकार मेलै ॥
स्रवन और नैन जहँ नासिका है नहीं, नहीं मन पवन जहँ सीस द्वारा ।
सत कमल काया नहीं खोया पाया नहीं, नूर जहूर अवगत हजारा ॥
जहँ रहत है हंस जो सिध सूभर[2] भरा, मीन के खोज मुस्ताक रहना ।
दास गरीब कबीर सतगुरु मिले, समझ कर खेल नहि भेद कहना ॥

(६)

भली भाँत के भेद सूँ रहना यारो, अगर दीप के धाम कूँ जाना है जी ।
चिदानंद कूँ चीन्ह दीदार पावै, जाका तंबू बनाया असमान है जी ॥
बैठा चाँदनी चौक में यार मेरा, अडील[3] परदा नहीं तासु के जी ।
बानी बोलता अमर अनुराग रागी, जाका गावना को नहीं गा सके जी
अरस कुरस पर पंथ है झीन मेरा, मीन खोज की बाट लखावता हूँ ।

---

(१) आला । (२) शुभ्र=निर्मल । (३) बिना डील का ।

पलक बीच में सिरे की सैर करता, अगर दीप के धाम चलावता हूँ ॥
कहूँ बात बैराट के घाट की जी, ज्ञानी ज्ञान कूँ पाय कर बूड़ जाते ।
इक झिलमिली सिंध है दीप दरिया, कोई ब्रह्मज्ञानी जहाँ जाय न्हाते ॥
बहै गंग कैलास आकास माहीं, संभु[1] सीस पर सैल है अगम रासा[2] ।
जहँ दत्त गोरख नहीं ध्यान ध्यानी, अचल नूर ही नूर देखो तमासा ॥
अरस कुरस के बाग में कौन माली, जहँ नूर जहूर के कंद[3] हैं जी ।
कहै दास गरीब सँभाल भइया, देखो चाखते नहीं सो अंध हैं जी ॥

(७)

खबरदार होय खेलना यार भाई, चिदानंद की चाँदनी बीच रहना ।
पग पीठ उलटा नहीं फेरिये जी, सब्द स्वाल के सुने से सीस देना ॥
कुफल जड़ी है यार महबूब मेरे, सतपुरी का भेद नहिं भेदता है ।
उलट पवन द्वादस के दीप जाई, षट कमल कूँ मूढ़ नहिं छेदता है ॥
ब्रह्म लोक की बात सुन रीझ जाता, रँग रोसनी दीप नहिं दीखता है ।
तप जोग कर भक्ति भय मान भाई, अब साखि सब्दी कहा सीखता है ॥
गुल सफा की गली में नफस[4] कूँ गाड़ दे, मार ले मोरचा तीर तुका ।
सीस कूँ काट कर हाथ महबूब[5] दे, इस्क कूँ छोड़ दे कहाँ लुका[6] ॥
मन्सूर[7] कूँ देख मौसूल[8] यूँ हूजिये, अनल ही हक्क बोलै दिवाना ।
सीस कर कटे हैं रुधिर मुख धोवता, इस्क नहिं छोड़ सूली चढ़ाना ॥
इस्क ही इस्क में फूँक तन दिया है, बहे है अस्थि[9] दरियाव माहीं ।
कहै दास गरीब यह इस्क साँचा सही, अमर मन्सूर है हक्क साँई ॥

(८)

जल थल के बीच में रम रहा तू, देख दीदार दर हाल है रे ।
वह सेत सुभान[10] जहान माहीं, जो अजब महबूब अकाल है रे ॥

---

(१) संभु = शिव । (२) राशि = समूह । (३) कन्द मूल । (४) नफ्स = इच्छा । (५) प्रीतम । (६) छिपा । (७) मनसूर फकीर अनल हक्क (= हम ही खुदा हैं) कहते थे जिन्हें मुसलमानों ने सूली चढ़ा दिया । (८) मौसूल = भगवंत के साथ एक हो जाना । (९) हाड़ । (१०) सुबहान = पवित्र ।

पारस की खान तो मुत्र की धार में, कहाँ मोती हीरा लाल है रे।
गलतान असमान में अजब मौला, इक स्रिष्टि तिरलोक कहा माल है रे[1]
जल बूँद सूँ जून[2] जहान सब होत है, इक पलक के बीच पैमाल है रे।
पाखंड कूँ पूज पाखंड परलै गया, स्रिष्टि सूवा ठगा जाल है रे॥
पत्थर के फेल से फैज पाई नहीं, सीस जम दूत कासाल है रे।
कौन मारै कहो कौन मर जात है, छाँड़ हंसा चला खाल[3] है रे॥
अगर मूल के फूल की बासना कहत हूँ, झिलमिली रंग रसाल है रे।
सेत ही हंस जहँ सेत सरवर भर्‍यो, सेत ही कमल जहँ ताल है रे॥
बुदबुदे संख कहँ राव और रंक है, नजर दर नजर निहाल है रे।
दरियाव की लहर दरियाव लौलीन है, भँवर और फील जल झाल है रे
भर्म की बुरज सब सीत के कोट हैं[4], अजब ख्याली रचा ख्याल है रे।
दास गरीब वह अमर निज ब्रह्म है, एक ही फूल फल डाल है रे॥

॥ अरिल ॥

(१)

मौला मगन मुरारि बिसंभर चीन्ह रे।
दिल अंदर दीदार अरस दुरबीन रे॥ १ ॥
इला पिंगला फेर सुखमना ध्यावही।
त्रिकुटि झरोखे बैठि परम पद पावही॥ २ ॥
झलकै सिंध अपार मुक्ति का धाम रे।
अचल अगोचर देख पुरुष बरियाम[5] रे॥ ३ ॥
निकट निरंजन नूर जहूर जुहारिये।
मीनी मारग खोज सिंध यूँ फारिये॥ ४ ॥
नैनों ही में लाल बिसाल अलेख है।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब रूप नहिं रेख है॥ ५ ॥

---

(१) एक तिर्लोक की सृष्टि क्या हैसियत रखती है उसकी रची हुई अनंत तिर्लोकियाँ हैं। (२) योनि। (३) शरीर। (४) धुआँ का सा कोट जो जाड़े में आकाश में बन जाता है। (५) श्रेष्ठ।

(२)

है मौला मस्तान मुलायम महल रे।
चीन्हो सब्द सिताब जीवना सहल रे ॥ १ ॥
राजा रंक फकीर फना हो जायँगे।
बिना बंदगी बाद बहुत पछतायँगे ॥ २ ॥
जनम पदारथ पाय पुरुष जाना नहीं।
गीदी गदहा स्वान सब्द माना नहीं ॥ ३ ॥
लेखा बारम्बार धरमराय लेत है।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब कसौटी देत है ॥ ४ ॥

(३)

बिना मूल अस्थूल गगन में रम रहा।
कोई न जाने भेव सकल सब भ्रम रहा ॥ १ ॥
अछै बृच्छ बिस्तार अपार अजोख है।
नहीं गाम नहिं धाम मुक्त नहि मोख है ॥ २ ॥
छत्र सिंघासन सेत पुरुष का रूप है।
बरन अबरन बिचार न छाया धूप है ॥ ३ ॥
देख पदम उँजियार परख नहिं आवही।
करम लिखा सो होय टरै नहिं भावही[१] ॥ ४ ॥
अवगत पूरन ब्रह्म परस परवान रे।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब सब्द पहचान रे ॥ ५ ॥

(४)

सिव ब्रह्मा का राज इंद्र गिनती कहाँ।
चार मुक्ति बैकुंठ समझ एता लहा ॥ १ ॥
संख जुगन की जूनि[२] उमर बड़ धारिया।
जा जननी कुरबान सु कागज फारिया[३] ॥ २ ॥

---

(१) भावी=होनहार। (२) योनि! (३) जिसका कर्म का लेखा चुक गया उसकी जन्म देने वाली (माँ) पूजने योग्य है।

एती उमर बिलंद[1] मरेगा अंत रे।
सतगुरु लगे न कान न भेंटे संत रे ॥ ३ ॥
सौ करोड़ मँडलीक[2] जु सावँत[3] संग हैं।
सूरे अनंत अपार पड़े बेनंग हैं ॥ ४ ॥
लंक सरीखा कोट चोट पैमाल है।
मरना है मैदान सही सिर काल है ॥ ५ ॥
रावन की रस रीत रँगीला राज था।
चौदह भवन बिवान मनोमई साज था ॥ ६ ॥
इंदर बरुन कुबेर सुमेर सलामिया[4]।
होय होय गये अनंत घने बहु नामिया ॥ ७ ॥
तेंतिस कोट की बंध बिथा[5] सुन लीजिये।
बाँध लाया ससि भानु सजा सुर[6] दीजिये ॥ ८ ॥
एक रे जोरा काल सु कूप उसारिया[7]।
ऐसे छल बल कीन्ह सु रावन मारिया ॥ ९ ॥
फोकट राजर पाट पिटेगा अंत रे।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब भजो निज कंत रे ॥ १० ॥

(५)

महमूदी चौतार हमारा[8] पहिरता।
सुलतानी का देस बलख सा सहर था ॥ १ ॥
सोलह सहस सहेली पदमनी भोग रे।
सतगुरु के उपदेस लिया तज जोग रे ॥ २ ॥
तुरी[9] अठारह लाख ऊँट गैबर[10] घना।
सीस महल में सैल बाग नौलख बना ॥ ३ ॥
कस्तूरी तन लेप गुलाबी गंध रे।

---

(१) वृथा गई। (२) एक देश का राजा। (३) वीर। (४) सिर झुकाते थे। (५) कष्ट। (६) देवता। (७) लटकाया। (८) चार लड़ की हजारा फूलों की माला। (९) घोड़ा। (१०) हाथियों का झुंड।

खाना खाते खूब परम निःचित रे ॥ ४ ॥
दल बादल गज ठाठ अदल तूमार रे।
सहदाने[१] सहनाई महल घूमार[२] रे ॥ ५ ॥
हीरे मोती मुकता जवाहिर लाल रे।
निस दिन खूबी खैर खजाने माल रे ॥ ६ ॥
लागा बान बिहंगम सब्द सब्रूह रे।
झलका[३] मारा ऐंच दूहबर दूह[४] रे ॥ ७ ॥
राज पाट गज ठाठ छाँड़ कफनी लई।
सार सब्द की चोट तोर बख्तर गई ॥ ८ ॥
नजरी नजर निहाल जिन्दा गुरु पीर था।
हरे हाँ रे कहत दास गरीब तबीब[५] कबीर था ॥ ९ ॥

(६)

क्या राजा क्या रेत[६] अतीत अतीम[७] रे।
जोधा गये अपार न चम्पी सीम रे ॥ १ ॥
यह दुनिया संसार बतासा खाँड़ का।
जोरा पीवे घोर बिसरजन[८] माड़ का ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ बटाऊ लूटहीं।
हिरस खुदी घट माँह सु बहु बिध कूटहीं ॥ ३ ॥
संसा सोग सरीर सुरसरी[९] बहत हैं।
नाहीं चौदह भुवन गमन[१०] में रहत हैं ॥ ४ ॥
दुरमत दोजख माहिं बलै[११] बहु भाँत है।
सतगुरु भेंटा होय तो निःचै साँत[१२] है ॥ ५ ॥
आजिज जीव अनाथ परा है बंद में।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब जगत सब फंद में ॥ ६ ॥

---

(१) तुरही। (२) धूम। (३) भाला। (४) अंधकार रूपी भ्रम दूर हो गया। (५) बैद। (६) रैयत। (७) यतीम। (८) धोवन। (९ नदी। (१०) थिर नहीं रहते आवा-गमन लगा रहता है। (११) जलै। (१२) शांत।

(७)

मरदाने मर जाहि मनी पर मार है।
ऐसा महल अनूप पलक में छार है ॥ १ ॥
जोरा[१] बुरी बलाय जीव जग भूँच[२] है।
पलक पहर छिन माहिं नगारा कूँच है ॥ २ ॥
सुरत सुहंगम नेस पेस है बावरे।
बदी बिदारो[३] बेग धनी कूँ ध्याव रे ॥ ३ ॥
दम की डोरा खोज दरीबा[४] खूब है।
अगर दीप सतलोक अजब महबूब है ॥ ४ ॥
सुता[५] पुत्र गृह नार छार सब गात रे।
का सूँ लाया नेह संग नहिं साथ रे ॥ ५ ॥
हंस अकेला जाय हिरंबर हेत रे।
सब्द हमारा मान नाम निज चेत रे ॥ ६ ॥
कोतल घोड़े पीनस[६] रथ सँग पालकी।
गज गैबर[७] दल ठाठ निसानी काल की ॥ ७ ॥
हक हलाल पहिचान बदी कर दूर रे।
यह मुरगी रब रूह गऊ क्या सूर[८] रे ॥ ८ ॥
तीतर चिड़ी बटेर भखे हलवान रे।
मुल्ला बाँग पुकार अलह रहमान रे ॥ ९ ॥
रमजानी रमजान घास चोखा दिया।
पकड़ पछाड़ी रूह कहो यह क्या किया ॥१०॥
खूनी खून मँझार खाल क्यूँ काढ़ता।
देखे रब रहमान गला क्यूँ बाढ़ता[९] ॥११॥

---

(१) जुल्म। (२) गँवार। (३) फाड़ डालो, नाश करो। (४) झोपड़ा। (५) बेटी। (६) एक तरह की छोटी पालकी। (७) हाथियों का झुण्ड। (८) सूअर। (९) काटता।

ऐसे बूड़ै नाव होत हैं गरक रे।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब नाम निज परख रे ॥१२॥

(८)

जानै जाननहार सकल की जानता।
घट घट में अबिनासी पूरन प्रान था ॥ १ ॥
अवगत भिन्न अभिन्न महल में महल है।
हाजिर नाजिर देख कहो क्या गहल[1] है ॥ २ ॥
अलख पलक के बीच अकासा ईस रे।
सुरत निसानै लाय देख जगदीस रे ॥ ३ ॥
सेत बरन सुभ रंग बिरंग बिचार रे।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब देख दीदार रे ॥ ४ ॥

(९)

हिरदय कपट कमाल लाल पावै नहीं।
बहुत परिस्रम भूल गाँठ गहिरी गही ॥ १ ॥
मरजीवा[2] मन मारि महोदध[3] पैठ रे।
अनहद सब्द घमोर[4] जहाँ टुक बैठ रे ॥ २ ॥
त्रिकुटी कमल पर सिंध सरोवर सुन्न रे।
हूट हाथि गढ़ छाँड़ तहाँ रख मन्न रे ॥ ३ ॥
लगै कोट पर चोट अकार पसार है।
उपजे सेती भिन्न जो वस्तु नियार है ॥ ४ ॥
अलख अलेल पदम सदन[5] जहँ लाइये।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब रहत[6] घर पाइये ॥ ५ ॥

(१०)

नग सरवर पर तरवर[7] साखा नहिं मूल रे।
अछै बृच्छ अस्थान जहाँ मन झूल रे ॥ १ ॥

---

(१) गफ़लत। (२) समुद्र में मोती की खोज में गोता लगाने वाला। (३) समुद्र।
(४) घनघोर। (५) घर। (६) रहित = मोक्ष। (७) पेड़।

पीघू[1] अनन्त अपार पड़े तिस धाम रे।
तत-बेता परम हंस बसैं निःकाम रे॥ २॥
समाधान संजूत[2] सलेमाबाद रे।
अज अमर घर देखो आद अनाद रे॥ ३॥
बैकुंठ बिहिस्त बिसार नास है जात है।
चल बसा सतलोक नबेला साथ है॥ ४॥
अगर डोरहंचढ़ देख झिलमिली सुन्न रे।
अजर अमर घर बसो पाप नहिं पुन्न रे॥ ५॥
तहँ वहँ पदम अनन्त परेवा[3] जाहिंगे।
अछै बृच्छ फल हंस तहाँ वहँ खाहिंगे॥ ६॥
अमर भूमि अस्थान प्रान जहँ चाल रे।
अनंत कोटि तहाँ सिद्ध अमीते[4] माल रे॥ ७॥
अवगतपुर का राजा अवगत नाम है।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब हमारा गाम है॥ ८॥

(११)

यह सौदा सतभाय[5] करो परभात रे।
तन मन रतन अमोल बटाऊ[6] साथ रे॥ १॥
बिछुर जायँगे मीत मता सुन लीजिये।
बहुर न मेला होय कहो क्या कीजिये॥ २॥
सील संतोष बिबेक दया के धाम हैं।
ज्ञान रतन गुलजार सँघाती राम हैं॥ ३॥
धरम धजा फरकंत फरहरें लोक रे।
ता मध अजपा नाम सु सौदा रोक[7] रे॥ ४॥

---

(१) पैगू=पन्ना की किस्म का एक जवाहिर। (२) संयुक्त। (३) कबूतर अर्थात् जीव। (४) बेहिसाब। (५) सत्त भाव। (६) ठग। (७) नक्द दाम से लेना।

चले बनिजवा[१] ऊट[२] हूँट गढ़ छाँड़ रे।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब लगै जम डाँड़ रे ॥ ५ ॥

(१२)

जम जोरा का जाल काल खग[३] सीस रे।
हैफ[४] होत छिन माहिं सुमिर जगदीस रे ॥ १ ॥
ऐसा साज बनाय बिसर नहिं जाइये।
जनम पदारथ खोय बहुर कहँ पाइये ॥ २ ॥
जम जोरा का जोर कठोर बिजोग है।
सर्ब लोक सिर साल सु दीरघ रोग है ॥ ३ ॥
जो जाने तो जान सब्द कूँ मान रे।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब होत है हान रे ॥ ४ ॥

(१३)

सावँत[५] औ मँडलीक[६] गये बहु सूर रे।
राजा रंक अपार मिले सब धूर रे ॥ १ ॥
रुई लपेटी आग अँगीठी आठ रे।
कोतवाल घट माहिं मारता काठ[७] रे ॥ २ ॥
नरक बहै नौ द्वार देहरा गंद रे।
क्या देखा कॉल माहिं पड़ा क्यूँ फंद रे ॥ ३ ॥
हासिल[८] का घर दूर हजूर न चालता।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब हटी[९] में लाल था ॥ ४ ॥

(१४)

हाट पटन बाजार वजन[१०] फीका पड़ा।
जम किंकर का तौक आन गल में पड़ा ॥ १ ॥

---

(१) बंजारा, प्राण। (२) उठना। (३) चिड़िया। (४) अफसोस। (५) बीर। (६) एक मंडल का राजा। (७) चोर को हवालात रखने के लिये लकड़ी में छेद करके उसमें पाँव डाल कर कील से ठोक देते हैं। (८) लाभ, तत्त्व बस्तु। (९) हाट=दूकान। (१०) तौल।

मार मुहें मुँह खाय सीस धर पीटहीं।
जम रोकै नौ द्वार गला और घीट[१] हीं ॥ २ ॥
रञ्चक स्वाद सरीर सिंघासन सेज रे।
पड़ी जुगन जुग भूल न छाँड़े हेज[२] रे ॥ ३ ॥
जैसे मधु की माखी मधुवा[३] भोग रे।
छार[४] दई मुख माहिं लूटि हैं लोग रे ॥ ४ ॥
ऐसा संग्रह कीन्ह संग ना चालिहै।
हर दम अजपा नाम जपो यह माल है ॥ ५ ॥
दौरा[५] दूत न चोर तिसै नहिं लूटि हैं।
जूनी संकट बंध नाम से छूटि हैं ॥ ६ ॥
उर में आसन मार खजाना खूब है।
जप तप कौने काम बेचना दूब[६] है ॥ ७ ॥
लालों के ब्योपार पलक टुक मूँद रे।
खैरचटा मत खाह अज्ञानी गूँद[७] रे ॥ ८ ॥
काँटे कुटिल करीर[८] सरीर झरोहिहै[९]।
चल सतगुरु के देस जु पदम करोर है ॥ ९ ॥
सूली सेज सुरङ्ग तुरङ्ग नचावते।
जिनके नाम न गाम कहीं नहि पावते ॥१०॥
मरना है महबूब हक्क दर हक्क रे।
नजर करो निरताबो[१०] पदम परक्ख रे ॥११॥
सुजनी सेज बिछाय के चँवर ढुरावते।
जा घर रवनी रम्भा[११] रागी गावते ॥१२॥

---

(१) घंटी, घाँटी। (२) प्यार। (३) जैसे मधु-मक्खी शहद इकट्ठा करती है पर उसे खाने नहीं पाती उसका मजा मधुवा चिड़िया या शहद निकालने वाले लूटते हैं। (४) राख, धूल। (५) धावा मार कर चोरी करने वाले। (६) बाहरी जप तप घास का बेचना है। (७) गोंद। (८) एक काँटेदार पेड़। (९) छिलोर लगा देगा। (१०) बिचार और निर्नय करो। (११) सुन्दर बेश्या।

सून महल अरु मंदिर बासे काग रे।
हरे हाँ रे कहता दासगरीब जगत निरभाग[1] रे ॥१३॥

(१५)

खलक मुलक कूँ देख सँघाती कोउ नहीं।
जम का है मुख्तार सीस बैठे वहीं ॥ १ ॥
होगा हाल बिहाल सब्द कूँ सोध रे।
पुत्र बिसारा माता बालक गोद रे ॥ २ ॥
और सहेली आन सैन बतलाइया।
कंठ धुकधुकी आन यान[2] समझाइया ॥ ३ ॥
ऐसे मौला[3] खोया महल के माहिं रे।
हरे हाँ रे कहता दासगरीब बृच्छ मध छाँह रे ॥ ४ ॥

(१६)

न्यारा कभी न होय निरंजन देह से।
रहा सकल घट पूर परम सुख नेह से ॥ १ ॥
ज्यूँ दरिया मध लीन मीन मग जोह रे।
पंछी पैर अकास खोज[4] नहिं होय रे ॥ २ ॥
बिन पंखों के भौंरा उड़ै अकास कूँ।
इला पिंगला सुखमन सोधै स्वास कूँ ॥ ३ ॥
गूँगे ने गुड़ खाया कैसे जानिये।
सैन सुकृत से पावै बचन पिछानिये ॥ ४ ॥
काली पीली सुरही[5] धौली धेनु रे।
सेत बरन सब दूध सकल इक बैन रे ॥ ५ ॥
नहीं ऊँच नहिं नीच निरञ्जन जाति रे।
करता के सब माहिं दिवस औ रात रे ॥ ६ ॥

(१) अभागा। (२) कूँच। (३) ईश्वर। (४) निशान। (५) गाय।

सोहं साछीभूत न ईसर कोय रे।
हरे हाँ रे कहता दास गरीब धनी कूँ जोह रे ॥ ७ ॥

॥ बैत ॥

बंदे जान साहब सार वे ।
पिदर[1] मादर[2] आप कादर[3], नहीं कुल परिवार वे ॥ १ ॥
जल बूँद से जिन साज साजा, लहम[4] दरिया नूर वे।
है सकल सरबंग साहब, देख निकट न दूर वे ॥ २ ॥
जिन्द[5] अजूनी बेनमूनी, जागता गुरु पीर वे।
उलट पट्टन मेरु चढ़ना, लहम दरिया तीर वे ॥ ३ ॥
अजब साहब है सुभानं, खोज दम का कौन वे।
तिर्कुटी के घाट चढ़ कर, ध्यान धर दुरबीन वे ॥ ४ ॥
अजब दरिया है हिरंबर[6], परम हंस पिछान वे।
आब खाक न बाद आतिस[7], ना जमीं असमान वे ॥ ५ ॥
अलख आप अलाह साहब, कुर्स कुंज जहूर वे।
अर्स ऊपर महल मालिक, दर झिलमिला नूर वे ॥ ६ ॥
मौला करीम खुदाय खूबी, धुन सोहंसो जाप वे।
बाँग रोज निमाज कलमा, है सबद गरगाप वे ॥ ७ ॥
निर्भय निहंगम[8] नाद बाजै, निरख कर टुक देख वे।
अरसी अजूनी जिंद जोगी, अलख आदि अलेख वे ॥ ८ ॥
मढ़ी महल न तासु के, आसन अचंभी ऐन वे।
पाजी गुलाम गरीब तेरा, देखता सुख चैन वे ॥ ९ ॥

(२)

बंदे खोज पैंड़ा पकर वे।
लेखा सरे[9] में लीजियेगा, कर धनी का जिकर वे ॥ १ ॥

---

(१) बाप। (२) मा। (३) शक्तिमान। (४) छिन में। (५) जिन्दा, जीता जागता। (६) निर्मल। (७) पानी, मिट्टी, हवा, आग। (८) निःअहंकार, मतवाला। (९) दरबार (शरअ ?)।

जिकर फिकर फरियाद कर ले, अंदरूनी अरस वे।
हाली मवाली[1] याद कीजे, ना सरे में तरस वे ॥ २ ॥
रसना रँगीली राम जप ले, अलख कादिर आप वे।
पीराँ फकीराँ परस ले, पूजो सनेही साध वे ॥ ३ ॥
दरगह मिटै जो डंड तेरा, नेकी निरंतर राख वे।
नापैद से पैदा किया, तूँ नाम बिन नापाक वे ॥ ४ ॥
दिल सफा कर सैलान कीजै, बंक मारग बाट वे।
इला पिंगला सुषमना, तूँ उतर औघट घाट वे ॥ ५ ॥
बंक नाल बिसाल बहना, है अमी रस अरस वे।
रसना बिहूना[2] राग गावे, बिना चसमों दरस वे ॥ ६ ॥
प्याला अमी रस पीजिये, खुलिहै बजर कपाट वे।
अरस कुरस अबंध अवगत, कोल्हू चवै बिन लाट[3] वे ॥ ७ ॥
निरभै निरन्तर नेम रख, अकला[4] अनाहद रात वे।
मुकता मुलायम याद साहब, दूर कर दिल घात वे ॥ ८ ॥
जोगी बिजोगी बिंद रख[5], सुन में समाना सिंध वे।
हाजिर गुलाम गरीब है, सोलह कला रबि चंद वे ॥ ९ ॥

(३)

बंदे देख ले दरहाल वे।
सुन्न मंडल सैल करले, अजब गैबी ख्याल वे ॥ १ ॥
जबरूत[6] पर नासूत[6] है, नासूत पर मलकूत[6] वे।
मलकूत पर लाहूत[6] है, लाहूत पर अनभूत[6] वे ॥ २ ॥
सुन ले सोहंसो जाप कूँ, सुन[6] में सिलहरा बाँध वे।
सेस के सिर ध्यान धरिये, उलट स्वर कूँ साध वे ॥ ३ ॥
तीन मूरत निरख निःचल, पैठ देख पताल वे।

---

(१) दर्बारी, प्रेमीजन। (२) बिना। (३) बिना जाठ के कोल्हू टपकता है। (४) अँधेरी। (५) जो बीर्य्य को पात न होने दे। (६) अंतरी मुकामों के नाम।

मूल चक्र गनेस गैबी, रंग रूप बिसाल वे ॥ ४ ॥
दंड-धारी भुजा भारी, मुकुट की छबि खूब वे।
अगमी अनाहद अदल है, फजली फजल महबूब वे ॥ ५ ॥
टुक उलट चसमैं सिंध में, झलकै जलाबिंब[1] जोर वे।
अजब रास बिलास बानी, चंद सूर करोर वे ॥ ६ ॥
हलका न भारी है मुरारी, अजब नूरी नैन वे।
दिल मगज अंदर महल है, तूँ समझ ले यह सैन वे ॥ ७ ॥
इक गुमठ[2] अटल अनाद है, ढुरते सुहंगम चौंर वे।
सेत छत्तर सीस सोहै, अजब उज्जल भौंर वे ॥ ८ ॥
अजब नूर जहूर जोती, झिलमिलै झलकंत वे।
हाजिर गुलाम गरीब है, जहँ देख आदि न अंत वे ॥ ६ ॥

(४)

बंदे देखले दुरबीन वे।
ऐनक उघार बिकार खोलो, चलै जल बिन मीन वे ॥ १ ॥
बिना जल जहँ मीन चलता, नाम नौका अधर वे।
बेड़े बिमान अमान देखो, को लखै यह कदर वे ॥ २ ॥
पानी बिना सरवर सरू[3], जहँ फूल है गुलजार वे।
अधर बाग अनंत फल, कायम कला करतार वे ॥ ३ ॥
कर निगाह अगाह आसन, बरसता बिन बदर[4] वे।
बिन पखावज ताल सुर, बाजे बजैं जहँ मधुर वे ॥ ४ ॥
बानी बिनोद असोधपुर, चंदा नहीं जहाँ सूर वे।
पानी पवन नहिं भवन भारी, कला संख सपूर वे ॥ ५ ॥
कायम कुफल कुंजी लगी, खोले सोई सत पीर वे।
कहता गरीब तबीब, तन चंगा करत कबीर वे ॥ ६ ॥

---

(१) जल में परछाईं। (२) गुम्बज़। (३) सर्व का पेड़। (४) बादल।

(५)

बंदे देखले निज मूल वे।
कला कोटि असंख धारा, अधर निरगुन फूल वे ॥ १ ॥
है अबंच असंच अवगत, अधर आदि अनाद वे।
कमल मोती जगमगै, जहँ सुरत निरत समाध वे ॥ २ ॥
भवन भारी रवन सोभा, भजो राम रहीम वे।
साहब धनी कूँ याद कर, जप अलह अलख करीम वे ॥ ३ ॥
मादर पिदर हैं संग तेरे, बिछुरता नहिं पलक वे।
कायम कला कुरबान जाँ, खालिक बसे है खलक वे ॥ ४ ॥
खालिक धनी है खलक में, तूँ झलक पलक समोय वे।
अरस आसन है बिहंगम, अधर चसमे जोय वे ॥ ५ ॥
बैराट में इक घाट है, उस घाट में इक द्वार वे।
उस द्वार में इक देहरा, जहँ खूब है इक यार वे ॥ ६ ॥
सूझ[१] है दिलदार साहब, देखना नहिं भूल वे।
गरीबदास निवास नग[२] पर, भई सेजाँ सूल वे ॥ ७ ॥

(६)

बंदे अधर बेड़ा चलत वे।
साँच मान सुगंद[३] साहब, नहीं करिया लगत वे ॥ १ ॥
अधर पुहमी अधर गिरवर, अधर सरवर ताल वे।
अधर नदियाँ बहत हैं जहँ, अधर हीरे लाल वे ॥ २ ॥
अधर नौका अधर खेवट, अधर पानी पवन वे।
अधर चंदा अधर सूरज, अधर चौदह भुवन वे ॥ ३ ॥
अधर बागं अधर बेलं, अधर कूप तलाव वे।
अधर माली कुहकता है, अधर फूल खिलाव वे ॥ ४ ॥

---

(१) प्रकाशमान। (२) ऊँचा स्थान। (३) कसम।

अधर बँगला अधर डेवढ़ी, अधर साहब आप वे।
अधर पुर गढ़ हूँठ नगरी, नाभि नासा माथ वे ॥ ५ ॥
हूँठ हाथ हजूर हासिल, अधर पर इक अधर वे।
गरीबदासं अधर ध्यानी, ओढ़ि एकै चदर[1] वे ॥ ६ ॥

(७)

बंदे पाक नाम पिछान वे।
पाक मेला पाक परबी, पाक है असनान वे ॥ १ ॥
पाक सेवा पाक पूजा, पाक सालिग्राम वे।
पाक चंदन पाक अरचन, पाक है वह धाम वे ॥ २ ॥
पाक संखा पाक झालर[2], पाक है वो तूर[3] वे।
पाक बीना पाक घंटा, पाक यारा नूर वे ॥ ३ ॥
पाक सिज्जा[4] पाक आसन, पाक है वह तख्त वे।
पाकै पुजारी पूजता, जो पाक है सब रख्त[5] वे ॥ ४ ॥
पाक कुरसी पाक तुरसी[6], पाक माला फेर वे।
पाक रागी पाक गावै, पाक नादं भेर[7] वे ॥ ५ ॥
पाक भौंरा पाक चौंरा, पाक पुस्पं गंध वे।
पाक मोती पाक हंसा, पाक सरवर सिंध वे ॥ ६ ॥
पाक लहरा पाक मिहरा, पाक सूरज चंद वे।
पाक सस्तर पाक बस्तर, पाक पुर आनंद वे ॥ ७ ॥
पाक बानी पाक प्रानी, पाक बोलनहार वे।
गरीबदासं पाक होकर, पाक कर दीदार वे ॥ ८ ॥

॥ रमैनी ॥

जब लग हंसा हमरी आना। तब लग लगै न तुमरा[8] बाना ॥
दोही दे गुरु भरैं हँकारा[9]। तिन हंसों की चढ़ूँ पुकारा ॥

---

(१) चोला, शरीर। (२) झाँझ। (३) तुरही। (४) पलंग। (५) सामान। (६) तुलसी। (७) शहनाई। (८) धर्मराय से कह रहे हैं। (९) गुरु की दोहाई देकर हाँक मारैं।

कोटि कटक करहूँ पैमाला। जम किंकर का तोड़ूँ जाला॥
चौदह कोट बाँध जम लाऊँ। धरमराय कूँ त्रास दिखाऊँ॥
चौदह भुवन दुहाई गाजै। जिस कूँ सुन जम किंकर भाजै॥
भक्ति बीज जो होवै हंसा। कोटिन जीव उधारै बंसा॥
उधरैं हंस पार हो जाहीं। भवसागर में बहुर न आहीं॥

॥ साखी ॥

सब्द हमारा मानि है, जाके हिरदय हेत।
अमर लोक पहुँचावहूँ, रूप धरत है सेत॥

कहैं कबीर सुनो धर्मराया। हम संखों हंसा पद परसाया॥
जिन लीन्हा हमरा परवाना। सो हंसा हम किये अमाना[1]॥
अमृत पान अमी रस चोखा। पीवो हंसा नाहीं धोखा॥
या रस की जो लगै खुमारी। गगन मँडल में सुन्न अधारी॥
झरै अमी रस अमृत धारा। जानैगा कोइ पीवनहारा॥
हंस परेवा[2] अमृत पीवै। संखों कल्प जुगै जुग जीवै॥
टूटै बंधन होत खुलासा। गरीबदास पद हंस निवासा॥

(२)

सेत सिंघासन सेतहि अंगा। सेत छत्र जाको सेतहि रंगा॥
सेत खवास सेत ही चौंरा। सेतै पुहुप लेत ही भौंरा॥
सेतै नाद सेत ही तूरा। सेत सिंघासन नाचै हूरा[3]॥
सेतै नदी सेत ही बिरछा। सेतै चंदन मस्तक चरचा[4]॥
सेत सरोवर सेतहि हंसा। सेतै जा का सब कुल बंसा॥
सेतै मंदिर चंदर जोती। सेतै मानिक मुक्ता मोती॥
सेतै मुकुट सेत ही थाना। सेत धुजा औ सेत निसाना॥
गरीबदास वह धाम हमारा। सुर नर मुनि जन करो बिचारा॥

---

(१) निश्चिन्त। (२) कबूतर। (३) अप्सरा। (४) लगाया।

(३)

बिनहीं पंथ पंथ है भाई। बिन चरनों चालै सो जाई ॥
बिनहीं देह धरै जहँ ध्याना। देह न गेह[1] न पिंड न प्राना ॥
पिंड ब्रह्मंड बाक नहिं बानी। मन बुधि सेती अगम निसानी ॥
अलिफ इलाम[2] गाम नहिं गेहा। गगन मँडल में जुरा सनेहा ॥
एता ईलम[3] जो दिखलावै। सो सतगुरु साँचा कहलावै ॥
गरीबदास मन धरै न धीरं। अधर धार पंथ बाट कबीरं ॥६॥

(४)

रूप न रेख भेष नहिं बाना। आसन असल लना[4] अस्थाना ॥
अकल अभूनी[5] गम नहिं मोरी। हे सतगुरु कहँ पाऊँ डोरी ॥
ऊँचा धाम गाम नहि कोई। बिना चरन जहँ चलना होई ॥
अचरज लीला अगम अपारा। कैसे पाऊँ पंथ तुम्हारा ॥
सुरत निरत का सार सनेसा[6]। उतरै हंसा पार हमेसा ॥
कहै कबीर पुरुष बरियामं[7]। गरीबदास इक नौका नामं ॥

(५)

आदि सनातन पंथ हमारा। जानत नाहीं यह संसारा ॥
पंथों सेती पंथ अलहदा। भेखों बीच पड़ा है बहदा[8] ॥
षट दरसन सब खटपट होई। हमरा पंथ न पावै कोई ॥
हिन्दू तुरक कदर नहिं जाने। रोजा ग्यारस करै धिक ता ने[9] ॥
दोनों दीन यकीन न आसा। वे पूरब वे पछिम निवासा ॥
दुहूँ दीन का छोड़ा लेखा। उत्तर दक्खिन में हम देखा ॥
गरीबदास हम निःचै जाना। चारो खूँट दसो दिस ध्याना ॥

(६)

कैसे हिंदू तुरक कहाया। सबही एकै द्वारे आया ॥ १ ॥

---

(१) घर। (२) अल्लाह में अलिफ और लाम दो हर्फ हैं—अलाम के अर्थ सर्वज्ञ के भी हैं। (३) विद्या। (४) लामकान। (५) तुच्छ बुद्धि। (६) सँदेसा। (७) श्रेष्ठ। (८) बाद बिबाद। (९) मुसलमान रोजा रखते हैं और हिन्दू एकादशी का ब्रत सो दोनों को धिक्कार है।

कैसे ब्राह्मन कैसे सूद्रं । एकै हाड़ चाम तन गूदं ॥ २ ॥
एकै बिंद एक भग द्वारा । एकै सब घट बोलनहारा ॥ ३ ॥
कौम छतीस एकही जाती । ब्रह्म बीज सबकी उतपाती ॥ ४ ॥
एकै कुल एकै परिवारा । ब्रह्म बीज का सकल पसारा ॥ ५ ॥
ऊँच नीच इस बिध है लोई । कर्म कुकर्म कहावै दोई ॥ ६ ॥
गरीबदास जिन नाम पिछाना । ऊँच नीच पद ये परमाना ॥७॥

॥ आरती ॥

अदली आरत अदल समोई । निरभय पद में मिलना होई ॥टेक
दिल का दीप पवन की बाती । चित का चंदन पाँचो पाती ॥
तत का तिलक ध्यान की धोती । मन की माला अजपा जोती ॥
नूर के दीप नूर के चौंरा । नूर के पुहुप नूर के भौंरा ॥
नूर की झाँझ नूर की झालर[1] । नूर के सँख नूर की टालर[2] ॥
नूर की साँझी[3] नूर की सेवा । नूर के सेवक नूर के देवा ॥
आदि पुरुष अदली अनुरागी । सुन संपुट में सेवा लागी ॥
खोजो कमल सुरति की डोरी । अगर दीप में खेलो होरी ॥
निरभय पद में निरत समानी । दासगरीब दरस दरबानी ॥

(२)

अदली आरत अदल उजारा । सत्त पुरुष दीजो दीदारा ॥टेक
कैसे कर छूटै चौरासी । जूनी संकट बहुत तिरासी ॥
जुगन जुगन हम कहते आये । भवसागर से जीव छुटाये ॥
कर बिस्वास स्वास कूँ पेखो । या तन में मन मूरत देखो ॥
स्वासा पार सु भेद हमारा । जो खोजे सो उतरे पारा ॥
स्वासा पार सु आदि निसानी । जो खोजै सो होय दरबानी ॥
हर दम नाम सुहंगम सोई । आवा गमन बहुर ना होई ॥

---

(१) बिजय घंट । (२) ताल । (३) रंग या फूल पत्ती की चित्रकारी जो ठाकुरजी के सामने बनाई जाती है ।

अब तो चढ़े नाम के छाजै[१] । गगन मँडल में नौबत बाजै ॥
अगर अलेल सब्द सहदानी । दासगरीब बिहंगम बानी ॥

(३)

अदली आरत अदल बखाना । कोली बुनै बिहंगम ताना ॥टेक
ज्ञान का राछ[२] ध्यान की तुरिया । नाम का धागा निःचै जुरिया ॥
प्रेम की पान[३] कमल की खाड़ी[४] । सुरत का सूत बुनै निज गाढ़ी ॥
नूर की नाल[५] फिरैं दिन राती । जा कोली कूँ काल न खाती ॥
कल का खूँटा धरनी[६] गाड़ा । गहिर गझीना[७] ताना गाड़ा ॥
निरत की नली बुनै जो कोई । सो तो कोली अविचल होई ॥
रेजा[८] राजिक का बुन दीजै । ऐसे सतगुरु साहब रीझै ॥
दासगरीब सोई सत कोली । ताना बुनिहै अरस अमोली ॥

(४)

अदली आरत अदल अजूनी । नाम बिना है काया सूनी ॥टेक
झूठी काया खाल लुहारा । इला पिंगला सुखमन द्वारा ॥
किरतघनी[९] भूले नर लोई । जा घट निःचा नाम न होई ॥
सो नर कीट पतंग भुवंगा[१०] । चौरासी में धरिहैं अंगा ॥
उद्भिज[११] खानी भुगतै प्रानी । समझै नहीं सब्द सहदानी ॥
हम हैं सब्द सब्द हम माहीं । हम से भिन्न और कछु नाहीं ॥
पाप पुन्न दो बीज बनाया । सब्द भेद कोउ बिरले पाया ॥
सब्दै सर्ब लोक में गाजै । सब्द वजीर सब्द है राजै ॥
सब्दै स्थावर जंगम जोगी । दास गरीब सब्द रस भोगी ॥

(५)

अदली आरत अदल जमाना । जम जोरा मेटौं तलबाना ॥टेक
धरमराय पर हमरी धाई[१२] । नौबत नाम चढ़े ले भाई ॥

---

(१) छज्जा । (२) एक आला कपड़ा बुनने का जो कंघी की सूरत का होता है । (३) माड़ी । (४) गड्ढा जिसमें पैर लटका कर बैठते हैं । (५) ढरकी । (६) जमीन । (७) गझिन । (८) कपड़ा । (९) नाशुक्रा । (१०) साँप । (११) बनस्पति । (१२) धावा ।

चित्रगुप्त[१] के कागज चीरौं। जुगन जुगन मेटौं तसकीरौं ॥
अदली ज्ञान अदल इक रासा[२]। सुन कर हंसन[३] पावैं त्रासा ॥
इजराईल[४] जुसा बरदाना। धरमराय का है तलबाना ॥
मेटौं तलब करौं तागीरा[५]। भेंटे दास गरीब कबीरा ॥

(६)

अदली आरत अदल पठाऊँ। जुगन जुगन का लेखा पाऊँ॥टेक
जा दिन नहिं थे पिंड न प्राना। पानी पवन जिमीं असमाना॥
कच्छ मच्छ कूरम नहिं काया। चंद सूर नहिं दीप बनाया ॥
सेस महेस गनेस न ब्रह्मा। नारद सारद ना बिसकर्मा ॥
सिध चोरासो ना तेंतीसौ। नौ औतार नहीं चौबीसौ ॥
पाँच तत्त नाहीं गुन तीना। नाद बिंद नाहीं घट सीना ॥
चित्रगुप्त[६] नहिं किर्तृम बाजी। धरमराय नहिं पंडित काजी ॥
धुँधूकार अनंत जुग बीते। जा दिन कागद कोउ के चीते[७] ॥
जा दिन थे हम तखत खवासा। तन के पाजी सेवक दासा ॥
संख जुगन परलूँ परवाना। सत्तपुरुष के संग रहाना ॥
दास गरीब कबीर का चेरा। सत्तलोक अमरापुर डेरा ॥

(७)

ऐसी आरत अपरम्पारा। थाके ब्रह्मा बेद उचारा ॥टेक
अनंत कोट जाके संभू ध्यानी। ब्रह्मा संख बेद पढ़ैं बानी ॥
इंद्र अनंत मेघ रस माला। सब्द अतीत वृद्ध नहिं बाला ॥
चंद सूर जाके अनंत चिरागा। सब्द अतीत अजब रँग बागा॥
सात समुद्र जाके अंजन नैना। सब्द अतीत अजब रँग बैना॥
अनंत कोट जाके बाजे बाजैं। पूरन ब्रह्म अमरपुर छाजैं ॥
तीस कोट रामा औतारी। सीता संग रहंती नारी ॥

(१) जमपुरी में कर्मों का लेखा रखने वाला देवता। (२) एक रस। (३) जीव। (४) जान निकालने वाले फिरिश्ते का नाम। (५) तंगी। (६) कर्मों का लेखा रखने वाले देवता। (७) तब तक कर्मों का हिसाब किसी का नहीं खुला था।

तीन पदम जाके भगवाना। सप्त नील[1] कन्हवा[2] सँग जाना॥
तीस कोट सीता सँग चेरी। सप्त नील राधा दें फेरी॥
(जाके) अर्ध रूप पै सकल पसारा। ऐसा पूरन ब्रह्म हमारा॥
दास गरीब कहै नर लोई। यह पद चीन्है बिरला कोई॥

॥ दोहा ॥

सतबादी सब संग हैं, आप आपने धाम।
आजिज[3] की अरदास[4] है, सकल संत परनाम॥

॥ राग कल्यान ॥

सेस सहस मुख गावै, साधो सेस सहस मुख गावै ॥टेक॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसर थाके, नारद नाद बजावै।
सनक सनंदन ध्यान धरत हैं, दृष्ट मुष्ट नहिं आवै॥ १॥
लघु दीरघ कछु कहा न जाई, जो पावै सो पावै।
जी[5] जूनी कूँ कैसे दरसै, गौरज सीस चढ़ावै॥ २॥
ब्रह्म रंध्र का घाट जहाँ है, उलट खेचरी[6] लावै।
सहस कमल दल झिलमिल रंगा, चोखा फूल चुवावै॥ ३॥
गंगा जमना मद्ध सरसुती, चरन कमल से आवै।
परबी कोटि परम पद माहीं, सुख के सागर न्हावै॥ ४॥
सुरत निरत मन पौन पदारथ, चारो तत्त मिलावै।
आकासै उड़ चलै बिहंगम, गगन मँडल कूँ धावै॥ ५॥
मोर मुकुट पीतांबर राजै, कोटि कला छबि छावै।
अबरन बरन तासु के नाहीं, बिचरत हैं निरदावै॥ ६॥
बिनही चरनों चलै चिदानंद, बिन मुख बैन सुनावै।
गरीबदास यह अकथ कहानी, ज्यूँ गूँगा गुड़ खावै॥ ७॥
कबहुँ न होवे मैला नाम धन, कबहुँ न होवे मैला।
चेतन होकर जड़ कूँ पूजै, मूरख मूढ़र बैला॥ १॥

---

(१) नील=एक सौ खरब। (२) कन्हैया या कृष्ण। (३) आधीन। (४) अर्जदाश्त, प्रार्थना। (५) जीव। (६) नाम एक मुद्रा का।

जिस दगड़े पंडित उठ चालै, पीछे पड़ गया गैला[१] ।
औघट घाटी पंथ बिकट है, जहाँ हमारी सैला ॥ २ ॥
बिनय बंदगी म्हेसा[२] कीजै, बोक[३] बनै के खैला[४] ।
कूकर सूकर खर कीजैगा, छाँड़ सकल बद फैला[५] ॥ ३ ॥
घरही कोस पचास परत हैं, ज्यूँ तेली के बैला ।
पीसत भाँग तमाखू पीवै, मूरख मुख सूँ मैला ॥ ४ ॥
सहस इकीसौ छः सै दम है, निस बासर तूँ लैला[६] ।
गरीबदास सुन पार उतर गये, अनहद नाद घुरैला[७] ॥ ५ ॥

(३)

घट ही में चंद चकोरा, साधो घट ही चंद चकोरा ॥टेक॥
दामिन दमकै घनहर[८] गरजै, बोलै दादुर मोरा ।
सतगुरु गस्ती गस्त फिरावै, फिरता ज्ञान ढँढोरा ॥ १ ॥
अदली राज अदल बादसाही, पाँच पचीसो चोरा ।
चीन्हो सब्द सिंध घर कीजै, होना गारतगोरा ॥ २ ॥
त्रिकुटी महल में आसन मारो, जहँ न चलै जम जोरा ।
दास गरीब भक्ति को कीजो, हुआ जात है भोरा[९] ॥ ३ ॥

(४)

घट से दरस जहूरा, साधो घट से दरस जहूरा ॥टेक॥
कायर कीर उलट कर भागे, पहुँचैगा कोइ सूरा ।
गगन मँडल में अनहद बाजै, झनकैं झीने तूरा[१०] ॥ १ ॥
त्रिकुटी महल में ध्यान समोवो, झिलमिल झिलमिल नूरा ।
अगर दीप में आसन मारो, मिट गई जम की घूरा[११] ॥ २ ॥
संख पदम जहँ परघट देखे, मुरसिद मिलिया पूरा ।
दास गरीब अटल जागीरा, काढ़ै कौन कसूरा ॥ ३ ॥

---

(१) जिस रास्ते पर पंडित चलते हैं उसी पर सब चलने लगते हैं । (२) हमेशा । (३) भारी बकरा । (४) साँड़ । (५) कुकर्म्म । (६) लेता है । (७) जिसकी अन्तर में धुन हो रही है । (८) बादल ।(९) सबेरा । (१०) तुरही । (११) टेढ़ी निगाह ।

(५)

जो सूते सो जना बिगूते[1], जागे सोई जगे हैं ॥टेक॥
सूरे तेई नगर पहूँचे, कायर उलट भगे हैं।
नौवें द्वारे दरस दरीबा[2], दसमें ध्यान लगे हैं ॥ १ ॥
सुन्न सहर में हुई सगाई, हमरे हंस मँगे हैं।
निरगुन नाम निरालँब चीन्हो, हमरे साध सगे हैं ॥ २ ॥
बिन मुख बानी सतगुरु गावै, नाहीं दस्त[3] पगे[4] हैं।
दास गरीब अमर पुर डेरे, सत्त के दाग दगे हैं ॥ ३ ॥

(६)

नाम निरंजन नीका, साधो नाम निरंजन नीका ॥टेक॥
तीरथ बरत थोथरे[5] लागैं, जप तप संजम फीका ॥ १ ॥
भजन बंदगी पार उतारै, समरथ जीवन जी का ॥ २ ॥
करम कांड ब्योहार करत है, नाम अभय पद टीका ॥ ३ ॥
कहा भयो छत्र की छाँह चलैया, राज पाट दिहली का ॥ ४ ॥
नाम सहित बेवतन भला है, दर दर माँगै भीखा ॥ ५ ॥
आदि अनादि भक्ति है नौधा[6], सुनो हमारी सीखा ॥ ६ ॥
गरीबदास सतगुरु की सरनै, गगन मँडल में दीखा ॥ ७ ॥

॥ राग बिजोग ॥

सुनियो संत सुजान, दिया मैं हेला रे ॥टेक॥
और जनम बहुतेरे होंगे, मानुष जनम दुहेला[7] रे ॥ १ ॥
तू जकिहै[8] मैं लसकर जोरों, चलना तुझे अकेला रे ॥ २ ॥
अरब खरब लग माया जोरी, संग न चलसी धेला रे ॥ ३ ॥
या तो मेरी सत की निबरिया, सतगुरु पार पहेला रे ॥ ४ ॥
दास गरीब कहै रे संतो, सब्द गुरू चित चेला रे ॥ ५ ॥

---

(१) बिगड़े। (२) हाट। (३) हाथ। (४) पाँव। (५) थोथे। (६) नौ प्रकार की। (७) कठिन। (८) बिचारता है।

(२)

सुनिये संत सुजान, गरब नहिं करना रे ॥ टेक ॥
चार दिनाँ की चिहर[1] बनी है, आखिर तोकूँ मरना रे ॥ १ ॥
तूँ जाने मेरि ऐसी निभेगी, हर दम लेखा भरना रे ॥ २ ॥
खाय ले पी ले बिलस ले हंसा, जोड़ जोड़ नहि धरना रे ॥ ३ ॥
दास गरीब सकल में साहब, नहीं किसी सूँ अड़ना रे ॥ ४ ॥

॥ राग परज ॥

राम न जाना रे, मूढ़ नर राम न जाना रे ॥टेक॥
जल की बुंद महल रचा, यह सकल जहाना रे।
जठर अगिन सूँ राखिया, तेरा पिड अरु प्राना रे ॥ १ ॥
जहँ तो कूँ भोजन दिया, अमृत रस खाना रे।
गरभ बास तें काढ़ि कै, नर बाहर आना रे ॥ २ ॥
लीला अगम अगाध है, सूरत बिध नाना रे।
मात पिता सुत बंधवा, क्या देख भुलाना रे ॥ ३ ॥
इनमें तेरा को नहीं, क्यों भया दिवाना रे।
जा तन चंदन लेपते, ले धरे मसाना रे ॥ ४ ॥
सूवे सेंभल सेइया, तर देख लुभाना रे।
चंच[2] मार ब्याकुल भया, बहुतै पछताना रे ॥ ५ ॥
मानसरोवर कमल दल, घर दूर पयाना रे।
गये रसातल राह को, पढ़ पोथी पाना[3] रे ॥ ६ ॥
सतगुरु संत सेये नहीं, पूजे पाषाना रे।
मरकब भये कुम्हार के[4], फिर सूकर स्वाना रे ॥ ७ ॥
पंथ पुरातम[5] बूझि है, कोई संत सुजाना रे।
स्वासा पारस नाम है, नाभी अस्थाना रे ॥ ८ ॥

(१) जिन्दगी। (२) चोंच। (३) पन्ना। (४) कुम्हार के चढ़ने का जानवर यानी गधा।
(५) प्राचीन।

हिरदय में हरि पाइये, त्रिकुटी परवाना रे।
गगन मँडल में गुमठ[1] है, जहँ धसा निसाना रे ॥ ९ ॥
हाजिर नाजिर है धनी, साहब दिल दाना रे।
पलकों चौंरा[2] कीजिये, तापर कुरबाना रे ॥१०॥
मन पवन सुरत से अगम है, कह निरत बयाना रे।
जैसे उलट अकास कूँ, धरिहै धुन ध्याना रे ॥११॥
आसन बंध अडोल मन, जो पर्दाह समाना रे।
गरीबदास यूँ पाइये, पिव पुरुष पुराना रे ॥१२॥

(२)

लेखा लीजै रे, धनी के लेखा लीजै[3] रे ॥टेक॥
हाट पटन सब लुट गये, कहु अब क्या कीजै रे।
पूँजी माल गँवाइया, फिर कौन पतीजै रे ॥ १ ॥
मैं गाफिल भूला फिरूँ, गढ़ हंस चढ़ीजै रे।
चाकर चोर अनादि का, सिर बोझा दीजै रे ॥ २ ॥
सीस काट हाजिर करै, जब सतगुरु रीझै रे।
अमी महारस नाम है, अमृत पय पीजै रे ॥ ३ ॥
गगन मँडल भाठी झरै, कमला दल भीजै रे।
सब्द अनाहद घोर है, चल हंस सुनीजै रे ॥ ४ ॥
पूँजी साहूकार की, यह हर दम छीजै रे।
गरीबदास दूने करै, सो साह कहीजै रे ॥ ५ ॥

(३)

लेखा देना रे, धनी का लेखा देना रे ॥ टेक ॥
रागी राग उचारहीं, गावत मुख बैना रे।
हस्ती घोड़े पालकी, छाँड़ी सब सैना रे ॥ १ ॥
रोकड़ धरी ढकी रही, सब जेवर गहना रे।

---

(१) गुम्बज। (२) चँवर। (३) ईश्वर के यहाँ हिसाब लिया जायगा।

फूँक दिया मैदान में, कुछ लेन न देना रे ॥ २ ॥
मुगदर मारै सीस में, जम किंकर दहना रे।
उतर चला तागीर[१] हो, ज्यूँ मरदक सहना[२] रे ॥ ३ ॥
फूला सो कुम्हलात है, चुनिया सो ढहना[३] रे।
चित्रगुप्त लेखा लिया, जब कागद पहना[४] रे ॥ ४ ॥
चलिये अब दीवान में, सतगुरु से कहना रे।
मुसकिल से आसान हो, ज्यूँ बहुर मरै ना रे ॥ ५ ॥
बोया अपना सब लुनै[५], पकरैं हम अहना[६] रे।
चरन कमल के ध्यान से, छूटै सब फैना[७] रे ॥ ६ ॥
परानन्दनी[८] संग है, जाके कमधैना[९] रे।
गरीबदास फिर आवही, जो अजर जरै ना रे ॥ ७ ॥

(४)

भजन कर राम दुहाई रे ॥ टेक ॥
जनम अमोला तुझ दिया, नर देही पाई रे।
देही कूँ या ललचहीं, सुर नर मुनि भाई रे ॥ १ ॥
सनकादिक नारद रटैं, चहुँ बेदा गाई रे।
भक्ति करै भवजल तरै, सतगुरु सरनाई रे ॥ २ ॥
मिरगा[१०] कठिन कठोर है, कहो कहाँ डहकाई[११] रे।
कस्तूरी है नाभ में, बाहर भरमाई रे ॥ ३ ॥
राजा बूड़े मान में, पंडित चतुराई रे।
ज्ञान गली में बंक[१२] है, तन धूर मिलाई रे ॥ ४ ॥
उस साहब कूँ याद कर, जिन सौंज[१३] बनाई रे।
देखत ही हो जात है, परबत से राई रे ॥ ५ ॥

---

(१) तंग। (२) मसल मशहूर है "उतरा शहना मर्दक नाम"। (३) जो घर चुना या बनाया जाता है वह कोई दिन गिर जायगा। (४) लंबा चौड़ा। (५) काटै। (६) लोहा। (७) फन्दा। (८) परम आनन्द या रस की खान। (९) कामधेनु। (१०) मन। (११) धोका खाया। (१२) टेढ़ाई, पेच। (१३) साज।

कंचन काया छार[1] होय, तन ठोंक जराई रे।
मूरख भोंदू बावरे, क्या मुकत कराई रे॥ ६॥
चमरा[2] जुलहा[3] तर गये, और छीपा[4] नाई[5] रे।
गनिका चढ़ी बिमान में[6], सुर्गापुर जाई रे॥ ७॥
स्योरी भिलनी तर गई, और सदन कसाई रे।
नीच तरे तो सूँ कहूँ, नर मूढ़ अन्याई रे॥ ८॥
सब्द हमारा साँच है, और ऊँट की बाई रे[7]।
धूँएँ के से धौलहर, तिहु[8] लोक चलाई रे॥ ९॥
कलबिष कसमल सब कटै, तन कंचन काई रे।
गरीबदास निज नाम है, नित परबी न्हाई रे॥१०॥

राग मंगल

लगन लगी सतलोक, अमरपुर चालिये।
सुन्न मँडल सतलोक, दीप घर बालिये॥ टेक॥
जोगिया नाद बजाय, रहा है ओलने[9]।
सत्तलोक के अंक, लिखे हैं चोलने॥ १॥
हम बिभिचारिन, चोरि जारि बहुतै किये।
मेहरबान महबूब, तुम्हीं अनगिन दिये[10]॥ २॥
होते कीट पतंग, संग किस बिध लिये।
कपै जोरा काल, सही जुग जुग जिये॥ ३॥
अकल उदासी राग, अमर[11] में बोलता।
सुरत निरत भइ नेस[12], पवन नहिं डोलता॥ ४॥
मन राते सतलोक, सिंध में गैब है।
उलट मिले अनुराग, तहाँ नहिं ऐब है॥ ५॥

---

(१) राख। (२) रैदास जी। (३) कबीर साहब। (४) नामदेव। (५) सेना भक्त। (६) नोट पृष्ठ २१ देखो। (७) सब्द के सिवाय सब पसारा ऊँट की बाव अर्थात् मिथ्या है। (८) तीनों। (९) परदे में। (१०) तुम्हारी अपार छिमा और दया हुई। (११) सत्तलोक। (१२) नेष्ठा।

निरगुन झड़[1] का भेद, भँवर कोइ जानसी ।
दास गरीब समाध, अमरपुर ठानसी ॥ ६ ॥

(२)

दीन के दयाल, भक्ति बिर्द[2] दीजिये ।
खानाजाद गुलाम, अपन कर लीजिये ॥ १ ॥
खानाजाद गुलाम, तुम्हारा है सही ।
मेहरबान महबूब, जुगन जुग पत रही ॥ २ ॥
बाँदी-जाम[3] गुलाम, गुलाम गुलाम है ।
खड़ा रहै दरबार, सु आठो जाम है ॥ ३ ॥
सेवक तलबदार[4], दर तुम्हरे कूकहीं ।
औगुन अनँत अपार, परी मोहि चूक हीं ॥ ४ ॥
मैं घर का बन्दाजादा, अरज मोरि मानिये ।
कहता दास गरीब, अपन कर जानिये ॥ ५ ॥

(३)

धन सतगुरु बरियाम[5], अटल बर हम बरी ।
दुलहिन के बड़ भाग, सुहागिन धन घरी ॥ टेक ॥
चलो सखी सतलोक, सेहरा गाइये ।
मोतियन थाल भराय, सु चौक पुराइये ॥ १ ॥
हलदवान[6] हित कीन, बीन जहँ बाजहीं ।
धन सतगुरु उपदेस, दिहाड़ा[7] आजहीं ॥ २ ॥
दुलहिन धोये देह, सु मंगल गावहीं ।
सत्त पुरुष के धाम, सु चौंर ढुरावहीं ॥ ३ ॥
ढुरै सुहंगम चौंर, सु चौंरी[8] गाइये ।
ब्रह्मा कथते बेद, लाड़ी परनाइये[9] ॥ ४ ॥

---

(१) झाड़, फुलवारी । (२) साख । (३) लौंडी-बच्चा । (४) तनख़ाह पानेवाले । (५) वरीयान-श्रेष्ठ । (६) हल्दीहाथ की रसम । (७) दिन । (८) मंडप की गीत । (९) दुलहिन को ब्याहिये ।

संकर साहा सोध[1], समागम कीजिये।
बिसुन बिसंभर रोप, अटल बर दीजिये ॥ ५ ॥
नारद पूरै नाद, सकल सुर आवहीं।
सुन्न मँडल सतलोक, अगम घर छावहीं ॥ ६ ॥
जहँ सेत धजा फहराहिं, अरस[2] तंबू तना।
अनहद नाद अगाध, लाये नूरी बना[3] ॥ ७ ॥
नाद तूर डफ झाँझ, संख मुरली बजै।
मिरदंग झालर भेरि, अजब तुरही सजै ॥ ८ ॥
रंग महल में रास, बिलास अपार है।
चलो सखी उस धाम, सु कंत हमार है ॥ ९ ॥
दस परकार अपार, अजब धुन ध्यान है।
दूलह बर बरियाम, पिया निःकाम है ॥१०॥
बिषम दुहेली[4] बाट, पँथ नहि पाइये।
सुन्न मँडल सतलोक, कौन बिध जाइये ॥११॥
सुन्न मँडल सतलोक, दुलहिनी दूर है।
सब्द अतीत[5] पिछान, नूर भरपूर है ॥१२॥
नूर रहा भरपूर, दिवाना देस है।
दुलहिन दास गरीब, तखत जिस पेस है ॥१३॥

(४)

अवगत अपरंपार, पार नहि पावै हो।
नाद बिंद का जीव, भरम डहकावै हो ॥टेक॥
मन मनसा नहिं ठौर, ध्यान कहा धरिये हो।
का सूँ करूँ फरियाद, कहो क्या करिये हो ॥ १ ॥
तज दुरमत का संग, रंग नहिं लागै हो।
कोट जनम का स्वान[6], हाड़ नहिं छाँड़ै हो ॥ २ ॥

---

(१) लगन सोधना। (२) अर्श = सहसदल कमल। (३) दुलहा। (४) कठिन। (५) निर्माया। (६) कुत्ता।

बिषै हलाहल खाय, जगत सब धूता[१] हो।
ज्यूँ हिरना के संग, सिकारी कूता[२] हो ॥ ३ ॥
कौवा तजै न बीठ[३], हंस कस होई हो।
अंध गुरू का चेल, खेल सब खोई हो ॥ ४ ॥
बैठा मंझ मँजार[४], मूसटे[५] खाई हो।
बाहर किसा[६] अचार[७], बूड़ी पँडिताई हो ॥ ५ ॥
बक मीनी[८] का ध्यान, नहीं नर धरिये हो।
भौसागर में आन, बहुर क्यूँ परिये हो ॥ ६ ॥
पारस पद कूँ परस, सुरत ठहरावो हो।
निरत निरन्तर लाय, अगमपुर जावो हो ॥ ७ ॥
जहँ झिलमिल झिलमिल होय, अजब खिलखाना[९] हो।
कहता दास गरीब, सुदेस दिवाना हो ॥ ८ ॥

(५)

रतनागर[१०] सुख सागर, हंसा चाल रे।
जहँ पारस पदम अनंत, अमीते[११] माल रे ॥ १ ॥
रतन सिंध बैराग रे, मुक्ते[११] माल हैं।
हीरे मोती मुकते, लालों पाल[११] हैं ॥ २ ॥
कामधेनु कलबृच्छ[१२], चिंतामनि चीन्ह रे।
लोचन खुलहिं अनंत, अरस दुरबीन रे ॥ ३ ॥
खुलिहैं अंध कपाट, लगै जो चाचरी[१३]।
सिम्भुद्वार[१४] दुरबीन, तहाँ पद बाँच री ॥ ४ ॥
बंका हीरा देखि, सुरत हैरान है।
सेत धजा फहराहिं, अमरपुर थान है ॥ ५ ॥

---

(१) धूर्त, कपटी। (२) कुत्ता। (३) बिष्टा। (४) बिल्ली। ५) चूहे। (६) कैसा। (७) आचार, नेम धरम। (८) बकुला और मछली। (९) खिलवत खाना = एकान्त में मिलने का स्थान। (१०) सुन्न सरोवर। (११) बहुत। (१२) कल्प वृत्त। (१३) नाम एक मुद्रा का। (१४) शिव-नेत्र या तीसरा तिल।

मान सरोवर परबी, हर दम लीजिये।
भिरै गऊमुख गंग, तहाँ सिर दीजिये॥ ६॥
पलकों चौंर ढुराहिं, नयन पट बीच है।
गरीबदास गुलजारा, परमल[1] सींच है॥ ७॥

॥ राग बँगला ॥

बँगला खूब बना है जोर, जामें सूरज चंद कड़ोर ॥टेक॥
या बँगले के द्वादस दर हैं, मध्य पवन परवाना।
नाम भजै तो जुग जुग तेरा, नातर होत बिराना॥ १॥
पाँच तत्त औ तीन गुनन का, बँगला अधिक बनाया।
या बँगले में साहब बैठा, सतगुरु भेद लखाया॥ २॥
रोम रोम तारागन दमकैं, कली कली दर चंदा।
सूरज मुखी सबत्तर[2] साजैं, बाँधा परमानन्दा॥ ३॥
बँगले में बैकुंठ बनाया, सप्तपुरी सैलाना।
भुवन चतुरदस लोक बिराजैं, कारीगर करबाना॥ ४॥
या बँगले में जाप होत है, ररङ्कार धुन सेसा।
सुर नर मुनि जन माला फेरैं, ब्रह्मा बिस्नु महेसा॥ ५॥
गन गंधर्प गलतान ध्यान में, तेंतिस कोटि बिराजैं।
सुर निःतन्ती बीना सुनिये, अनहद नादू बाजैं॥ ६॥
इला पिंगला पेंग परी है, सुखमन भूल भुलन्ती।
सुरत सनेही सब्द सुनत है, राग होत निःतन्ती॥ ७॥
पाँच पचीसो मगन भये हैं, देखो परमानंदा।
मन चंचल निःचल भया हंसा, मिले परम सुख सिंधा॥ ८॥
नभ की डोर गगन सूँ बाँधै, तो इहाँ रहने पावै।
दसो दिसा से पवन झकोरैं, काहे दोस लगावै॥ ९॥

(१) निर्मल, सुगंधित। (२) सब जगह।

आठो बखत अल्हैया[1] बाजै, होता सब्द टँकोरा।
गरीबदास यूँ ध्यान लगावै, जैसे चंद चकोरा ॥१०॥

(२)

बँगला सोई सत्त परवान, तामें पारब्रह्म का ध्यान ॥टेक॥
साढ़े तीन करोड़ बृच्छ[2] हैं, या बँगले के पासा।
सालेमार सरीर सरोवर, नौ लख बाग खुलासा ॥ १ ॥
या बँगले के आगे कूआ, उरध-मुखी महमंता।
मनुवा माली वारे ढारै, आठो बखत चलंता ॥ २ ॥
इला पिंगला मद्ध सुखमना, ता पर एक सुराही।
अमी महारस छाक परी है, पीवत होय रुसनाई ॥ ३ ॥
रोसन तकिये रास होत है, बाजे बजैं अपारा।
पाँचौं इन्द्री अस्थिर होई, घूमै मन मतवारा ॥ ४ ॥
संखौं कमल कलस की नाईं, सेत भमर झनकारैं।
कोयल मोर पपीहा बोलैं, दादुर अधिक गुंजारैं ॥ ५ ॥
बीना ताल पर पखावज बाजै, गावै गंधर्प रागी।
सिव की तहाँ समाध लगी है, चीन्ह पड़ी बड़ भागी ॥ ६ ॥
ध्रू प्रहलाद और नाम[3] कबीरा, नारद सुकदे ब्यासा।
गोरख दत्त भये गलताना, देखा अजब तमासा ॥ ७ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेसर सेसा, ररङ्कार धुन होई।
गुझ[4] बीरज[5] यह मंत्र जो दीन्हा, राख सब्द कूँ गोई[4] ॥ ८ ॥
मान सरोवर ऊपर बँगला, जहँ हंस परमहंस खेलै।
गरीबदास भवसागर सेती, पूरा सतगुरु बेलै[6] ॥ ९ ॥

(३)

बँगला सोई सत्त निज सार, जा में पारब्रह्म दीदार ॥टेक॥

---

(१) एक रागिनी का नाम। यहाँ अनहद धुन से मतलब है। (२) रोम (रोआँ) की गिनती शास्त्रों में साढ़े तीन करोड़ लिखी है। (३) नाम देव। (४) गुप्त। (५) बीज मंत्र औंकार शब्द का नाम है। (६) उबारै।

दिल अंदर दीदार होत है, बाहर भीतर सोई।
तिरबेनी असनान कीजिये, मल मुत्तर सब धोई ॥ १ ॥
बँगले आगे संख फुहारा, फूटैं सहसर[१] धारा।
दिब्य दृष्ट तो देखत है सो, हर दम बारम्बारा ॥ २ ॥
गंगा जमुना मद्ध सुरसती, पट्टन घाट फुहारा।
कालिन्द्री काया परछाली[२], धन बड़ भाग हमारा ॥ ३ ॥
इंदरदौन[३] महोदध[३] बाजै, रतनागर[४] लहराई।
जगन्नाथ जगदीस बिराजै, देखो क्यूँ ना भाई ॥ ४ ॥
हरद्वार हरि पैड़ी न्हाये, बद्रीनाथ बिलासा।
द्वारावती[५] दरस नित होई, कर बृन्दावन बासा ॥ ५ ॥
लोहागिर[३] पुष्कर[३] पद परसे, गया[३] पिंड परधाना।
अठसठ तीरथ हैं तन माहीं, मोच्छ मुक्त भये प्राना ॥ ६ ॥
कासी औ कांती[६] काया में, मोच्छ दायका माया।
अकल अजोध्या आदि अनादं, सप्त पुरी दरसाया ॥ ७ ॥
अवन्तिकापुरी[६] अरथ के माहीं, सुरत निरत से जानी।
गरीबदास साहब का बँगला, अजर अमर परवानी ॥ ८ ॥

(४)

बँगला खूब बना प्राचीन, जा में अरस[७] कला दुरबीन ॥टेक॥
बँगले आगे ड्योढ़ी लागी, पलकों दी चिक बंधा।
छानबे कोटी मेघ माल[८] है, सब्द सिंध गरजंदा ॥ १ ॥
बँगले आगे नग सरवर[९] है, तेंतिस कोट तपंता[१०]।
सहस अठासी मुनिन्दर बैठे, सोहं जाप जपंता ॥ २ ॥
बँगले आगे बाट[११] बिहंगम, दो दर हैं भितरी के।

---

(१) हजार। (२) धोई। (३) तीर्थों के नाम। (४) समुद्र जिसमें मोती पैदा होता है। (५) द्वारिका। (६) तीर्थों के नाम। (७) सहसदलकँवल। (८) बादलों का समूह। (९) रत्न का सागर। (१०) जहाँ तेंतोस कोट देवता तपस्या करते हैं। (११) रास्ता।

ब्रह्म रंध्र[1] का घाट जहाँ है, साधू चढ़ै सु देखे ॥ ३ ॥
बँगले आगे नटवा[2] नाचै, ताहि लखै नहि कोई ।
पड़ै गगन से धरती ऊपर, खंड बिहंड न होई ॥ ४ ॥
बँगले भीतर रतन अमोली, सेत पीत नहि जरदा ।
बिनहीं चरनों चलै चिदानंद, चसमों आगे फिरदा ॥ ५ ॥
रिग जजु साम अथर्वन चारो, बँगले माहिं बिराजैं ।
सुछम[3] बेद से तारी लागी, अनहद नौबत बाजैं ॥ ६ ॥
आसन पदम लगाय रहा है, हाथ कमंडल डंडा ।
ब्रह्मा आदि अनादं बैठे, चार बेद धुन खंडा ॥ ७ ॥
सुछम बेद से सुरत लगावै, सो सुरती महँ अंगा ।
गरीबदास बाहर क्यूँ भरमै, घटही अंदर गङ्गा ॥ ८ ॥

(५)

बँगला खूब बना है बेस[4], यामें ररङ्कार धुन सेस ॥टेक॥
रोम रोम में नाम चलत है, अजपा तारा लागी ।
सुरत निरत पर अनहद बाजे, सुनते हैं अनुरागी ॥ १ ॥
मूल चक्र का घाट बाँध कर, सुखमन पवन अरोधै ।
परथम आदि गनेस मनावै, नाभि कमल कूँ सोधै ॥ २ ॥
बङ्क नाल का घाट बिकट है, जहाँ खेचरी लावै ।
अमी महारस अमृत पीवै, अजर अमर हो जावै ॥ ३ ॥
दहिने गङ्गा बायें जमुना, मद्ध सुरसती धारा ।
उलटा मीन चढ़ै सरवर में, ऐसा खेल हमारा ॥ ४ ॥
हाथ न पैर पिंड नहि प्राना, सुन सरवर में खेलै ।
बाँस बल्ली नौका नहिं लागै, (तौ) कैसे भौंरा पेलै ॥ ५ ॥
दूरबीन ऐनक अनुसरी, पवन पिंड भर गोला ।
सुरत निरत की सुरङ्ग लगावै, दरसै रतन अमोला ॥ ६ ॥

---

(१) शिवनेत्र, तीसरा तिल । (२) मन । (३) सूक्ष्म । (४) उत्तम ।

कोट कोट दामिन दमकाहीं, गरजै सिंध समूचा।
सीलवंत सैलानी जोगी, मिलै काछ का सूचा[1] ॥ ७ ॥
संखों पदम झिलमिलै जोती, अगम पंथ बैराटा।
गरीबदास सतगुरु के सारै[2], उतरै औघट घाटा ॥ ८ ॥

(६)

बँगला अजब बना है खूब, जामें पार ब्रह्म महबूब ॥टेक॥
आगे नौलख पातुर नाचैं, ब्रह्मानंद रिझावैं।
तेज पुंज की सुंदर नारी, अनहद मंगल गावैं ॥ १ ॥
पीतंबर फहरात तासु कै, सूहे[3] बस्तर साजैं।
एक कान्ह औ नौलख गोपी, बँगले माहिं बिराजैं ॥ २ ॥
चंद सूर दो अधर चिरागा, हुकमी पौन औ पानी।
सकल संत औ सकल साहबी, बङ्गले माहिं बिनानी ॥ ३ ॥
पाँचो तत्त खवास खड़े हैं, हाजिर नाजिर जाके।
तिरलोकी का राज रसातल, क्या कोड़ी धज लाखै[4] ॥ ४ ॥
सब रतनन का रतन नाम है, नाम रतन कूँ जानै।
इन्द्र का राज काग की बिष्टा, जासे उलटा तानै ॥ ५ ॥
हीरा मोती जवाहिर ताईं, पारस पल्ले न बाँधै।
सब्द सिध चिंतामन साहब, सुरत गगन कूँ साधै ॥ ६ ॥
चिंतामन पारस परमेसर, हिरदे माहिं बिराजै।
गरीबदास ताही कूँ सेवै, जाका अबिचल राजै ॥ ७ ॥

(७)

बँगला खूब बना है ऐन[5]।
जामें कलबिरछा[6] काम धैन ॥ टेक ॥
गंगा कोट त्रिबेनी संगम, कासी गया प्रयागा।

(१) लँगोट का पक्का। (२) सहायता से, सहारे। (३) लाल। (४) पारब्रह्म की शोभा के आगे तीन लोक का राज जहन्नुम के बराबर और करोड़ों की सम्पत गर्द है। कोड़ीधज=कोटिध्वज (देखो नोट पृष्ठ ७७)। (५) सुन्दर। (६) कल्पवृक्ष।

या बँगले में साहब बैठा, सब्द करै अनुरागा ॥ १ ॥
संख सरसुती बहैं अगोचर[१], गुपती गोप गियाना[२]।
बँगले की पारस की पैंड़ी, पाया पद निरबाना ॥ २ ॥
या बँगले में सेत गुमठ[३] है, ता मध अलख गुसाँईं।
सेत छत्र सिर मुकुट बिराजै, दरसा नैनों माहीं ॥ ३ ॥
निरबानी परवानी पद है, रूप बरन सूँ न्यारा।
बँगले में से उड़ै बिहंगम, खेलै अधर अधारा ॥ ४ ॥
अधर अधार अपार पुरुष है, दृष्ट मुष्ट नहि आवै।
सूछम रूप सरूप जान के, सेस सहस मुख गावै ॥ ५ ॥
उड़े बिहंगम अकल तरंगम, जाके मोह न माया।
सतगुरु भेदी भेद कहत हैं, हम दिब दृष्ट लखाया ॥ ६ ॥
जोजन संख पलक में पहुँचै, बिनही चरनों धावै।
अगमी डोर सुरत से खैंचै, फिर बँगले में आवै ॥ ७ ॥
सुरत सुहंगम मूल बिहंगम, ज्ञान ध्यान से ऊँचा।
घट मठ महतत[४] सेती न्यारा, कहा घाट बँध कूचा ॥ ८ ॥
पिंड ब्रह्मंड से न्यारी जोती, बिन ही पेंगन झूलै।
गरीबदास धिरकार जनम कूँ, जो इस पद कूँ भूलै ॥ ९ ॥

(८)

बँगला खूब बना दरहाल, जामें रतन अमोले लाल ॥ टेक॥
जल की बूँद महल मठ कीन्हा, नख सिख साज बनाया।
या बँगले में गैबी खेलै, ना मूवा ना जाया ॥ १ ॥
या बँगले के चौसठ खंभा, पाँच पदारथ लागे।
तीन गुनन की गलियाँ माहीं, कोइ सूते कोइ जागे ॥ २ ॥
कोट उनंचा[५] पवन गुँजारैं, नौ नाड़ी से नेहा।
धाम बहत्तर धारा नगरी, जासे लगा सनेहा ॥ ३ ॥

(१) इंद्रियों की पहुँच के परे। (२) ज्ञान। (३) गुम्बज। (४) महातत्व। (५) उन्चास।

चौथे पद से महरम नाहीं, तीन गुनन में धोका।
चौथा पद चिंतामन साहब, सौदा रोकम रोका[1] ॥ ४ ॥
आलस नींद जम्हाई जोरा, कर्म नास होई।
सील संतोष बिबेक न चीन्हा, जनम अकारथ खोई ॥ ५ ॥
आसा त्रिस्ना बनी दुलहिनी, मनसा नारी सोई।
बँगले के दरवाजे बैठी, देख सहेली दोई ॥ ६ ॥
दूती दोइ दलों बिच खेलैं, मोहे सुर नर सारे।
गन गंधर्प औ ज्ञानी ध्यानी, बँगले माहि पछारे[2] ॥ ७ ॥
काम क्रोध औ लोभ मोह की, मदिरा प्याई भारी।
गरीबदास सतगुरु सौदागर, भौसागर से पारी ॥ ८ ॥

(६)

बँगला खूब किया बकसीस, साहब पारब्रह्म जगदीस ॥टेक॥
या बँगले की चीन्ह परी है, बाँधा नौ दस मासा।
पैसा एक न मेहनत माँगै, धन दासन पति दासा ॥ १ ॥
लख चौरासी बँगले छावै, न्यारी न्यारी भाँती।
साच्छीभूत सकल सँग खेलै, कीड़ी कुंजर हाथी ॥ २ ॥
या बँगले का तोल न मोलं, संख पदम भनकाईं।
या बँगले कूँ राख न सक्कैं, सेस महेसर ताईं ॥ ३ ॥
हीरे मोती झालर लागे, और लालन की पाँती।
या बँगले कूँ छाँड़ चलेंगे, ना कोई संग ना साथी ॥ ४ ॥
चंद सूर दो कलस बिराजैं, मध इक अजब फुहारा।
झलकै जोती बरषै मोती, जानै जाननहारा ॥ ५ ॥
काम धेनु अरु कल्प बृच्छ हैं, ये दो बँगले माहीं।
अठ सिध नौ निध परम पदारथ, अवगत अलख गुसाँईं ॥ ६ ॥
या बँगले में बाघ बसत है, हंसा लेत गिरासी।

(१) नक़द, खरा। (२) गिरा दिया।

पकरै बाघ राग कूँ चीन्है, ताहि मिलै अबिनासी ॥ ७ ॥
पकरा बाघ कबीर पुरुष ने, जड़िया तौक जँजीरं।
जाका बँगला अजर अमर है, धन पीरन सिर पीरं ॥ ८ ॥
संख कलप जुग परलै जाहीं, बँगला डिगै न डोलै।
गरीबदास सतगुरु का बँगला, ना कुछ तोल न मोलै ॥ ९ ॥

(१०)

काया खोज ले रे, तो में रहता पुरुष अलेख।
बिभिचारिन का स्वाँग छाँड़ दे, क्या दिखलावै भेख ॥टेक॥
मुक्ताहल की पैंठ लगी है, चौपड़ के बाजार।
ब्रह्म सहर बेगम पुर चलिये, अवगत नगर अपार ॥ १ ॥
अष्ट कमल दल भींजन लागे, बरषत अमृत नीर।
सोहं हंसा किया पयाना, मानसरोवर तीर ॥ २ ॥
बिन बादल बिन बिजली चमकै, बूठै[1] सुन्न फुहार।
संख कला झलकंती जोती, गगन मँडल गुलजार ॥ ३ ॥
इस काया में नीझर झरते, औंडे[2] दरिया कूप।
सीसी[3] संख[4] फिरैं सुर पीवैं, प्याले अजब अनूप ॥ ४ ॥
इस काया में रास मंडल है, बाजैं अनहद तूर।
सोहं हंसा सिंध मिले हैं, झिलमिल नूर जहूर ॥ ५ ॥
ताल मृदंग पखावज बाजैं, तुरही तूर अनंत।
सब्द अतीत[5] परम पद पाया, चीन्हा निरगुन तंत[6] ॥ ६ ॥
इस काया में घाट पटन है, मल मूतर सब धोई।
आपा मेट भेट साहब कूँ, बहुर न आवन होई ॥ ७ ॥
सीखे सुने कहो क्या होई, मन पवना नहिं नेस[7]।
औघट घाट बाट है बंकी, दुर्लभ देस बिदेस ॥ ८ ॥

---

(१) बरसै। (२) गहिरे। (३) बोतल। (४) अनगिनत। (५) निर्माया। (६) तत्व। (७) नेष्ठा।

ज्ञान ध्यान जिस धाम न पहुँचै, साखी सब्द सरीर।
सुन्न असुन्न परम सुन चीन्हों, औंडी[1] मँजिल कबीर ॥ ९ ॥
सप्त सुन्न पर संखा झालर, अच्छर धाम की डोर।
मकर तार की बीन चीन्ह कर, होना गारतगोर ॥१०॥
पाँच तत्त तीनों गुन नाहीं, धर[2] अंबर[3] नहिं धौल[4]।
चन्द्र सूर नहिं पावक पानी, बङ्की नगरी पौल[5] ॥११॥
मेटो खोज बोझ सब डारो, मिलिहो निरगुन तान।
दास गरीब परम रँग भीना, चीन्हा पद निरबान ॥१२॥

॥ राग रामकली ॥

राम सुमिर राम सुमिर राम सुमिर हंसा ॥
भक्ति जान ज्ञान ध्यान छाँड़ो कुल बंसा ॥टेक॥
कोट करम भरम जारि पार तोहि उतारै ॥
मुक्ति लोक पाय मोछ नाम जो उचारै ॥ १ ॥
सुरत सिंध कोट चंद्र झलकै पल माहीं ॥
पद निर्बान है अमान आदि अंत नाहीं ॥ २ ॥
निराकार अघर धार वार पार नाहीं ॥
ब्यापक महबूब खूब धूप है न छाहीं ॥ ३ ॥
संख तूर दर जहूर झिल मिल झिल रंगा ॥
घुरै नाद संख साध चरन कोट गङ्गा ॥ ४ ॥
अरस कुरस नूर दरस तेज पुंज देखा ॥
कोट भानु साँच मानु रोम रोम पेखा ॥ ५ ॥
अमृत रस अमी पीव खुरदनी खुसाली ॥
प्याले मुसताक पाक लालन सिर लाली ॥ ६ ॥

(१) गहिरी, अड़बड़। (२) धर=धरा अर्थात् पृथ्वी। (३) आकाश। (४) धवल के अर्थ सफेद के हैं—यहाँ धवलागिरि से मतलब हो, या धौल=धूल अर्थात् परमाणु रूप माया से। (५) द्वार।

नाद बिन्द घट अकार देह गेह नाहीं ॥
निरमल निरदंद ऐन, देखतही होत चैन, पलकन के माहीं ।७।
आदि मूल रतन फूल सेत पद सुभाना ॥
गरीबदास जहाँ बास दरस में दिवाना ॥ ८ ॥

(२)

राम सुमिर राम सुमिर राम सुमिर लोई ।
सतगुरु उपदेस दीन्ह भक्ति बीज बोई ॥ टेक ॥
काम क्रोध लोभ मोह सत्रु हैं तुम्हारे ।
हरष सोग राग दोष पकर क्यों न मारे ॥ १ ॥
तीन चीन्ह पाँच मार पकरो मठधारी[1] ।
पुत्र तो पचीस संग सैन है अपारी ॥ २ ॥
पाँच नार घट मँझार मन की पटरानी ।
द्वादस दल कोट कटक सेन[2] है बिरानी ॥ ३ ॥
साहुकार पकर लीन्ह लूटै गढ़ चोरा ।
आतम तो अनाथ सुनो राम बाप मोरा ॥ ४ ॥
मन के सब राज पाट तीन लोक माहीं ।
आतम तो अनाथ जीव सुनो हो गुसाईं ॥ ५ ॥
फंद काट करो साँट[3] मौज मेहरबाना ।
अरज तो कबूल होय साहब रहमाना[4] ॥ ६ ॥
साहब दरबार बीच कूकै बंदिजादा[5] ।
महजर[6] क्यूँ न सुनो राम पूछ हो फिलादा[7] ॥ ७ ॥
समरथ जगदीस ईस, सरन आया तोहीं ।
ठाढ़ा दरबार तोरे सुनो राम दोहीं[8] ॥ ८ ॥
अर्थ धर्म काम मोच्छ पूरन सब काजा ।
गरीबदास सरन आया बाप राम राजा ॥ ९ ॥

---

(१) महंत यानी मन । (२) फौज । (३) मेला । (४) दयाल । (५) दास । (६) अर्जी ।(७) फर्याद । (८) दुहाई ।

(३)

राम सुमिर राम सुमिर राम सुमिर बौरे।
हर दम तो अजपा जाप साहबै भजो रे॥ टेक॥
इंद्री घट पाँच भूत, दूत हैं दिवाने।
पच्चिस परकिर्त[1] लार जाने तीन जाने॥ १॥
काम सहर क्रोध कहर लोभ लहर ऊठैं।
मोह के तो परे फंद कैसे कर टूटैं॥ २॥
सेन दल अपार यार एती ठकुराई।
कैसे कर पड़ा जाय गढ़ सुरंग लाई॥ ३॥
अकड़ी[2] हठवान[3] बाँका जोधा मन राजा।
कोट तो निसान घुरैं बजैं अनँत बाजा॥ ४॥
सेन दल अपार सजे संख लहर लहरी।
खसिया[4] मन राज करै मरद है न मेहरी[5]॥ ५॥
सुरग और पताल मिरत तिहूँ लोक लूटे।
सतगुरु की सरन आये सोई जान छूटे॥ ६॥
काया गढ़ नहीं तेरा देंह साँच मानी।
भाड़े[6] की दुकान यार सो तो है बिरानी॥ ७॥
दूने तीने नाहिं कीन्हे हाट बीच टोटा।
पकरैंगे जम जहूद तोरैंगे लँगोटा॥ ८॥
होयगा बेवतन[7] हंस देह जार दीनी।
गरीबदास कहाँ बास पंथ खोज मीनी॥ ९॥

(४)

राम सुमिर राम सुमिर, राम सुमिर मीता।
बिन सतगुरु ज्ञान ध्यान, खाली है सलीता[8]॥टेक॥

---

(१) प्रकृति। (२) हेकड़। (३) हठीला। (४) बधिया, हिजड़ा। (५) स्त्री। (६) किराया। (७) बिना घर का। (८) बोरा।

हाड़ चाम सकल गाम, गंद है खलीता[१] ।
पाक तो बिसार दीन, बरहना जरीता[२] ॥ १ ॥
दम का सुमार कीन, नाम क्यूँ न लीता ।
इला पिंगला बिचार, सुखमना पलीता[३] ॥ २ ॥
सील और सँतोष ज्ञान, दया धरम कीता ।
काम क्रोध लोभ मोह, सत्रु क्यों न जीता ॥ ३ ॥
साहब दिल से बिसार, कौन जुलम कीता ।
दुनिया गुफ़तार[४] यार, छाँड़ दे अनीता ॥ ४ ॥
नाहीं वह स्याम सेत, लाल है न पीता[५] ।
आवै नहिं पारख[६], पढ़ो कोट ज्ञान गीता ॥ ५ ॥
पिंड प्रान अरप दीन, सतगुराँ सरीता[७] ।
गरीबदास पावै यूँ, ब्रह्म पद अतीता ॥ ६ ॥

(५)

राम सुमिर राम सुमिर, राम सुमिर लै रे ।
जम और जहान जीत, तीन लोक जै रे ॥टेक॥
इंद्री अदालत चोर, पकड़ो मन अहि[८] रे ।
अनहद टंकोर घोर, सुनै क्यूँ न बहिरे ॥ १ ॥
सुरत निरत नाद बिंद, मन पवना गहि रे ।
उनमुनी अलेल[९] रूप, निराकार लहि रे ॥ २ ॥
धनुष[१०] ध्यान मार बान[११], दुरजन से फहरे[१२] ।
देखत के सीत कोट, भरम बुजे ढह रे ॥ ३ ॥
साँचे से प्रीत कीन, झूठा मन मह[१३] रे ।
कहत है गरीबदास, कुटिल बचन सह रे ॥ ४ ॥

---

(१) थैली, झोला । (२) नंगा जलाया जायगा । (३) बत्ती जिससे रंजक में आग लगाते हैं । (४) निरी बात, कहानी । (५) पीला । (६) परख, जाँच । (७) शरन ली । (८) साँप । (९) बेपरवाह । (१०) कमान । (११) तीर । (१२) दूर रहो, बचो । (१३) मथ लो अर्थात् छाछ की तरह अलग कर दो ।

|| राग असावरी ||

मन तू चल रे सुख के सागर, जहाँ सब्द सिंध रतनागर ||टेक||
कोट जनम जुग भरमत होगये, कछू न हाथ लगा रे |
कूकर सूकर खर भया बौरे, कौवा हंस बिगारे || १ ||
कोट जनम जुग राजा कीन्हा, मिटी न मन की आसा |
भिच्छुक होकर दर दर हाँडा[१], मिला न निरगुन रासा || २ ||
इन्द्र कुबेर ईस की पदवी, ब्रह्मा बरुन धर्मराया |
बिस्वनाथ के पुर कूँ पहुँचा, बहुर अपूठा[२] आया || ३ ||
संख जनम जुग मरते हो गये, जीवत क्यूँ न मरै रे |
द्वादस मद्ध महल मठ बौरे, बहुर न देह धरै रे || ४ ||
दोजख भिस्त सबै तैं देखे, राज पाट के रसिया |
तिरलोकी से तिरपत नाहीं, यह मन भोगी खसिया[३] || ५ ||
सतगुरु मिलै तो इच्छा मेटै, पद मिल पदहिं समाना |
चल हंसा उपदेस पठाऊँ, जहँ आद अमर अस्थाना || ६ ||
चार मुक्ति जहँ चंपी करिहैं, माया हो रहि दासी |
दास गरीब अभय पद पर से, मिले राम अबिनासी || ७ ||

(२)

मन तूँ सुख के सागर बस रे, और न ऐसा जस रे ||टेक||
सब सोने की लंका होती, रावन से रन धीरं |
एक पलक में राज बिराजी, जम के पड़े जँजीरं || १ ||
दुर्योधन से राजा होते, संग इकोतर[४] भाई |
ग्यारह छोहनि संग चलै थी, देह गीध ने खाई || २ ||
साठ हजार सुभट[५] के होते, कपिल मुनीस्वर खाये[६] |
एकै पुत्र उत्तानपात के[७], परमातम पद पाये || ३ ||

(१) भरमा | (२) उलटा | (३) हिजड़ा | (४) एक सौ एक | (५) जोधा | (६) देखो नोट पृष्ठ ८५ | (७) देखो ध्रुव की कथा नोट पृष्ट २७ |

राम नाम पहलाद पढ़े थे, हिरनाकुस नहिं भाये।
नरसिंघ रूप धरे नारायन, खंभ फार कर आये[1] ॥ ४ ॥
नामदे नाम निरंजन राते, जाकी छान छवाई।
एक पलक में देवल फेरा, मिर्तक गऊ जिवाई[2] ॥ ५ ॥
कासीपुरी कबीरा होते, ताहि लखो रे भाई।
जहँ केसो बनजारा उतरा, नौलख बालद आई ॥ ६ ॥
कनक जनेऊ कन्ध दिखाया, भक्ति करी रैदासा।
दासगरीब कौन गत पावै, मगहर मुक्ति बिलासा ॥ ७ ॥

(३)

मन तूँ मान सरोवर न्हा रे, इहाँ न भटका खा रे ॥ टेक ॥
सूरज मुखी फूल जहँ फूलै, संख पदम उँजियारा।
गंगा जमुना मद्ध सरसुती, तिरबेनी की धारा ॥ १ ॥
जहाँ कमोदनि चन्द्र उगत हैं, कमल कमल मध तूरा[3]।
अनहद नाद अजब धुन होहीं, जानै सतगुरु पूरा ॥ २ ॥
ओघट घाट बिषम है दरिया, न्हावे संत सुजाना।
मोच्छ मुक्ति की परवी लै रे, साखी है ससि भाना ॥ ३ ॥
जहाँ उहाँ हंस कुतूहल करते, मोती मुक्ता खाहीं।
ऐसा देस हमेस हमारे, अमृत भोजन भाहीं[4] ॥ ४ ॥
संखों लहर मिहर की उपजे, कहर नहीं जहँ कोई।
दास गरीब अचल अबिनासी, सुख का सागर सोई ॥ ५ ॥

(४)

बाबा बिकट पंथ रे जोगी,
तातें छाँड़ सकल रस भोगी ॥ टेक ॥
पर्थम सिद्धि गनेस मनावों, मूल कमल की मुद्रा।
किलियं जाप जपो हरि हीरा, मिटै करम सब छुद्रा[5] ॥ १ ॥

---

(१) देखो नोट पृष्ठ ७३ (२) देखो पृष्ठ ७०। (३) तुरही। (४) रुचते हैं। (५) नीच।

कुरम वाय पर सेस वाय[1] है, तासु होत उदगार[2]।
दो कूँ जीत जनम जुग जोगी, अवगत खेल अपारं ॥ २ ॥
नाभि कमल में नाद समोवो, नागिन निद्रा मारो।
दो फुंकार संखिनी जीतो, उरधे नाम बिचारो ॥ ३ ॥
हिरदे कमल सुरत का संजम, निरत कला निरस्वासा।
सोहं सिंध सैल पद कीजै, ऐसे चढ़ो अकासा ॥ ४ ॥
कंठ कमल से हर हर बोलै, षोड़स कला उगानी।
यह तो मध मारग सतगुरु का, पंथ बूझ ब्रह्मज्ञानी ॥ ५ ॥
त्रिकुटि मद्धे मूरत दरसै, दो दल दरपन झाहीं।
कोट जतन कर देखा भाई, बाहर भीतर नाहीं ॥ ६ ॥
वह तो सिंध दोऊ से न्यारा, कहो कहाँ ठहराये।
सुन्न बेसुन्न मिले नहिं भौंरा, कहाँ रहत घर पाये ॥ ७ ॥
अनहद नाद बजाओ जोगी, बिना चरन चल नगरी।
काया कासी छाँड़ चलोगे, जाय बसो मन मधरी ॥ ८ ॥
धरती धूत अकार न पाऊँ, मेरु दंड पर मेला।
गगन मँडल में आसन करहूँ, तो सतगुरु का चेला ॥ ९ ॥
तिल परमान ब्रह्म दरवाजा, तिस घाटी ले जाऊँ।
चींटी के पग हस्ती बाँधूँ, अधर धार ठहराऊँ ॥१०॥
दखिन देस में दीपक जोऊँ, उत्तर धरूँ धियाना।
पच्छिम देस में देवल हमारा, पूरब पंथ पयाना ॥११॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारा, अगम ज्ञान गोहराऊँ।
दास गरीब अगम गत आपै, सिधै सिंध मिलाऊँ ॥१२॥

(५)

संतो मानो मोर सँदेसा, तातें बहुर न रहै अँदेसा ॥टेक॥
अधर गंग इक अधर सरोवर, अधर पुहुप गुलजारा।
सूरज मुखी संख सुर सोभा, ऐसा देस हमारा ॥ १ ॥

(१) कुरम और नाग (=सेस) दो वायुओं के नाम हैं। (२) डकारना।

षटकोन चक्र कूँ चीन्ह पियारे, अकस[1] अरस अनादं।
तुरही रूप बंकड़ा साहब, लीला अगम अगाधं ॥ २ ॥
हंस मोर के मद्ध चंद्र है, कलँगी कोटि बिराजै।
जाके ऊपर अरस गुमठ है, तीन कलस जहँ साजै ॥ ३ ॥
परानंदनी[2] कामधेनु है, गोमुख गंग कहावै।
कल्प रूप साहब सरबंगी, मन बांछित फल पावै ॥ ४ ॥
सुन्न सलहली धजा फरक्कैं, ध्यान धरै कोई बीना।
अललपंख ज्यूँ करै पयाना, खोज न पावै मीना ॥ ५ ॥
त्रिकुटी कमल पर सेत गुमठ है, जा मध भँवर बिराजै।
दास गरीब कहै रे संतो, सब्द अनाहद बाजै ॥ ६ ॥

(६)

संतो निज पद अधर बिवाना, जा मूरत पर कुरबाना ॥टेक॥
सेत छत्र सिर मुकुट मनोहर, बना मुकैसी[3] चीरा।
संख चक्र गदा पद्म बिराजै, दामन दमकै हीरा ॥ १ ॥
जरीबाफ झिलमिल झिलकंता, पीतंबर परकासा।
हाजिर नाजिर देख अरस में, अवगत चौंर खवासा ॥ २ ॥
कच्छ मच्छ औ कुरम धौल से, सेस पार नहिं पाई।
बिना दस्त जहँ चौंर होत है, हम देखा रे भाई ॥ ३ ॥
सत्तर खान बहत्तर उबरे, सिव ब्रह्मा से रागी।
नारद नाम कबीरा गावै, सुरत सब्द में लागी ॥ ४ ॥
राग बिहंग भंग नहिं होई, बंधा रहत समीरं।
दास गरीब बजर पट खोले, सतगुरु मिले कबीरं ॥ ५ ॥

(७)

बिसमिल कित से आई काजी बिसमिल कित से आई।
तातै बोलो नाम खुदाई[4] ॥ टेक ॥

(१) छाया। (२) परम आनंद या रस की खान। (३) कारचोबी। (४) काजी तुमको खुदा की सौगंद बताओ कि जिबह करने का दस्तूर कहाँ से लाये।

उहाँ तो लोह लुहार नहीं रे, करद[1] गढ़ी किन्ह भाई।
अहरन[2] नाहि हथौड़ा नाहीं, बिन आरन[3] कहँ ताई ॥ १ ॥
जाम[4] भेड़ी का दूध पिवत हो, दही घिरत[5] बहु खाई।
जा कूँ फेर हलाल करत हो, लेकर करद कसाई ॥ २ ॥
गोस्त माटी[6] चाम उधेरा, रूह कहाँ पहुँचाई।
उस दरगह की खबर नहीं है, कौन हुकम से ढाई[7] ॥ ३ ॥
हक हक करके मुल्ला बोलै, मसजिद बाँग सुनाई।
तीसों रोजे खून करत हो, खोज न पाया राई[8] ॥ ४ ॥
सुअर गऊ की एकै माटी, आतम रूह इलाही।
दास गरीब एक वह साहब, जिन यह उमत[9] उपाई ॥ ५ ॥

(८)

दिल ही अन्दर हुजरा काजी दिल ही अन्दर हुजरा।
कर ले उस साहब से मुजरा ॥ टेक ॥
मका मदीना दिल ही अन्दर, काबे कूँ कुरबाना।
काहे लेट निमाज करत हो, खोजो तन अस्थाना ॥ १ ॥
सत्तर काबे देख नूर के, खोल किवारी झाँकी।
ता पर एक गुमठ है गैबी, पन्थ डगरिया बाँकी ॥ २ ॥
हक हक करके मुल्ला बोले, काजी पढ़ै कुराना।
जिन कूँ वह दीदार कहाँ है, काटैं गला बिराना ॥ ३ ॥
अरस कुरस[10] में अलह तखत है, खालिक बिन नहिं खाली।
वे पैगम्बर पाक पुरुष थे, साहब के अबदाली[11] ॥ ४ ॥
मुहमद ने नहिं गोस्त खाया, गऊ न बिसमिल कीती।
एक बेर कहा मनी[12] मुहम्मद, ता पर एती बीती ॥ ५ ॥

---

(१) छुरी। (२) निहाई। (३) भट्ठी। (४) मा। (५) घी। (६) देह। (७) मारा। (८) राई के बराबर, रत्ती भर। (९) सृष्टि। (१०) अर्श और कुर्सी दो स्थान ब्रह्मांड के हैं। (११) भक्त, दास। (१२) मौत, कतल।

नबी मुहम्मद नमस्कार है, राम रसूल कहाया।
एक लाख अस्सी कूँ सौगंद, जिन नहिं करद चलाया ॥ ६ ॥
वेई मुहम्मद वेई महादेव, वेई बिसुन वेई ब्रह्मा।
दास गरीब दूसरा को है, देखो अपने घर माँ ॥ ७ ॥

(९)

कोई बाँका सूरा, लड़त बेहद मैदाना ॥ टेक ॥
नैनन की बंदूक बनी है, स्रवन बरूद समाना।
काल बली को मार गिरावो, सुरत की गोली ताना ॥ १ ॥
मन को टेर[1] दया को बखतर, सुरत कटारी ठाना।
पाँच पचीस मिल टक्कर मारो, अमर लोक अस्थाना ॥ २ ॥
ईथर पाथर कभी न पूज्यो, तीरथ बर्त न माना।
सत्त सब्द में रह्यो समाई, तब मेरो मन जाना ॥ ३ ॥
जूझैगा कोई परम सूरमा, घाव लगै निर्बाना।
दास गरीब कबीर का चेला, ज्यूँ का त्यूँ ठहराना ॥ ४ ॥

(१०)

जो कोई ना मानै ना मानै,
जाकूँ अजाजीलै रानै[2] ॥ टेक ॥
करै अचार बिचार असंभी, पूजत जड़ पाषानै।
पाती तोर चढ़ावत अँधरे, जीवत जी कूँ भानै[3] ॥ १ ॥
पिंड प्रदान करै पितरों के, तीरथ जग औ दानै।
बिना बंदगी मोच्छ नहीं रे, भूल रहे सुर[4] ज्ञानै ॥ २ ॥
सुकदे स्यू का तंत सुना है, भक्ति दई धिग ता ने।
सतगुरु जनक बिदेही भेंटे, पद मिल पदै समाने[5] ॥ ३ ॥
अकथ कथा कुछ कही न जाई, देखत नयन सिराने[6]।
प्रबल बली दरियाव बिहंगम, लाय ले चोट निसाने ॥ ४ ॥

---

(१) टोपा, खोद। (२) उसको शैतान गिरावै। (३) मारै। (४) देवता। (५) शुकदेवजी ने पहिले भक्ति का निरादर किया था और ज्ञान ही को मानते थे, देखो नोट पृष्ट ६४ और ८६। (६) शीतल हुए।

पंडित बेद कहै बहु बानी, काजी पढ़ै कुराने।
सुअर गऊ को दोय बतावै, दोनों दीन दिवाने ॥ ५ ॥
एकहि मट्टी एकहि चमड़ा, एकहि बोलत प्राने।
जिभ्या स्वादे मारत है नर, समुझत नहीं हैवाने ॥ ६ ॥
मुरगी बकरी कुकड़ी खाई, कूके बंग मुलाने।
जैसा दरद आपने होवै, वैसा दरद बिराने ॥ ७ ॥
मन मक्का की हज्ज न कीन्ही, दिल काबा नहिं जाने।
कैसी काजी कजा[1] करत हो, खाते हो हलवाने[2] ॥ ८ ॥
जा दिन साहब लेखा माँगै, द्यो क्या ज्वाब दिवाने।
ऐसा कुफर तरस नहिं आवै, काटै सीस खुराने ॥ ९ ॥
उस पुर सेती महरम[3] नाहीं, अनहद नाद घुरानै।
दास गरीब दुनी[4] गई दोजख, द्यावै गालि गुरानै[5] ॥१०॥

(११)

अवधू पाया अति आरूढ़ं,
कोट उनंचा[6] काहे नाचा तन ढूँढ़े में ढूढ़ं ॥टेक॥
पोथी थोथी काहे ढूँढ़ो, सुन रे पंडित मूढ़ं।
लंबी जटा अटा क्यूँ बाँधे, काहे मुड़ावै मूड़ं ॥ १ ॥
जल पाषान तरा नहि कोई, सूवा सेम्हर डूँड़ं[7]।
वह नग हीरा परखा नाहीं, क्यूँ खोजत हो जूड़ं ॥ २ ॥
जल मृग त्रिसना सृष्टि भुलानी, भूल रहा जग भूड़ं।
नाम अभय पद निःचै निपजै, बीज परे ज्यूँ खूड़ं[8] ॥ ३ ॥
बिन आकार अपार पुरुष है, बाल बृद्ध नहि बूढ़ं।
दास गरीब अचल अबिनासी, अवगत मंतर गूढ़ं ॥ ४ ॥

---

(१) पाँचो वक्त की नमाज पढ़ना। (२) बकरी का बच्चा। (३) भेदी। (४) दुनिया। (५) गाली गलौज। (६) उनचास। (७) डौंड़ी। (८) हराई, रिघाई।

(१२)

संतो मन की माला फेरो,
यह मन बाहर जात हेरो ॥ टेक ॥
तीन लोक औ भवन चतुर्दस, एक पलक फिर आवै ।
बिनहीं पंखों उड़ै पखेरू, याका खोज न पावै ॥ १ ॥
तत की तसबी[1] सुरत सुमिरनी, दृढ़ के धागे पोई ।
हर दम नाम निरंजन साहब, यह सुमिरन कर लोई ॥ २ ॥
किलियं ओअं हिरियं सिरियं, सोहं सुरत लगावै ।
पंच नाम गायत्री गैबी, आतम तत्त जगावै ॥ ३ ॥
ररंकार उच्चार अनाहद, रोम रोम रस तालं ।
कर की माला कौन काम जब, आतम राम अबदालं[2] ॥ ४ ॥
सुरग पताल सृष्टि में डोलै, सर्ब लोक सैलानी ।
यह मन भैरो भूत बितालं, यह मन अलख बिनानी ॥ ५ ॥
यह मन ब्रह्मा बिसुन महेसं, इन्दर बरुन कुबेरं ।
मनही धर्मराय है भाई, सकल दूत जम जेरं[3] ॥ ६ ॥
मनही सनक सनन्दन बाला, गौरज और गनेसा ।
मनही कच्छ मच्छ कूरंभा, धौल धरन अरु सेसा ॥ ७ ॥
मनही गोरख दत्त दिगंबर, नारद सुकदे ब्यासा ।
मनही बलि बावन है आया, मन का अजब तमासा ॥ ८ ॥
मनही ध्रू प्रहलाद भभीखन, मन का सकल पसारा ।
मनही हरि हीरा हिरनाकुस, मन नरसिंघ औतारा ॥ ९ ॥
मन सुग्रीव बालि बल अंगद, रावन राम रँगीला ।
मनही नौ औतार धरत है, मन की अवगत लीला ॥१०॥
मनही लछमन हनूमान है, मनही चेरी सीता ।
मनही चारो बेद बिद्या सब, मन भागवत औ गीता ॥११॥

(१) माला। (२) भक्त । (३) परास्त करना।

मनही परसराम परसोतम, छत्री किये निछत्री[1]।
मनही कपिल देव देहूती[2], मनही अद्या अत्री ॥१२॥
मनही चंद सूर तारागन, मनही पानी पौना।
मनही लख चौरासी डोले, मनही का सब गौना ॥१३॥
मन तेंतीसो कोट देवता, मनही सहस अठासी।
मनही थावर जंगम जोनी, मनही सिध चौरासी ॥१४॥
मनही कीट पतंग भुवंगा, मन जोनी जगदीसं।
मन के ऊपर निज मन साहब, ताहि नवाऊँ सीसं ॥१५॥
निज मन सेती यह मन हूआ, घर आया अनँत सरीरं।
दास गरीब अभय अबिनासी, ता मिल रहे कबीरं ॥१६॥

(१३)

पार किनहुँ नहिं पाये संतो, पार किनहुँ नहि पाये।
जुग छत्तीस रीत नहि जानी, ब्रह्मा कमल भुलाये ॥टेक॥
चार अंड ब्रह्मंड रचाने, कूरम धौल धराये।
कच्छ मच्छ सेसा नारायन, सहस मुखी पद गाये ॥ १ ॥
चार बेद अस्तुती करत है, ज्ञान अगम गोहराये।
अकथ कथा अच्छर निःअच्छर, पुस्तक लिखा न जाये ॥ २ ॥
सुरत निरत से अगम अगोचर, मन बुध रहे थकाये।
ज्ञान ध्यान से अधिक परे रा, क्या गाऊँ रामराये ॥ ३ ॥
नारद मुनी गुनी महमंता, नर से नारि बनाये[3]।
एक पलक परपूरन साहब, पूत बहत्तर जाये[3] ॥ ४ ॥
नौ लख बोरी कासी आई, दास कबीर बढ़ाये[4]।
दास गरीब अगम अनुरागी, पद मिल पदै समाये ॥ ५ ॥

(१४)

अबधू लेत न मन का लाहा[5], चीन्हो ज्ञान अगाहा[6] ॥टेक॥

---

(१) नाश। (२) कपिल देव की माता का नाम। (३) देखो नोट पृष्ठ ६०-६२। (४) देखो नोट पृष्ठ २९। (५) लाभ (६) गूढ़।

कासी गहन बहन भये[1] प्रानी, प्राग न्हात है माहा[2] ।
बिना नाम जोनी नहिं छूटै, भरमैं भूल भुलाहा ॥ १ ॥
सहस मुखी गंगा नहिं न्हाते, खोदें ऊजड़ बाहा[3] ।
नारद ब्यास पूछ सुकदे कूँ, चारो बेद उगाहा[4] ॥ २ ॥
पंथ पुरातम खोज लिया है, चाले अवगत राहा ।
सुकदे ज्ञान सुना संकर का, मिटी न मन की दाहा ॥ ३ ॥
दो तपिया गुन तप कूँ लागे, बंदे हूहू हाहा[5] ।
लगा सराप परे भौसागर, कीन्हें गज अरु ग्राहा ॥ ४ ॥
सिव संकर के तिलक किया है, नारद सोधा साहा[6] ।
ब्रह्मादिक ने चौरी रचिया, किया गौर का ब्याहा ॥ ५ ॥
इक सौ आठ गये तन परलै, बहुर किया निरबाहा ।
सिव के संग गौरजा उधरी, मिट गया काल उसाहा[7] ॥ ६ ॥
ज्यूँ सर्पा की पूँछ पकर कर, अंदर उलटा जाहा ।
नीर कबीर सिंध सुखसागर, पद मिल गया जुलाहा ॥ ७ ॥
हमरा ज्ञान ध्यान नहि बूझा, समझ न परी अगाहा ।
दासगरीब पार कस उतरै, भेंटा नहीं मलाहा ॥ ८ ॥

---

(१) बहे । (२) महीने भर । (३) नहर । (४) संग्रह किया ।

(५) हूहू और हाहा दो गंधर्वों के नाम हैं जो गान विद्या में बड़े निपुन थे । दोनों में झगड़ा हुआ कि कौन बढ़ कर गाता है इसलिये वे निर्नय कराने को देवल ऋषि के पास गये । देवल ऋषि ने उन दोनों का गाना सुन कर कहा कि हाहा का गाना बढ़ कर है इस पर हूहू हुज्जत करने लगा कि कैसे वह बढ़ कर है । मुनि जी क्रोध करके बोले कि तुमने तो जुबान ग्राह (याने मगर) की तरह पकड़ ली इसलिए ग्राह होगे । इसी शाप से हूहू ने मगर का जन्म पाया ।

राजा इन्द्रद्युम्न द्रविण देश का राजा अगस्त्य मुनि का शिष्य था । एक दिन जब राजा पूजा पर था गुरुजी उसके यहाँ गये । राजा ईश्वर की पूजा का निरादर समझ कर गुरुजी के लिये आसन से नहीं उठा जिस पर मुनिजी ने शाप दिया कि तुम गज (हाथी) की तरह बैठे रह गये इससे हाथी हो जाव जिससे राजा ने हाथी की योनि पाई ।

कृष्णावतार होने पर इन दोनों का उद्धार हुआ—देखो गज और ग्राह की कथा पृष्ठ २० में । (६) लगन । (७) वसवास, शंका ।

॥ राग बिलावल ॥

रब[1] राजिक[2] तू महरमी[3], करतार बिनानी।
अवगत अलख अलाह तू, कादिर परवानी ॥टेक॥
खालिक मालिक मेहरबाँ, सरबंगी स्वामी।
निःचल अचल अगाध तू, निरगुन निःकामी ॥ १ ॥
राम रहीम करीम तू, कुदरत से न्यारा।
गंध पुहुप ज्यूँ रम रहा, फूला गुलजारा ॥ २ ॥
पूरन ब्रह्म परम गुरू, अकाल अबिनासी।
सब्द अतीत बिहंगमा, किस काल उदासी ॥ ३ ॥
अनुरागी निःतन्त कूँ, तन मन सब अरपूँ।
सीस करूँ तिस वारने, चित चंदन चरचूँ ॥ ४ ॥
उस साहब महबूब कूँ, कर हर दम मुजरा।
चित से नेक न बीसरूँ, दिल अंदर हुजरा[4] ॥ ५ ॥
पत-राखन तू परद-पोस[5], साहब दिल दाना।
मीरा[6] मेरे मेहर कर, पेखूँ खिलखाना[7] ॥ ६ ॥
नूर निहारूँ नजर से, नैनों भर देखूँ।
मूरत सूरत सकल कूँ, चसमों में पेखूँ ॥ ७ ॥
तेज पूँज की सेज है, सुन मंडल सीरा[8]।
अदली तखत खवास है, जहँ आप कबीरा ॥ ८ ॥
कुंभक ऊपर कुंभ है, गागर पर गगरी।
संत बिबेकी पहुँचसी, उस अवगत नगरी ॥ ९ ॥
अवगत नगर निधान है, बेगमपुर बासा।
बिरह बियोगी बिंध रहे, जहँ सब्द निवासा ॥१०॥
तन मन मिरतक ह्वै रहे, दिल दुई उठावै।
सब्द समुंदर सिंध में, ले अंग मिलावै ॥११॥

---

(१) साहब। (२) अन्नदाता। (३) सर्वज्ञ। (४) कोठा। (५) ऐब ढकने वाला। (६) स्वामी। (७) खिलवत खाना। (८) उत्तम भूमि।

खोजी खोज न पावहीं, गुरु भेद बिचारं ।
चार बेद चितवत भये, भूले भरम अचारं ॥१२॥
पुरान अठारह गम नहीं, क्या गावै ज्ञानी ।
मौनी महल न पावहीं, बिन सतगुरु बानी ॥१३॥
अष्ट योग जाने नहीं, षट कमल कसीसं ।
पाँचो मुद्रा वार हैं, पारख जगदीसं ॥१४॥
बावन अच्छर ना चढ़ै, वह बिरहा बंगी ।
दास गरीब पिछानिया, सो हर दम संगी ॥१५॥

(२)

मतवालों के महल की, सूफी क्या पावै ।
अरस खुरदनी[1] खीर है, सतगुरु बतलावै ॥टेक॥
सुन्न दरीबे हाट है, जहँ अमृत चुवता ।
ज्ञानी घाट न पावहीं, खाली सब कबिता ॥ १ ॥
टाँक[2] बिकै नहिं मोल कूँ, जो तुलै न तौला ।
कूँची[3] सब्द लगाय कर, सतगुरु पट खोला ॥ २ ॥
फूल भरे भाठी सरै[4], जहँ फिरैं पियाले ।
नूर महल बेगमपुरा, घूमैं मतवाले ॥ ३ ॥
त्रिकुटी सिंध पिछान ले, तिरबेनी धारा ।
बेड़े[5] बाट बिहंगमी, उतरै भौ पारा ॥ ४ ॥
अठसठ तीरथ ताल हैं, उस तरवर माहीं ।
अमर कंद[6] फल नूर के, कोइ साधू खाहीं ॥ ५ ॥
नौ सै नदी अचूक[7] हैं, उस मंझ तलाई ।
मेरुडंड कूँ छेद कर, सतगुरु बतलाई ॥ ६ ॥
मान सरोवर कुञ्ज है, जहँ हंसा खेलै ।
भौसागर की बाट तय, सतगुरु सत बोलै ॥ ७ ॥

---

(१) खाने के लायक। (२) चार माशे का बाट। (३) कुञ्जी। (४) चुवै। (५) छोटी नाव। (६) खाने की पुत्ती। (७) परिपूर्ण।

हंसा मोती चुगत है, जुग जुग आधारा।
खात न टूटै परमधन, जो अछै भँडारा ॥ ८ ॥
अमर कच्छ हंसा भये, मिल सब्द समाये।
औघट लंघे साधवा, वे बहुर न आये ॥ ९ ॥
सुरँग लगावे सुन्न में, सो सतगुरु सूचा।
मुक्ताहल[1] पद बेलड़ी[2], फल देवै ऊँचा ॥१०॥
सतगुरु मिलिया जौहरी, जिन जन्म सुधारा।
ज्ञान खड़ग की गुर्ज[3] से, दूतर[4] सब मारा ॥११॥
बिरह बिथा का बादला, घट अंदर बूटा[5]।
दास गरीब दया भई, मल सतगुरु टूठा[6] ॥१२॥

(३)

चिंतामनि कूँ चेत रे, मुक्ताहल पाया।
सतगुरु मिलिया जौहरी, जिन्ह भेद बताया ॥ टेक ॥
हीरा मनि पारस परस, लख लाल नरेसा।
मोती जवाहर जोगिया, वह दुर्लभ देसा ॥ १ ॥
कामधेनु कलबृच्छ हैं, दरबार हमारे।
अठ सिधि नौ निधि आँगने, नित कारज सारे ॥ २ ॥
राग छतीसौ ऋधि सबै, जहँ रास रवानी[7]।
ताल तँबूरे तूर हैं, अवगत निरबानी ॥ ३ ॥
सुन में बाजै डुगडुगी, बरवै[8] पद गावै।
चल हंसा उस देस कूँ, जो बहुर न आवै ॥ ४ ॥
नूर महल गुलजार है, निज सब्द समाये।
हंसा बहुर ना आवहीं, सत लोक सिधाये ॥ ५ ॥
सतगुरु मंझ दलाल है, जिन सौदा कीन्हा।
दास गरीब दया भई, सत साहब चीन्हा ॥ ६ ॥

---

(१) मोती। (२) बेल। (३) गदा। (४) दूत। (५) बरसा। (६) बख्शिश की। (७) रमनीक, सुहावना। (८) एक रागिनी का नाम।

(४)

नूर नगर बेगमपुरा, पुर पट्टन थानं ।
सतगुरु सैन दिखाइया, जो पद निर्बानं ॥ टेक ॥
कोकिल बानी होत है, पारख निःतंती ।
जाका मुजरा होयगा, तन काढ़ै जंती ॥ १ ॥
अनुरागी निःतन्त है, पद पारख लीजै ।
प्रेम पियाला पीय कर, कहिं भेद न दीजै ॥ २ ॥
अनुरागी निःतन्त में, ले सुरत समोई ।
महल महरमी जाहिंगे, तन आपा खोई ॥ ३ ॥
सिंगल[1] बैन[2] अवाज है, जहँ सुरत समाहीं ।
निरत निरंतर रम रही, तहँ दूसर नाहीं ॥ ४ ॥
आसन अरसी पेख ले, सुन मंडल मेला ।
सिंगी नादू बाजहीं, जहँ गुरू न चेला ॥ ५ ॥
(सिर) छत्र अनूपम सेत है, जहँ साहब रहता ।
चौंर सुहंगम दुरत हैं, यूँ सतगुरु कहता ॥ ६ ॥
झिलमिल नूर अपार है, जहँ जंत्री जोगी ।
सकल बियापी रम रहा, पारस रस भोगी ॥ ७ ॥
दृष्ट मुष्ट आवै नहीं, मौनी महबूबं ।
बिरह बिहंगम बैत[3] है, असली पद खूबं ॥ ८ ॥
उज्जल भँवर अनंत है, जहँ कुंजी बैना ।
सब्द अतीत समाधिया, लख उनमुन नैना ॥ ९ ॥
घाट बाट पावै नहीं, बिन सतगुरु सैना ।
भेष परे हैं भरम में, सब फोकट फैना[4] ॥ १० ॥
सुरत निरत मन पवन का, इक अंग बनाया ।
सो हंसा सुन में गये, सत लोक बसाया ॥ ११ ॥

---

(१) नाम संस्कृत की कबिता जारी करने वाले का; राग । (२) शब्द । (३) घर । (४) झूठा झगड़ा ।

बिन पर भँवर उड़ाइया, बिन पगों[1] पयाना[2]।
दास गरीब अगमपुरी, जहँ ज्ञान न ध्याना ॥१२॥

(५)

मैं अमली निज नाम का, मद खूब चुवाया।
पिया पियाला प्रेम का, सिर साँटे[3] पाया ॥ टेक ॥
गन गंधर्प जोधा बड़े, कैसे ठहराया।
सील खेत रन जंग में, सतगुरु सर[4] लाया ॥ १ ॥
पाँच सखी नित संग हैं, कैसे हैं त्यागी।
अमर लोक अनहद रते, सोई अनुरागी ॥ २ ॥
परपंची पाकर[5] लिया, बिरहे का कंपा[6]।
जहँ संख पदम उजियार है, झलकत है चंपा ॥ ३ ॥
कुंभ[7] कलाली भर दिया, महँगा मद नीका।
और अमल नापाक है, सब लागत फीका ॥ ४ ॥
एक रती पावे नहीं, बिन सीस चढ़ाये।
वह साहब राजी नहीं, नर मुंड मुड़ाये ॥ ५ ॥
नौधा के नर बहुत हैं, बैकुंठ सिधौरा[8]।
सुकिरत नाम सँभालियो, लूटत जम जौरा ॥ ६ ॥
सुकिरत नाम समीप है, सिव गौर सुनाया।
सुवटे से सुकदे हुआ, पारस पद पाया[9] ॥ ७ ॥
रंग महल में रोसनी, रमते से मेला।
परसा दास गरीब है, सतगुरु का चेला ॥ ८ ॥

(६)

आज का लाहा लीजिये, कल्ह किस कूँ होई।
यह तन माटी में मिलै, जानै सब कोई ॥ टेक ॥

---

(१) पाँव। (२) चलाना। (३) बदले में यानी सिर देकर। (४) बान। (५) पकड़। (६) चिड़िया फँसाने की तीलियाँ। (७) घड़ा। (८) जाने वाले। (९) देखो कथा नोट पृष्ठ ७८।

लखी करोड़ी चल गये, बहु जोड़ खजाना।
जा तन चंदन लेपते, सो धरे मसाना ॥ १ ॥
हस्ती घोड़े पालकी, दल बल बहु साजा।
सवा लाख संगी गये, रावन से राजा ॥ २ ॥
कुम्भकरन से बीर थे, लंका छत्रधारी।
नाम बिना बंस बूड़ि है, समभावै नारी ॥ ३ ॥
भभीछन पद भेदिया, निरगुन निरबाना।
रावन दई बिसार रे, तज गरब गुमाना ॥ ४ ॥
बड़ चकवै[1] काल चक्र पड़े, जिन नाम बिसारा।
कंस केसि चानूर से, धर बाल पछारा ॥ ५ ॥
हिरनाकुस समझे नहीं, पहलाद पढ़ावै।
उदर बिनासा आन कर, तब कौन छुड़ावै ॥ ६ ॥
जरासिंध से मारिया, और सहस्राबाहू।
ग्राह से गजहि छुड़ाइया, निज नाम है साऊ[2] ॥ ७ ॥
दूसासन पर लै गये, एकोतर[3] भाई।
दुरजोधन की देह कूँ, तन गीधन खाई ॥ ८ ॥
निरगुन निरभय नाम है, भज लीजो सोई।
अगर दीप सतलोक में, तब बासा होई ॥ ९ ॥
सहस अठासी दीप में, उतपति की खानी।
दास गरीब भक्ती मिलै, जब थिर होय प्रानी ॥१०॥

(७)

ज्ञान की अँखियाँ रँग भरी, लै नहि निज नूरी।
मिरगा बाहर भरमही, नाभी कस्तूरी ॥ टेक ॥
पीतंबर मस्तक बना, त्रिकुटी अति सोहै।
सो घट छाना[4] ना रहै, पद[5] परसा लोहै ॥ १ ॥

---

(१) चक्रवर्ती राजा। (२) सहायक। (३) एक सै एक। (४) खाली। (५) त्रिकुटी पद को "पारस" कहा है।

सील संतोष बिबेक रे, और ज्ञान विज्ञाना।
दया दुलीचे बैठ कर, ह्वै ब्रह्म समाना॥ २ ॥
छिमा छत्र जेहि ढुरत है, तामस नहिं तेजं।
सो नर परसे जानिये, अवगत की सेजं॥ ३ ॥
कमल हिरंबर खिल रहे, अनुभौ अनुरागी।
दास गरीब सतलोक के, सोई बैरागी॥ ४ ॥

(८)

सजन सुराही हाथ है, अमृत का प्याला।
हम बिरहिन बिरहै रँगी, कोई पूछै हाला॥ टेक ॥
चोखा फूल चुवाइया, बिरहिन के ताईं।
मतवाला महबूब है, मेरा अलख गुसाईं॥ १ ॥
प्रेम पियाला पीय कर, मैं भई दिवानी।
कहा कहूँ उस देस की, कुछ अकथ कहानी॥ २ ॥
बरवै राग सुनाय कर, गल डारी फाँसी।
गाँठ घुली[1] खूलै नहीं, साजन अबिनासी॥ ३ ॥
गुझ की बात किस कूँ कहूँ, कोइ महरम जानै।
अगली पिछली मत गई, बेधी इक तानै[2]॥ ४ ॥
सुन्न मँडल सतलोक से, बिरहा चल आया।
मुझ बिरहिन के लेन कूँ, मेरे सजन पठाया॥ ५ ॥
रोम रोम में राग है, बिरहा रँग रासी।
लोक बेद झूठे लगे, पिछली बुध नासी॥ ६ ॥
अनहद नादू बाजहीं, अमरापुर माँई।
सुन्न मँडल सतलोक कूँ, दुलहिन उठ धाई॥ ७ ॥
अरस गुमठ गुलजार है, गैबी गलताना।
सेत धजा जहँ फरहरैं, पँचरंग निसाना॥ ८ ॥

---

(१) मज़बूत हो गई। (२) एक ही तान में बेध दिया।

तन मन छाकै प्रेम से, मन मंगल महली।
दुलहिन दास गरीब है, जहँ सेज सलहली[१] ॥ ६ ॥

(६)

सुन्न सरोवर हंस मन, मोती चुग आया।
अगर दीप सतलोक में, ले अजर झराया ॥ टेक ॥
हंस हिरंबर हेत है, हैरान निसानी।
सुख सागर मुक्ता भये, मिल बारह बानी[२] ॥ १ ॥
पिंड अंड ब्रह्मंड से, वह न्यारा नादू।
सुन्न समझिया बेग रे, गये बाद बिबादू ॥ २ ॥
सतगुरु सार जु गाइया, धर कूंची ताला।
रंग महल में रोसनी, घट भया उजाला ॥ ३ ॥
दीपक जोड़ा नूर का, ले अस्थिर बाती।
बहुर न भौजल आवहीं, निरगुन के नाती ॥ ४ ॥
नाम सहर बेगमपुरा, जहँ लागी ताली।
सब घट मन मौजूद है, नाहीं कोउ खाली ॥ ५ ॥
अजब दिवाना देस है, जहँ हिल मिल रहिये।
कहता दास गरीब है, मुक्ता पद लहिये[३] ॥ ६ ॥

(१०)

ज्ञान तुरंगम[४] पाड़िया[५], ताजी दरियाई।
पासर[६] घाली प्रेम की, चित चाबुक लाई ॥ टेक ॥
प्रेम धाम से ऊतरे, हुकमी सैलानी।
सब्द सिध मेला करैं, हंसों के दानी ॥ १ ॥
असंख जुग परलै गये, जब के गुन गाऊँ।
ज्ञान गुरज है दस्त में, ले हंस चिताऊँ ॥ २ ॥

---

(१) सुखाली। (२) खालिस सोना। (३) पाइये। (४) घोड़ा। (५) इकट्ठा किया। (६) डोरी, फंदा।

सील हमारा सेल[1] है, औ छिमा कटारी।
तत्त तीर तक मार हूँ, कहँ जात अनारी॥ ३॥
बुधि हमरी बन्दूक है, दिल अंदर दारू[2]।
प्रेम पियाला सार का, चित चकमक झारू[3]॥ ४॥
तत्त हमारी तेग[4] है, जो असल असीलं।
सूरे सनमुख लेत हैं, कायर मुख पीलं॥ ५॥
घायल घूमै अरस में, जिस लगी करारी।
औषध नि:चा नाम है, जिन्ह पीड़[5] पुकारी॥ ६॥
पाखरिया[6] सतलोक के, रन-जीत पठाये।
कहता दास गरीब है, गुरुगम से आये॥ ७॥

(११)

घट ही अंदर गारडू[7], धोखे मर गइया।
सार सब्द चीन्हा नहीं, कुछ भेद न लहिया॥ टेक॥
न्योल जड़ी कूँ सूँघ कर, गृह डंक लगावै।
सरपिन बाँबिहि सूँ डसी, कहिं जान न पावै॥ १॥
बाजी अनहद बीन रे, फूँ भई फुँकारा।
भगल बिद्या बाजीगरी, जानै गुरु म्हारा॥ २॥
सतगुरु मिलिया गारडू, जिन्ह मंतर दीन्हा।
नागदमन[8] तिरगुन जड़ी, बिषयर[9] बस कीन्हा॥ ३॥
बाजीगर की डुगडुगी, बिषयर भरमाया।
घाल पिटारे ले चला, घरबार नचाया॥ ४॥
ऐसा सतगुरु कीजिये, बाजीगर पूरा।
दास गरीब अमर करै, दिल दरस जहूरा॥ ५॥

---

(१) भाला। (२) बारूद। (३) एक लोहे की चीज जिसको पथरों पर मार कर आग निकालते हैं। (४) तलवार। (५) दरद। (६) लोहे की जाली जो लड़ाई में घोड़े की हिफाजत के लिए उस पर डालते हैं। (७) साँप का मंत्र जानने वाला। (८) साँप की जड़ी। (९) साँप।

(१२)

दरदमंद दरवेस है, बेदरद कसाई ।
संत समागम कीजिये, तज लोक बड़ाई ॥ टेक ॥
डिंभी[१] डिंभ न छोड़हीं, मरघट के भूता ।
घर घर द्वारे फिरत हैं, कलजुग के कूता ॥ १ ॥
डिंभ करैं डुंगर[२] चढ़ैं, तप होम अँगीठी ।
पंच अगिन पाखंड है, यह मुक्ति बसीठी[३] ॥ २ ॥
पाती तोरे क्या हुआ, बहु पान झरो रे ।
तुलसी बकरा खा गया, ठाकुर क्या बौरे ॥ ३ ॥
पीतल ही का थाल है, पीतल का लोटा ।
जड़ मूरत कूँ पूजते, आवैगा टोटा ॥ ४ ॥
पीतल चमचा पूजिये, जो खान परोसै ।
जड़ मूरत किस काम की, मत रहो भरोसे ॥ ५ ॥
कासी गया पराग[४] रे, हरपैड़ी न्हाये ।
तारावति[५] दरसन किये, बहु दाग दगाये ॥ ६ ॥
इन्द्रदौन असनान रे, कर पुस्कर परसे ।
द्वादस तिलक बनाय कर, बहु चंदन चरचे ॥ ७ ॥
अठसठ तीरथ सब किये, बृन्दाबन फेरी ।
नाम बिना खूले नहीं, दिब दृष्ट अँधेरी ॥ ८ ॥
सतगुरु भेद लखाइया, निज नूर निसानी ।
कहता दास गरीब है, छूटे सो प्रानी ॥ ९ ॥

(१३)

नजर निहाल दयाल हैं, मेरे अंतरजामी ।
सोलह कला सपूरना, लख बारहबानी[६] ॥ टेक ॥

---

(१) धोखेबाज । (२) पहाड़ । (३) बकवाद । (४) प्रयाग । (५) द्वारिका ।
(६) खालिस सोना ।

उलट मेरुडंड चढ़ गये, देखा सो देखा।
संख कोटि रबि झिलमिलैं, गिनती नहिं लेखा ॥ १ ॥
बरन बरन के तेज हैं, पँचरंग परेवा[1]।
मूरत कोट असंख हैं, जा मध इक देवा ॥ २ ॥
(जाके) ब्रह्मा झाड़ू देत हैं, संकर करैं पंखा।
सेस चरन चंपी लगैं[2], अगमी गढ़ बंका ॥ ३ ॥
धर ऐनक दुरबीन कूँ, धुन ध्यान लगावै।
उलट कमल अरसा[3] चढ़ै, तब नजरों आवै ॥ ४ ॥
सूछम मूरत सोहनी, अगमै इक-रासा।
रहता रमता राम है, घट पिंड न स्वासा ॥ ५ ॥
जो देखा सो किस कहूँ, अचरज इक ख्याला।
कहता दास गरीब है, निज रूप बिसाला ॥ ६ ॥

(१४)

सोई साध अगाध है, आपा न सरावै[4]।
पर निंदा नहिं संचरै, चुगली नहिं खावै ॥ टेक ॥
काम क्रोध त्रिस्ना नहीं, आसा नहिं राखै।
साँचे सूँ परचा भया, जब कूड़ न भाखै ॥ १ ॥
एकै नजर निरंजना, सबही घट देखै।
ऊँच नीच अंतर नहीं, सब एकै पेखै ॥ २ ॥
सोई साध सिरोमनी, जप तप उपकारी।
भूले कूँ उपदेस दे, दुर्लभ संसारी ॥ ३ ॥
अकल[5] यकीन पठाय दे, भूले कूँ चेतै।
सो साधू संसार में, हम बिरले भेंटे ॥ ४ ॥
सूतक[6] खोवैं सत कहैं, साँचे सूँ लावैं।
सो साधू संसार में, हम बिरले पावैं ॥ ५ ॥

(१) कबूतर—यहाँ हंस से मतलब है। (२) मुक्की लगाना, पाँव दाबना। (३) अर्श। (४) सराहै। (५) बुद्धि। (६) अशुद्धता।

निरख निरख पग धरत हैं, जिव हिंसा नाहीं।
चौरासी तारन तरन, आये जग माहीं ॥ ६ ॥
इस सौदे कूँ ऊतरे, सौदागर सोई।
भरे जहाज उतार दे, भौसागर लोई ॥ ७ ॥
भेष धरैं भागे फिरैं, बहु साखी सीखैं।
जानैं नहीं बिबेक कूँ, खर के ज्यूँ रीकैं[१] ॥ ८ ॥
खास मुकामा दरस है, जो अरस रहंता।
उनमुन में तारी लगी, जहँ अजप जपंता ॥ ९ ॥
सुन्न महल अस्थान है, जहँ अस्थिर डेरा।
दास गरीब सुभान[२] है, सत साहब मेरा ॥१०॥

(१५)

सत्त कहन कूँ राम है, दूजा नहिं देवा।
ब्रह्मा बिसुन महेस से, जा की करते सेवा ॥ टेक ॥
जप तप तीरथ थोथरे, जा की क्या आसा।
कोट जग्ग पन दान से, जम कटै न फाँसा ॥ १ ॥
इहाँ देन उहा लेन है, यह मिटै न झगरा।
बिना पंथ की बाट है, पावे को दगरा[३] ॥ २ ॥
बिन ही इच्छा देन है, सो दान कहावै।
फल बंछै[४] नहिं तासु का, अमरापुर जावै ॥ ३ ॥
सकल दीप नौ खंड के, छत्री जिन जीते।
सो तो पद में ना मिले, बिद्या गुन चीते[५] ॥ ४ ॥
कोट उनंचा[६] पृथ्वी, जिन दीन्ही दाना।
परसराम औतार कूँ, कीन्हे कुरबाना ॥ ५ ॥
कंचन मेरु सुमेर रे, आये सब माहीं।
काम धेनु कल्प बृच्छ रे, सो दान कराहीं ॥ ६ ॥

(१ गधे की तरह रेंकैं। (२) पवित्र। (३) रास्ता। (४) चाहै। (५) क्योंकि उनके चित्त में बिद्या और गुन का घमंड था। (६) शास्त्रों के अनुसार पृथ्वी उन्चास कोट जोजन नाप में है।

सुर नर मुनि जन सेवहीं, सनकादिक ध्यावैं।
सेस महेस मुख रटत हैं, जा का पार न पावैं ॥ ७ ॥
ब्रह्मा बिसुन महेस रे, देवा दरबारी।
संख कलप जुग हो गये, जा की खुलै न तारी ॥ ८ ॥
परलै संख असंख रे, पल माँह बिहानी[1]।
गरीबदास निज नाम की, महिमा हम जानी ॥ ९ ॥

(१६)

सुख के सागर राम हैं, जेहि धरिये ध्याना।
तिरबेनी के घाट रे, कीजे असनाना ॥ टेक ॥
नाभि कमल से उच्चरे, दम लेखे लावो।
परबी कोट अनंत हैं, सुख सागर न्हावो ॥ १ ॥
अनंत कोट धुन होत हैं, सुख सागर माहीं।
पैड़ी पंथ न महल के, जहँ हंसा जाहीं ॥ २ ॥
ओं मूल उच्चार है, जपिये मन माला।
सुछम बेद से धुन लगी, पहुँचे चित्र साला ॥ ३ ॥
ऐनक आदि अनाद है, दुरबीन धियाना।
पलकों चौरा कीजिये, त्रिकुटी अस्थाना ॥ ४ ॥
सहस कमल दल जगमगै, जहँ भँवर गुँजारा।
घटा गरज बहु दामिनी, अनहद झनकारा ॥ ५ ॥
गरजै सिंध अगाध रे, बिन सरवन सुनिया।
नर की क्या बुनियाद है, पहुँचत नहि मुनिया[2] ॥ ६ ॥
मन पौना के गमन[3] से, आगे लख भाई।
सुरत निरत के पंख ले, हंसा उड़ जाई ॥ ७ ॥
अधर बिहंगम उड़ चलै, भौंरी ले भौंरा।
गरीबदास कहु क्या करै, जा का जम जोरा ॥ ८ ॥

---

(१) बीत गये। (२) मुनी। (३) पहुँच।

(१७)

कर साहब की बंदगी, बैरागर ले रे।
समरथ साँईं सीस पर, तो कूँ क्या भै रे॥ टेक॥
सील संतोष बिबेक हैं, अरु ज्ञान बिज्ञाना।
दया धरम चित चौतरे, बाँचो परवाना॥ १॥
धरम धजा जहँ फरहरै, होहि जग[1] ज्योनारा।
कथा कीरतन होत है, साहब दरबारा॥ २॥
सुमता[2] माता मित्र है, रख अकल यकीनं।
सत्त धरे तें खुलत है, दिल में दुरबीनं॥ ३॥
जा के पिता बिबेक से, अरु भाव से भाई।
या पटतर[3] नहिं और है, कुछ बहिन सगाई[4]॥ ४॥
दृढ़ के डुंगर[5] चढ़ गये, जहँ गुफा अनादं।
लागी सब्द समाध रे, धन सतगुरु साधं॥ ५॥
सहस मुखी जहँ गंग है, तालिब तिरबेनी।
जहाँ ध्यान असनान कर, परबी सुख चैनी॥ ६॥
कोट करम कसमल[6] कटै, उस परबी न्हाये।
वह साहब राजी नहीं, कुछ नाचे गाये॥ ७॥
अगर मूल महकंत है, जहँ गंध सुगंधा।
एक पलक के ध्यान से, कटिहै सब फंदा॥ ८॥
दो मुड़ की भाठी चुवै, जहँ सुखमन पोता।
इला पिंगला एक कर, सुखसागर गोता॥ ९॥
अबल बली बारयाम है, निरगुन निरबानी।
अनंत कोट बाजे बजैं, बाजैं सहदानी[7]॥१०॥
तन मन निःचल हो गया, निज पद से लागे।
एक पलक के ध्यान से, दुन्दर[8] सब भागे॥११॥

---

(१) यज्ञ। (२) सुमति, अच्छी बुद्धि। (३) बराबर। (४) सगी, अपनी। (५) पहाड़। (६) पाप। (७) शहनाई। (८) दुन्द, अंधकार।

पुर पट्टन के घाट में, एक पिंगल पंथा।
छुटैं फुहारे नूर के, जहँ धार अनंता ॥१२॥
झिल मिल झिल मिल होत है, उस पुर में भाई।
घाट बाट पावै नहीं, है द्वारा राई[1] ॥१३॥
तहँ वहँ संख सुरंग है, मध औघट घाटा।
सतगुरु मिलैं कबीर से, तब खुलै कपाटा ॥१४॥
सेत कमल जहँ जगमगै, पीतांबर छाया।
सूरज संख सुभान[2] है, अबिनासी राया ॥१५॥
अगर डोर से चढ़ गये, धुन अलल धियाना।
दास गरीब कबीर का, पाया अस्थाना ॥१६॥

(१८)

लोक लाज नहिं कीजिये, निरभय हो रहिये।
यह मन साधों दीजिये, (तौ) गोबिन्द पद पइये ॥ टेक ॥
भौसागर जोनी जनम, हरि दास मिटावैं।
बहुर बहुर नहिं आवहीं, मुक्ता पद पावैं ॥ १ ॥
ऐसे हरि जन संत हैं, संगत नित कीजे।
झूठे जग की लाज में, नाहीं चित दीजे ॥ २ ॥
यह जग बदरा[3] धुँध का, मिहर[4] पौना डरिये।
जौ मन चाहे राम कूँ, दासा तन करिये ॥ ३ ॥
हस्ती डर माने नहीं, जे स्वान भुकाहीं।
सतसंगी संगत ना तजैं, चित राम बसाहीं ॥ ४ ॥
स्वान रूप संसार है, कुछ करसी नाहीं।
सीस महल कूँ देख कर, भौंकत मर जाहीं ॥ ५ ॥
मतवाले महबूब हैं, साधू जग माहीं।
गरीबदास समझावहीं, जिग्यासी[5] ताईं ॥ ६ ॥

---

(१) राई के समान झीना। (२) पवित्र। (३) बादल। (४) मिहर अर्थात दया के पवन से डरता है। (५) खोजी।

(१६)

राम कहे मेरे साध कूँ, दुख मत दीजो कोय ।
साध दुखावे मैं दुखी, मेरा आपा भी दुख होय ॥ टेक ॥
हिरनाकुस उदर बिदारिया, मैं हीं मारा कंस ।
जो मेरे साध कूँ आन दुखावे, जाका खोऊँ बंस ॥ १ ॥
पहुँचूँगा छिन एक में, जन अपने के हेत ।
तेंतिस कोट की बन्ध छुटाई, रावन मारा खेत ॥ २ ॥
कला[1] बधाऊँ[2] संत की, परगट करिहै मोय[3] ।
गरीबदास जुलहा कहै, मेरा साध न दहियो[4] कोय ॥ ३ ॥

(२०)

करो निबेरा रे नरो, जम माँगै बाकी ।
कर जोड़े धरम राय खड़[5], सतगुरु है साखी ॥ टेक ॥
माटी का कलबूत[6] है, सतगुरु का साजा ।
उस नगरी डेरा करो, जहँ सब्द अवाजा ॥ १ ॥
नूर मिलेगा नूर में, माटी में माटी ।
कोइक[7] साधू चढ़ गये, उस औघट घाटी ॥ २ ॥
रोम रोम में राम है, अजपा जप लीजै ।
सुरत सुहंगम डोर गहि, प्याला मधु पीजै ॥ ३ ॥
जम की फरदी[8] ना चढ़ै, सोई जन सूरा ।
परसा दास गरीब है, जोगेसर पूरा ॥ ४ ॥

(२१)

अगम ज्ञान की धुन सुनी, दुलहिन भई बौरी ।
यह भगलीगिर का जंत्र है, कोई लखै न डोरी ॥ टेक ॥
जूठे फल परवान हैं, परतीत जु स्योरी[9] ।
यह अनुराग अनादि है, जो अमर भई गौरी[10] ॥ १ ॥

---

(१) महिमा । (२) बढ़ाऊँ । (३) मुझको । (४) सतावो । (५) खड़ा । (६) साँचा, शरीर । (७) कोई एक । (८) फर्द, चिट्ठा । (९) जो सेवरी भिल्लनी सरीखी प्रतीत है । (१०) पारबती ।

बिन तरवर[1] के बाग है, जहँ लागै मौरी[2]।
त्रिकुटी सिंध पिछान ले, मधुकर है भौंरी ॥ २ ॥
अष्ट कमल दल भीतरा, सुमिरन सुमिरो री।
यह औसर चूको नहीं, कुछ होय सु हो री ॥ ३ ॥
पिंड प्रान तिस वारहू, तन मन अरपो री।
गरीबदास पद अरस में, सुर्त सिंध मिलो री ॥ ४ ॥

॥ राग काफी ॥

मन मगन भया जब क्या गावै ॥ टेक ॥
ये गुन इंद्री दमन करेगा, बस्तु अमोली सो पावै ॥१॥
तिरलोकी की इच्छा छाँड़ै, जग में बिचरै निर्दावै ॥२॥
उलटी सुलटी निरत निरंतर, बाहर से भीतर लावै ॥३॥
अधर सिंहासन अवचल आसन, जहँ उहँ सुरती ठहरावै ॥४॥
त्रिकुटी महल में सेज बिछी है, द्वादस अंदर छिप जावै ॥५॥
अजर अमर निज मूरत सूरत, ओअं सोहं दम ध्यावै ॥६॥
सकल मनोरथ पूरन साहब, बहुर नहीं भौजल आवै ॥७॥
गरीबदास सतपुरुष बिदेही, साँचा सतगुरु दरसावै ॥८॥

(२)

मन मगन भया कैसे जाना ॥ टेक ॥
ब्रह्म खुमारी सुन्न अधारी, आठ बखत रहे गलताना ॥१॥
ओअं सोहं सार बस्तु है, अजपा जाप सही जाना ॥२॥
यह तन देही बहुर नहीं है, अष्ट कमल दल अस्थाना ॥३॥
थावर जंगम में जगदीसं, क्या पूजै जल पाषाना ॥४॥
सुरत सनेही सिन्ध मिलैंगे, दिल खोजैं दिल-दाना ॥५॥
या मन मूरत चंपा सूरत, समझ बूझ ले ब्रह्म ज्ञाना ॥६॥

(१) पेड़। (२) बौर।

बिनमसि[1] काइक अंक अरस[2] में, क्या पांढ़ये पोथी पाना[3] ॥७॥
संख कँगूरा[4] बाजैं तूरा, सेत धजा लख असमाना ॥८॥
उजल हिरंबर सब्द घुरंबर[5], जम जोरा नहिं तलबाना ॥९॥
गंगा जमुना मद्ध सुरसती, मान सरोवर में न्हाना ॥१०॥
मोछ मुक्त जहँ पित्र होत हैं, वहाँ करो पिंड परदाना[6] ॥११॥
अर्थ धर्म सब काम मोछना, आद पुरुष पद निरबाना ॥१२॥
गरीबदास दरपन मुख दरवै[7], संख कला रवि ससि भाना ॥१३॥

(३)

मन मगन भये का सुन रासा ॥ टेक ॥
यह इंद्री परकिरती प्रेरै, डार चलै तिरगुन पासा ॥१॥
सफम सफा[8] है मिले नूर में, काम क्रोध का कर नासा ॥२॥
यह तन खाक मिलैगा भाई, क्या पहिरे मलमल खासा ॥३॥
पिंड ब्रह्मंड कुछ थीर नहीं है, गगन मँडल में कर बासा ॥४॥
चिंता चेरी दूर परै री, काट चलो जम का फाँसा ॥५॥
मान बड़ाई जमपुर जाई, होय रहो दासन दासा ॥६॥
गरीबदास पद अरस अनाहद, ओअं सोहं जप स्वासा ॥७॥

(४)

मन मगन भया सो ब्रह्मचारी ॥ टेक ॥
यह मन अकल अजीत जीतिया, दमन[9] करी पाँचो नारी ॥१॥
दुरमत का तो देवल[10] ढाहा, पकर लई मनसा दारी[11] ॥२॥
चित के अंदर चौपड़ खेलै, जहँ फिरती सोलह सारी[12] ॥३॥
जा की नरद पकी घर आवै, गर्भ बास में ना जा री ॥४॥
जोनी संकट मोछ होत है, उतर गये भौजल पारी ॥५॥
दुहूँ दीन षट दरसन त्यागे, ऐसी ही धारन धारी ॥६॥

---

(१) सियाही। (२) अर्श। (३) पन्ना, बरफ। (४) छोटे छोटे बुर्ज। (५) घिर रहा है। (६) प्रदान। (७) दरसै। (८) साफ़ से साफ़। (९) ज़ेर। (१०) मंदिर। (११) नारी। (१२) नरद, गोटी।

झिलमिल नैना अनहद बैना, लाग रही उनमुन तारी ॥७॥
या जग जिन्दा बिन्दा करिहै, कोइ अस्तुत कोइ दे गारी ॥८॥
गरीबदास दीदार दरस कर, फगुआ खेलन की बारी ॥९॥

(५)

दम दा नहीं भरोसा साधो, अब तू कर चलने दा सोच ॥टेक॥
मुए पुरुष संग सती जरत है, परी भरम की भूल ॥ १ ॥
पीठ मनुका[1] दाख लदी है, करहा[2] खात बँबूल ॥ २ ॥
मेंड़ी[3] मंदिर बाग बगीचे, रहसी डाल न मूल ॥ ३ ॥
जिंदा पुरुष अचल अबिनासी, बिना पिंड अस्थूल ॥ ४ ॥
नैनों आगे झुक झुक आवै, रतन अमोली फूल ॥ ५ ॥
गरीबदास यह अलल[4] ध्यान है, सुरत हिंडोले झूल ॥ ६ ॥

(६)

तारैंगे तहकीक सतगुरु तारैंगे ॥ टेक ॥
घट ही में गंगा घट ही में जमुना, घट ही में जगदीस ॥१॥
तुम्हरै ज्ञाना तुम्हरै ध्याना, तुम्हरै तारन की परतीत ॥२॥
मन कर धीरा[5] बाँध ले बौरे, छाँड़ देय पिछलों की रीत ॥३॥
दास गरीब सतगुरु का चेला, टारैं जम की रसीत[6] ॥४॥
जल थल साछी एक है रे, डुंगर[7] डहर[8] दयाल ॥५॥
दसों दिसा कूँ दरसनं, ना कहिं जोरा काल ॥६॥

(१) मुनक्का। (२) ऊँट। (३) मड़ई, मकान के ऊपर का खंड। (४) अलल पच्छ, देखो नोट पृष्ट ६५। (५) थिर। (६) हुक्मनामा। (७) पहाड़। (८) रास्ता।

॥ राधास्वामी ॥

संतबानी की संपूर्ण पुस्तकों का संशोधित सुचीपत्र, १९८२

पुस्तक	मूल्य
गुरु नानक की प्राण संगली भाग १	८)
गुरु नानक की प्राण संगली भाग २	८)
संत महात्माओं का जीवन चरित्र संग्रह	४)
कबीर साहिब का अनुराग सागर	६)
कबीर साहिब का बीजक	६)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	१०)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग १	५)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग २	५)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग ३	३)
कबीर साहिब की शब्दावली, भाग ४	२)
कबीर सा० की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते, झूलने	३)
कबीर साहिब की अखरावती	२)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	५)
तुलसी सा० हाथ० की शब्दावली भाग १	८)
तुलसी सा० भाग २ पद्मसागर सहित	८)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	८)
तुलसी साहिब का घटरामायण भाग १	१०)
तुलसी साहिब का घटरामायण भाग २	१०)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	१२)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	८)
सुन्दर बिलास	८)
पलटू साहिब भाग १—(कुण्डलियां)	५)
पलटू सा० भाग २—(रेखते, झूलने) आदि	५)
पलटू सा० भाग ३—(भजन, साखियां)	५)
जगजीवन साहिब की बानी भाग १	६)
जगजीवन साहिब की बानी भाग २	६)
दूलनदास जी की बानी	२)
चरनदास जी की बानी, भाग १	५)
चरनदास जी की बानी, भाग २	५)
गरीबदास जी की बानी	८
रैदास जी की बानी	३
दरिया साहिब बिहार (दरिया सागर)	३
दरिया साहिब के चुने पद और साखी	३
दरिया साहब मारवाड़ वाले की बानी	३
भीखा साहिब की शब्दावली	४
गुलाल साहिब की बानी	८
बाबा मलूकदास जी की बानी	३
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	।।
यारी साहिब की रत्नावली	१)
बुल्ला साहिब का शब्दसार	२)
केशवदास जी की अमीघूंट	१)
धरनीदास जी की बानी	४)
मीराबाई की शब्दावली	४)
सहजोबाई का सहज-प्रकाश	४)
दयाबाई की बानी	२)
संतबानी संग्रह, भाग १ (साखी)	१२।।)
संतबानी संग्रह भाग २ (शब्द)	१२।।)
लोक परलोक हितकारी	४)

संत महात्माओं के चित्र

चित्र	मूल्य
संत तुलसीदास	।।
कबीर साहब	।
दादू दयाल	।।
मीराबाई	।।)
दरिया साहब	।।)
मलूकदास	।।)
तुलसी साहब हाथरस वाले	।।)
गुरु नानक	।।)

पुस्तकें मंगवाने के नियम

पुस्तकों के दाम में डाक-महसूल, रजिस्ट्री, पैकिङ्ग और मनीआर्डर फीस शामिल नहीं है, वह अलग से लिया जायेगा। पुस्तकों के आर्डर के साथ आधी रकम पेशगी मनीआर्डर से भेजना अति आवश्यक है। मनीआर्डर कूपन पर पूरा नाम, पता, डाकखाना, मुकाम व जिला साफ-साफ हरफों में लिखें तथा जो पुस्तक मँगाना हो उसका नाम व संख्या भी अवश्य लिखें। यदि अधिक पुस्तकें मँगवाना हो तो अपने पास के रेलवे स्टेशन का नाम अवश्य लिखें। पोस्ट आफिस ५ दिन से अधिक वी० पी० नहीं रोकता। इसलिये पोस्टआफिस से सूचना मिलते ही वी० पी० शीघ्र छुड़ा लेना चाहिये।

फोन नं० ५१४१०

पता :—मैनेजर, बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
(विश्वविद्यालय के सामने) १३, मोतीलाल नेहरू रोड, प्रयाग।